जासूसी दुनिया

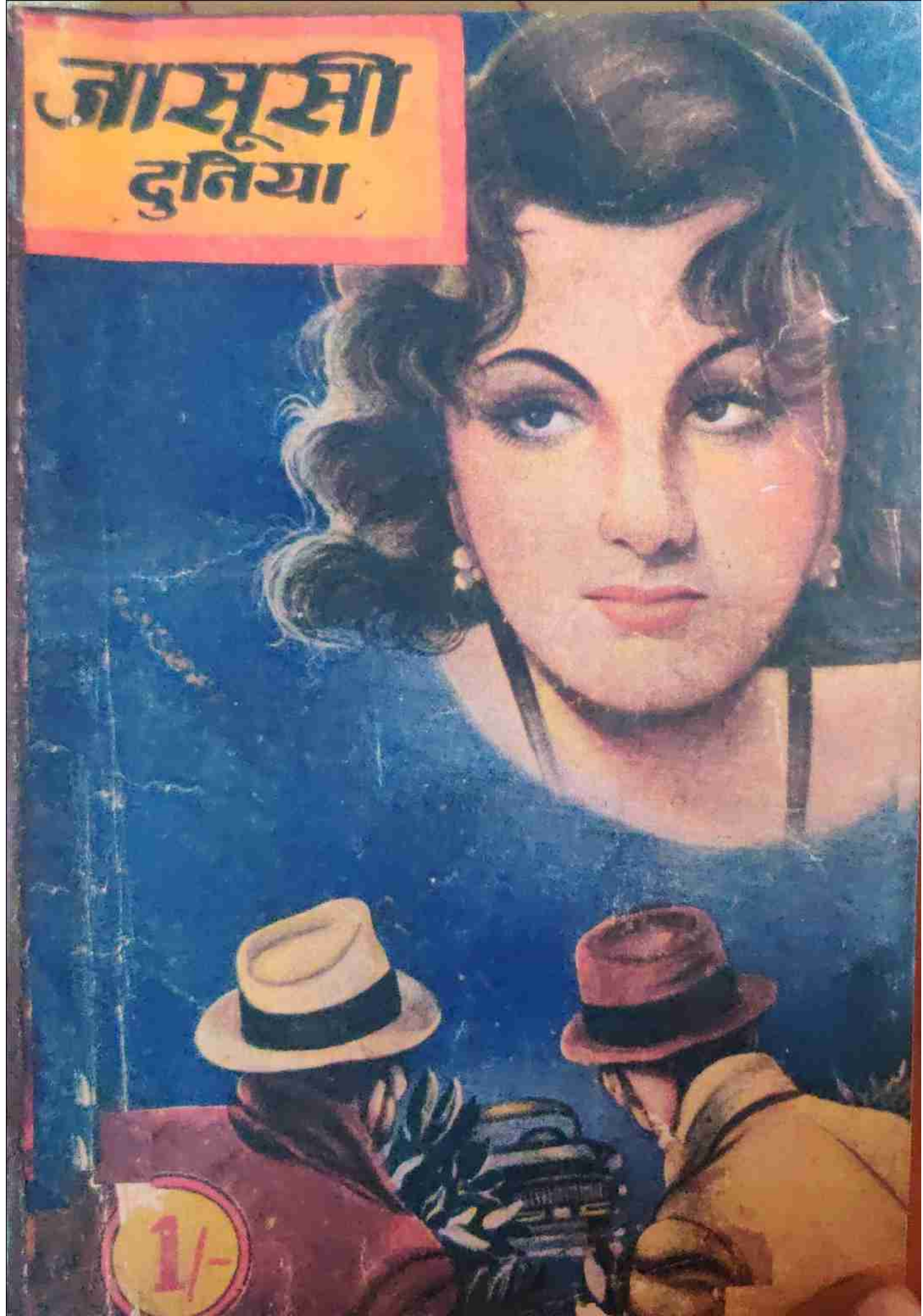

1/-

जहरीले तीर

इब्ने सफी की यह महान कला कृति एक ऐसे अनोखे और विचित्र पात्र से परिचय कराती है जिसके कारनामों से बुद्धि चकित रह जाती है और इसका समर्थन करना पड़ता है कि एशिया का गौरवमय लेखक इब्ने सफी न केवल जासूसी उपन्यास लेखन ही का सम्राट है वरन चरित्र चित्रण के सिलसिले में भी ऊसीपित योग्यतायें रखता है। वैसे तो इब्ने सफी ने एक दक्ष मनोवैज्ञानिक की हैसियत से अब तक जितने भी पात्रों का सृजन किया है उनका कोई जवाब नहीं है— मगर डाक्टर डारकेन एक ऐसा पात्र हैं जो जेहन में स्थायी रूप से सुरक्षित रह जाता है। डाक्टर डारकेन की श्रृंखला की यह अनूठी और आश्चर्य जनक कहानी अपने स्थान पर पूर्ण भी है और इसका सिलसिला आगे तक भी फैला हुआ है और यही कारण है कि डाक्टर डारकेन के पूरे क्रम को "डारकेन सीरीज" के नाम से याद किया जाता है।

यह उपन्यास "जहरीले तीर" डारकेन सीरीज का पहला उपन्यास है। इसके बाद दूसरा उपन्यास "खानी का धुआं" तीसरा "हँसती लाश" और चौथा महान उपन्यास "डाक्टर डारकेन" है जिस में डाक्टर डारकेन के क्रम की इस विशाल और अनोखी कहानी का परिणाम प्रस्तुत किया गया है। "डारकेन सीरीज" की यह चारों कहानियां पूर्ण सेट के रूप में प्रथम बार नकहत पाकेट बुक्स में अत्यन्त सुन्दर गेट अप के साथ प्रस्तुत की जा रही है।

अब्बास हुसैनी

डारकेन सीरीज़ — १

ज़हरीले तीर

इब्ने सफ़ी बी० ए०

नकहत पाकेट बुक्स इलाहाबाद — ३

कैप्टेन हमीद आलेक्चन्नु के बाल रूम से निकल ही रहा था कि किसी ने उसके कन्धे पर हाथ रख दिया। वह चौंककर मुड़ा और फिर एक अपरिचित को देखकर ताव खा गया। सम्बोधित करने की इस प्रथा से उसे हार्दिक जलन थी।

"क्यों ?" वह उस अपरिचित को घूरता हुआ बोला।

"मैं अपनी इस असभ्यता के लिए क्षमा चाहता हूँ...।" अपरिचित ने भयप्रद स्वर में कहा—"वास्तव में इस समय मेरे हाथ पाँव मेरे अधिकार में नहीं हैं।"

हमीद उसे ध्यान पूर्वक देखने लगा। उसके कपड़े उसकी सूरत और उसके भावों से साफ प्रकट हो रहा था कि वह गिरी पड़ी हैसियत का आदमी नहीं है। मगर हमीद को उसकी आँखों में भय की परछाइयाँ नजर आ रही थीं। वह बार बार अपने सूखे अधरों पर जबान फेर रहा था। उसका चेहरा पीला पड़ा हुआ था। उसकी अवस्था पचीस और तीस के मध्य थी। हमीद को मौन देखकर वह फिर बोला—

"मैं आपको पहचानता हूँ इसीलिए मैंने ऐसी असभ्यता करने का साहस किया है। मुझे विश्वास है कि आपकी उपस्थिति मेरे लिए लाभदायक होगी नहीं तो मेरा जीवन कुछ घन्टों से अधिक का नहीं है।"

"मैं नहीं समझा !" हमीद ने कहा।

"मैं कुछ घन्टे आपके साथ रहना चाहता हूँ।"

"क्यों ?"

"मैंने बताया न कि मेरा जीवन केवल दो-चार घन्टों का है।"

"मैं साफ-साफ सुनना चाहता हूँ।"

"मेरा जीवन खतरे में है। आने वाले किसी भी क्षण में मेरी जीवन लीला समाप्त हो सकती है।"

"आपने मात्रा से अधिक तो नहीं पीली है।"

"जी नहीं—मैं अपने पूरे होश में हूँ।"

"तीन चार दिन पहले की बात है—" हमीद मुस्कुरा कर बोला—"यहीं इसी होटल में एक महाशय कह रहे थे कि उनको भगवान ने संसार के कल्याण के लिए भेजा है। इस पर एक आदमी ने उनसे पूछा कि तो फिर आप यहाँ क्या कर रहे हैं। इस पर वह महाशय बोले कि हाँ मुझे भगवान के आदेशों का प्रचार करना चाहिए मगर कठिनाई यह है कि मैं इस कुर्सी से उठ नहीं सकता—उनकी मेज पर जिन की दो खाली बोतलें पड़ी हुई थीं और....।"

"मैं खतरे में हूँ, ईश्वर के लिए मुझे बचा लीजिये—।" उसने हमीद की बात काट कर कहा और फिर चारों ओर भय पूर्ण नेत्रों से देखने लगा।

"आप मुझे पहचानते हैं ?" हमीद ने पूछा।

"जी हाँ।"

"तो फिर आप यह भी जानते होंगे कि मेरा समय नष्ट करने का क्या दन्ड हो सकता है ?"

जानता हूँ—और यह भी जानता हूँ कि आपका हाथ हर समय मुझ तक पहुँच सकता है।"

"आइये—" हमीद एक खाली मेज की ओर बढ़ता हुआ बोला—"मैं यह जानना चाहता हूँ कि आप इस भ्रम में क्यों

पड़ गये हैं।"

वह दोनों एक खाली मेज पर बैठ गये।

"हाँ—मैं आपको केवल पाँच मिनट दे सकता हूँ। अगर आप मुझे इस प्रकार रोकने का कोई उचित कारण नहीं बता सके तो परिणाम के उत्तरदायी आप होंगे···आप यह तो जानते ही हैं कि मैं कौन हूँ।"

"भली-भाँति जानता हूँ, लेकिन इस समय अपने कथन की सत्यता के लिए मेरे पास कोई प्रमाण नहीं है—वैसे मैं आपको फिर विश्वास दिलाता हूँ कि मेरा जीवन खतरे में है।"

"चलिये! मैंने मान ली आपकी बात....फिर आप चाहते क्या हैं?"

"या तो मुझे अपने साथ रखिये या गिरफ्तार करके जेल में डाल दीजिये। वहाँ कदाचित मैं सुरक्षित रह सकूं। आप विश्वास कीजिये। आखिर अकारण ही मैं क्यों झूठ बोलूंगा।"

"आपको किसका भय है?" हमीद ने पूछा।

"वह एक गिरोह है। उसका एक आदमी अभी यहाँ दिखाई पड़ा था, किन्तु शीघ्र ही गायब भी हो गया। मुझे विश्वास है कि वह मेरी ही ताक में है।"

"इस विश्वास का कारण?"

"मैं उनके कुछ रहस्य जानता हूँ।"

"सीधी बात···पहेली मैं पसन्द नहीं करता—" हमीद बोला।

"आप मेरे निवास स्थान तक चलिये। मैं वहाँ आपको सब कुछ बता दूँगा।"

"और अगर मैं यहीं सुनना चाहूँ तो?"

"मुझे इन्कार नहीं होगा, मगर यहाँ मैं वह दस्तावेज आपको नहीं दिखा सकूँगा जो मेरी बात का समर्थन करता है।"

हमीद फिर उसे टटोलने वाली दृष्टि से देखने लगा।

"आप कुछ ऐसे लोगों से भयभीत हैं जिसके विरुद्ध आपके पास दस्तावेजी प्रमाण है—और आप उनसे इसलिए डर रहे हैं कि उन्हें भी इस बात का पता है कि दस्तावेज आपके पास हैं ?"

"जी हाँ—मैं यही कहना चाहता था।"

"और वह दस्तावेज आपके घर पर है ?"

"जी हाँ।"

"लेकिन वह लोग उस दस्तावेज को प्राप्त करने के बजाय आपको मार डालना चाहते हैं—क्यों ?"

"जी हाँ।"

"यह बात समझ में नहीं आती। अपराधी पहले उन प्रमाणों को नष्ट करने की चेष्टा करते हैं जो उनके विरुद्ध होते हैं, फिर बाद में···।"

"यही तो उनके वश की बात नहीं है। वह कई बार इसके लिए प्रयत्न कर चुके हैं।"

"और अपनी इस असफलता के फलस्वरूप अब आपको मार डालना चाहते हैं ?"

"जी हाँ।"

"अच्छा तो···मैं आपकी केवल, इतनी ही सेवा कर सकता हूँ कि एक पैग और आपकी सेवा में उपस्थित कर दूँ।"

"आपको विश्वास नहीं हुआ ?" अपरिचित ने उदास होकर कहा।

"हो गया···अब आज्ञा दीजिये।"

सहसा अपरिचित के चेहरे का रंग बदल गया। ऐसा लग रहा था जैसे उसे अत्यन्त क्रोध आ गया हो। वह कुछ क्षण तक हमीद को घूरता रहा, फिर बोला—

"मैं तो चाहता था कि बिना उत्पात मचाये काम हो जाये, मगर आप इस पर तैयार नहीं हैं। मैं अकारण ही आपके साथ अपना समय नष्ट कर रहा था।"

हमीद कुछ नहीं बोला।

"अब जो कुछ भी होगा उसका उत्तर दायित्व आपके सर पर होगा—"अपरिचित उठा और तेजी से काउन्टर की ओर बढ़ा। हमीद मेज पर बैठा उसे देख रहा था। अपरिचित काउन्टर के पास जाकर रुका और फिर एक खाली बोतल उठा कर बार मैन के सर पर तोड़ दी। बार मैन की चीख गूँजी और लोग काउन्टर की ओर झपटे। अपरिचित घूँसे चला रहा था।

हमीद भी मेज से उठा, मगर वह उस समय काउन्टर के समीप पहुँचा जब लोग अपरिचित को फर्श पर गिराकर उसके हाथ बाँध रहे थे।

एक आदमी ने फोन पर पुलिस को इसकी सूचना दे दी।

दस मिनट के अन्दर ही अन्दर पुलिस आ गई। हमीद दूर खड़ा देखता रहा। फिर जब पुलिस उसे लेकर थाने की ओर चली तो उस अपरिचित ने इस प्रकार मुस्कुराकर हमीद की ओर देखा जैसे कह रहा हो "देखा तुमने ?"

हमीद की दिलचस्पी अब बढ़ गई। वह भी उससे थोड़ी दूर पर चलने लगा। चूँकि थाना समीप ही था इसलिये किसी सवारी की आवश्यकता नहीं पड़ी। हमीद न तो अब उस अपरिचित की ओर देख रहा था न पुलिस वालों की ओर। वह तो बस यही सोच रहा था कि देखें यह थाने में पहुँच कर क्या करता है।

अचानक हमीद ने एक चीख सुनी और चौंक पड़ा।

उससे थोड़ी दूर पर वह अपरिचित हथकड़ियों सहित सड़क पर औंधा पड़ा हुआ था। हमीद तेजी से झपटा! कानेस्टेबिल उसे उठाने की चेष्टा कर रहे थे। हमीद की दृष्टि उसकी दाहिनी भुजा पर पड़ी जिसमें एक तीर घुसा हुआ था!

"अरे! यह तो मर गया!" हेड कानेस्टेबिल ने कहा—फिर हमीद से बोला—"हटो! पीछे हटो···तुम कौन हो?"

हमीद ने सीधे होकर कहा—

"कैप्टेन हमीद फ्राम इन्टेलिजेन्स ब्युरो।"

"ओह! क्षमा कीजिये···मैंने आपको पहचाना नहीं।"

"कोई बात नहीं—" हमीद बोला, फिर तेजी से उस ओर बढ़ा। कदाचित वह यह देखना चाहता था कि तीर कहाँ से आया था।

किन्तु वह सौ कदम चला होगा कि एक धमाका सुनाई पड़ा। वह घबड़ा कर मुड़ा। लोग इधर उधर भागने लगे। उस स्थान पर गहन धुआँ छा गया था जहाँ अपरिचित गिरा था हमीद को अपनी आँखों में जलन मालूम होने लगी वह रुक गया। धुआँ फैलता जा रहा था और देखते ही देखते उसने पूरी सड़क घेर ली। हमीद धीरे धीरे पीछे हटता रहा, क्योंकि उसके नेत्रों की जलन बढ़ती जा रही थी।

ट्रैफिक रुक गया था और काफी दूर तक कोलाहल मच गया था। धुआँ इतना गहरा था कि दूसरी ओर की रोशनियाँ भी नहीं दिखाई दे रही थीं।

लगभग पन्द्रह मिनट बाद वायु मण्डल साफ हुआ। मरने वाला अब भी वहीं पड़ा हुआ था जहाँ हमीद ने पहले उसे देखा था, मगर अब उसके शरीर पर वस्त्र नहीं थे और तीर भी गायब था। किसी ने उसके नग्न शरीर पर चादर डाल दी।

हमीद जैसे ही उसकी लाश के समीप पहुँचा हेड कानेस्टेबिल

ने व्याकुल होकर कहा—

"अब मुझे क्या करना चाहिये कैप्टन ?"

"लाश से तीन चार गज दूर चारों ओर सड़क घेर लो, तुम्हारे साथ पाँच आदमी हैं। इस काम के लिये काफी होंगे। मैं तुम्हारे थाने और कोतवाली को फोन कर देता हूँ।"

"जो आज्ञा—" हेड कानेस्टेबिल ने कहा और अपने काम में लग गया।

हमीद ने दुकान से पहले कोतवाली फोन किया, फिर अपने विभाग के उस आफिसर को फोन किया जो आन ड्यूटी था, मगर विनोद का कहीं पता नहीं चल सका।

घर के अतिरिक्त हमीद ने उन स्थानों पर भी फोन किये जहाँ जहाँ विनोद के मिलने की सम्भावना थी मगर कहीं पता न चला।

पाँच मिनट बाद वह फिर घटना स्थल पर पहुँच गया। भीड़भाड़ देखकर उसका दिल घबड़ाने लगा था। मगर कठिनाई तो यह थी कि वह वहाँ से हट भी नहीं सकता था। उसे अपने विभाग के आदमियों की प्रतीक्षा करनी थी, क्योंकि उसे अपना बयान देना था।

भीड़ बढ़ती जा रही थी। सिपाहियों को लाश के चारों ओर घेरा बनाये रखने में बड़ी कठिनाई हो रही थी और यह सब देख देख कर हमीद की उलझन भी बढ़ती जा रही थी। यह घटना रहस्य पूर्ण अवश्य थी मगर यह कोई आवश्यक नहीं था कि कैप्टन हमीद भी अपनी टांग अड़ा ही देता। वह कर्नल विनोद के समान हर वक्त कार्यरत नहीं रहना चाहता था। कभी कभी उसे बेकारी बहुत ही आकर्षक मालूम होती थी—और जब मौसम सुहाना रहता था तब तो वह काम के निकट ही नहीं जाना चाहता था—और आजकल उसके लिये कुछ ऐसा ही

मौसम था। शरद ऋतु थी और नगर की तफरीह गाहों में रात भर चहल पहल रहती थी—मगर यह अवसर ऐसा भी नहीं था कि हमीद तफरीह गाहों के बारे में सोचता।

सबसे पहले समीपी थाने का इन्चार्ज वहाँ पहुँचा उसके साथ भी तीन कानेस्टेबिल थे, मगर फिर भी भीड़ पर अधिकार नहीं पाया जा सका। बस इतना ही हुआ कि लाश के इर्द गिर्द जो घेरा डाला गया था वह मजबूत हो गया।

कुछ देर बाद गुप्तचर विभाग के फोटो ग्राफर भी पहुँच गये, लेकिन अभी तक डी० एस० पी० सिटी नहीं आये थे, और बिना उनके आये लाश पर से कपड़ा हटाया नहीं जा सकता था। हमीद को प्रतीक्षा की यह घड़ियाँ कठिन लगने लगी।

डी० एस० पी० सिटी के आने के बाद लाश पर से चादर हटाई गई और हमीद चकित हो उठा, क्योंकि यह लाश उस आदमी की नहीं थी जिसे उसने तीर खाकर गिरते देखा था। धुआँ साफ हो जाने के बाद तक लाश में किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं हुआ था, मगर अब उसका चेहरा इतना फूल आया था कि असली आकृति का अनुमान तक नहीं हो सकता था। चेहरे ही के अनुपात से उसका शरीर भी फूल गया था।

हमीद इतना बोर हो रहा था कि इतना आश्चर्यजनक परिवर्तन भी उसे नहीं रोक सका। वह अपना बयान देकर चल दिया।

विनोद की लिकन बड़ी तेजी से रेक्सन स्ट्रीट में दौड़ रही थी और लेडी इन्स्पेक्टर रेखा सोच रही थी कि कहीं एक्सीडेन्ट न हो जाये, क्योंकि रेक्सन स्ट्रीट शहर की सबसे आबाद सड़क थी, मगर विनोद के अभ्यास और कौशलता ने उसे एक बार भी

चीखने का अवसर नहीं दिया।

रेखा को यह नहीं मालूम था कि इस भाग दौड़ का तात्पर्य क्या है।

बस वह इतना ही जानती थी कि विनोद उससे कोई काम लेने वाला है। वह यह भी सोच रही थी कि अब उस काम के बारे में विनोद उसे बतायेगा मगर जब विनोद एकदम से मौन रहा तो उसने खुद ही पूछा—

"क्या हम लोग मनोरंजन के लिए बाहर निकले हैं ?"

"नहीं—मनोरंजन के लिये मैं अकेला निकलता हूँ।"

रेखा इस उत्तर पर झेंप गई और फिर आगे प्रश्न करने का उसे साहस नहीं हुआ।

थोड़ी देर बाद लिंकन चीथम रोड पर मुड़ी।

"चाइना कार्नर में तुम्हें जाना पड़ेगा—" विनोद ने कहा—"और यह लो। इसे अपने कोट के बायें कालर में लगा लो।"

विनोद ने जेब से कुछ निकालकर रेखा को दिया। उसका दाहिना हाथ स्टेयरिंग पर था और आँखें सामने सड़क पर।

रेखा ने उसकी दी हुई वस्तु को आश्चर्य के साथ देखा। वह लाल रंग का एक नकली गुलाब का फूल था। रेखा कुछ देर तक सोचती रही, मगर तात्पर्य समझ न सकी। अन्त में उसने साहस करके पूछा—

"यह फूल····मैं समझी नहीं।"

"यह गुलाब का फूल है। इसे बायें कालर में लगा लो।"

"ओह···धन्यवाद—" रेखा फूल ही के समान खिल उठी।

"तुमने गलत समझा !" विनोद ने रूखे भाव में कहा—"मैंने तुम्हें यह तुहफा नहीं दिया है, बल्कि मैं एक अनुभव करने जा रहा हूँ। तुम्हें यह फूल लगाकर चाइना कार्नर में जाना

होगा। मैं भी वहीं रहूँगा, मगर हम दोनों वहाँ एक दूसरे के लिये अपरिचित रहेंगे। मैं केवल यह देखूँगा कि इस फूल के कारण तुम्हें किस परिस्थिति का सामना करना पड़ता है।"

"ओह!" रेखा मुँह बनाकर रह गई। उसका खिला हुआ चेहरा मुर्झा गया। वह बहुधा इस भ्रम में पड़ जाती थी कि विनोद उसकी ओर झुक रहा है—और ऐसे अवसरों पर हमीद उसे चिढ़ाता हुआ कहता कि—"हार्ड स्टोन का ध्यान दिल से निकाल दो नहीं तो टी० बी० हो जायेगी और तुम इस जवानी ही में मर जाओगी।"

कर्नल विनोद के लिये यह कोई नई बात नहीं थी। अब तक न जाने कितनी औरतें इसी भ्रम में पड़ कर निराश हो चुकी थीं। रेखा भी उन्हीं में से एक थी मगर अभी उसका जेहन निराशा की सीमायें नहीं छू सका था। उसे अब भी यह आशा थी कि वह विनोद को अपना बनाकर ही छोड़ेगी मगर आज की इस बात ने उसकी इस आशा पर तुषार पात कर दिया और उसे विश्वास सा हो गया कि वास्तव में इस आदमी का दिल पत्थर का है। उसे मौन देख कर विनोद ने पूछा—

"क्या तुम हिचकिचा रही हो?"

"किस बात से?"

"इसी अनुभव से?"

"नहीं तो—" रेखा जबरदस्ती हँसकर बोली—"आप मुझे इतनी डरपोक क्यों समझते हैं। अगर मैं इतनी ही डरपोक होती तो इस विभाग में आती ही क्यों।"

"पता नहीं क्यों। बहुत से ऐसे ही आ जाते हैं।"

विनोद का यह रिमार्क भी रेखा को खल गया मगर वह कुछ बोली नहीं। मन ही मन ताव खाती रही। थोड़ी देर बाद

उसने पूछा—

"मगर आप जो कुछ करने जा रहे हैं कम से कम उसका तात्पर्य ही बता दीजिये।"

"बस तुम्हें वहाँ किसी खाली मेज पर बैठकर घटनाओं की प्रतीक्षा करनी पड़ेगी।"

"कैसी घटना ?"

"मेरा अनुमान है कि यह फूल तुम्हारे कालर में लगा देखकर कोई न कोई अवश्य तुम्हारे पास आयेगा···फिर मैं देखूँगा कि वह कौन है और क्या चाहता है।"

"मगर आप तो आजकल छुट्टी पर हैं ना।"

"मैं कभी छुट्टी पर नहीं होता।"

"तो फिर छुट्टी लेते ही क्यों हैं ?"

"क्या छुट्टी का वेतन मैं नहीं लेता—" विनोद मुस्कुराकर बोला—"मैं सारे कार्य कानून के अन्दर ही करता हूँ—किन्तु यह आवश्यक नहीं है कि मैं किसी केस में उसी समय दिलचस्पी लूँ जब वह हमारे विभाग की ओर से मुझे सौंपा जाये।"

"क्या यह कोई जटिल केस है जो आप इस प्रकार का अनुभव करने जा रहे हैं ?"

"सम्भव है जटिल ही हो।"

"फिर भी ?"

"मुझे स्वयं अभी तक कुछ मालूम नहीं !"

रेखा चुप हो गई। वह हमीद से भी सुन चुकी थी कि विनोद से कुछ मालूम कर लेना सरल नहीं।

"मुझे और क्या करना होगा ?" रेखा ने पूछा।

"तुम स्वयं काफी चतुर हो—" विनोद ने उत्तर दिया—"इसलिये मुझे आशा है कि कोई गलत काम नहीं करोगी। वास्तव में यह फूल एक प्रकार का परिचय चिन्ह है जिसके द्वारा

दो विभिन्न टोलियों में वार्ता होती है···यह मेरी धारणा है जिसे विश्वास की सीमा तक पहुँचाने के लिये अनुभव करने जा रहा हूँ।"

"ओह! मैं समझ गई···आप उन दोनों टोलियों में से किसी एक को धोखा देना चाहते हैं।"

"धोखा···यह शब्द अनुचित है। जब कानून के रक्षक इस प्रकार की कोई चाल चलते हैं तो उसे नीति कहते हैं—" विनोद ने मुस्कुरा कर कहा।

फिर चाइना कार्नर से कुछ दूर ही पर उसने लिफ्ट रोक दी और बोला—

"अब तुम उतर जाओ—और हाँ! एक बार फिर यह सुन लो कि हम दोनों वहाँ एक दूसरे के लिये अपरिचित होंगे।"

"मुझे याद है—" रेखा ने उतरते हुये कहा।

विनोद ने कार दूसरी सड़क पर मोड़ दी और चक्कर काट कर फिर चाइना कार्नर के सामने पहुँच गया।

चाइना कार्नर शहर का एक प्रसिद्ध रेस्टुरेन्ट था और उसका मालिक एक चीनी ही था जिसका नाम फूही था।

रेखा अन्दर जा चुकी थी। विनोद भी कार से उतर कर अन्दर चला गया। यहाँ इस समय भीड़ नहीं थी। रेखा एक खाली मेज पर बैठी थी। उसके पास ही दूसरी मेज भी खाली थी।

विनोद उसी दूसरी मेज पर बैठ गया।

बीस मिनट व्यतीत हो गये, मगर रेखा की ओर किसी ने ध्यान नहीं दिया।

आधा घन्टा बीत गया मगर परिणाम कुछ नहीं निकला। किसी ने भी उसकी ओर नहीं देखा।

रेखा काफी पी चुकी थी और अब इस भाव में बैठी थी जैसे बहुत थक गई हो। उसके चेहरे से यह नहीं प्रकट हो रहा था कि वह किसी की प्रतीक्षा कर रही है।

पचीस मिनट व्यतीत हो जाने के बाद रेखा एकदम उक्ता गई—मगर वह करती भी क्या ? वैसे वह यह जानती थी कि विनोद उसके निकट ही बैठा है मगर इस मध्य उसने एक बार भी विनोद की ओर नहीं देखा।

सहसा रेखा का हृदय धड़कने लगा, क्योंकि एक आदमी उसकी ओर बढ़ रहा था। वह कोने की एक मेज से उठा था और उसने रेखा को उसी समय देख लिया था जब वह यहां प्रविष्ट हुई थी और रेखा की दृष्टि भी सबसे पहले उसी पर पड़ी थी। वह था भी कुछ इस प्रकार का मनुष्य कि उस पर विशेष रूप से नजर पड़ सकती थी। वह एक दुबला पतला और छोटे कद का आदमी था। आंखें छोटी और नीली। जबड़े बन्दरों के समान और ललाट पर छाया डाले छोटे छोटे बाल। चेहरे पर अगणित झुर्रियां थीं, किन्तु कपड़ों से वह बहुत ही अमीर मालूम हो रहा था। घड़ी की जंजीर में विभिन्न रंगों के हीरे दिखाई दे रहे थे।

"आप की आज्ञा—" वह बैठता हुआ बोला।

"ओह···अवश्य ? अवश्य—" रेखा सीधी होकर बैठ गई। उसने उस आदमी को बड़े ध्यान से देखा। वह शत प्रतिशत बन्दर ही मालूम हो रहा था। उसके अधरों पर वैसी ही मुस्कराहट थी जैसे बन्दर दांत निकालते हैं।

"मेरा नाम फ्रिन्च है···अगर मैं गलती नहीं कर रहा हूँ तो आप अभी मिस ही हैं।"

"कोई आवश्यक नहीं है कि मैं भी अपना नाम बताऊं—" रेखा बोली।

"आवश्यक तो नहीं है—" फिन्च धीरे से बोला—"लेकिन एक दूसरे से जान पहचान पैदा करने के लिये फिर और कौन सा मार्ग अपनाया जाये।"

सहसा रेखा को ध्यान आ गया कि वह किसी तात्पर्य के लिये यहां आई है। सम्भव है उसके इस शुष्क व्यवहार के कारण असफलता प्राप्त हो। इसलिये वह एक पेशावर औरत के समान मुस्कुराई और बड़ी अदा से बोली—

"रेखा··· मेरा नाम रेखा है।"

"तो मिस रेखा। क्या आप इस कार्नर में बराबर आती रहती हैं?" फिन्च ने पूछा।

"मैं तो दिन में कई बार यहां आती हूँ।"

"क्या आप को गुलाब बहुत पसन्द है?"

"हां—है तो··· लेकिन बहुत जल्द मुर्झा जाते हैं, इसलिये मैं उनकी नकल अधिक पसन्द करती हूँ।"

"मेरे पास एक ऐसा लोशन है जो कम से कम एक सप्ताह तक गुलाबों को ताजा रखता है—" फिन्च उसके नेत्रों में देखता हुआ बोला।

"ओह।" रेखा आश्चर्य प्रकट करती हुई बोली—"मैं ऐसे लोशन के लिये अपना आधा राज्य दे सकती हूँ।"

"मैं आपको उस लोशन की एक बड़ी मात्रा दे सकता हूँ। क्या आप मेरे साथ चल सकेंगी?"

"अवश्य चलूँगी—" रेखा ने प्रसन्न होते हुए कहा।

फिन्च उठ गया। रेखा भी उठी। विनोद उनकी ओर पीठ

किये समाचार पत्र पर झुका हुआ था।

रेखा उस पर एक दृष्ट डालती हुई आगे बढ़ गई। वह बाहर आये। फिन्च उसे जिस कार की ओर ले जा रहा था वह बड़ी शान्दार थी। एक लम्बी सी काले रंग की सीडान।

वह अगली सीट का दरवाजा खोल कर एक ओर खड़ा हो गया। रेखा अन्दर जाकर बैठ गई—फिर उसने भी स्टेयरिंग के सामने बैठ कर दरवाजा बन्द कर लिया।

सीडान चिकनी सड़क पर नौका के समान तैरने लगी।

रेखा ने कई बार सोचा कि पीछे मुड़ कर देखे, मगर ऐसा न कर सकी। वैसे उसे इस बात का पूरा विश्वास था कि विनोद की लिकन इससे अधिक दूर नहीं होगी। फिन्च मौन था और रेखा का दिल धड़क रहा था, मगर इस धड़कन का सम्बन्ध भय से नहीं था, बल्कि वह यह सोच रही थी कि अब क्या होगा। उसे अब विश्वास हो गया था कि अवश्य कोई गहरा मामला है। नहीं तो विनोद उसे इस प्रकार अनुभव के लिये बलिदान नहीं करता।

सीडान विभिन्न सड़कों पर दौड़ती रही! रेखा ने मार्ग का विवरण अपने मस्तिष्क में रखने की चेष्टा की थी। बीस मिनट के बाद यात्रा समाप्त हो गई। कार एक विशाल कोठी के कम्पाउन्ड में प्रवेश कर रही थी।

फिर वह पोर्च में पहुँच कर रुक गई। फिन्च ने नीचे उतर कर दरवाजा खोला। न जाने क्यों नीचे उतरते समय रेखा के पाँव कांप रहे थे। यद्यपि वह अब भी भयभीत नहीं थी।

"उस ओर—" फिन्च ने सीढ़ियों की ओर संकेत किया।

फिर वह और रेखा साथ साथ चलने लगे।

"मैं यहीं रहता हूँ—" फिन्च ने कहा।

"हूँ—" रेखा ने इससे अधिक और कुछ नहीं कहा। फिन्च अभी तक अंग्रेजी ही में बात करता रहा था इसलिये रेखा को अनुमान नहीं हो सका था कि वह किस देश और किस जाति से सम्बन्ध रखता था। न तो वह अंग्रेज ही मालूम देता था न देशवासहो। चाल ढाल से बहुत हो अधिक फुर्तीला जान पड़ता था।

वह एक बड़े कमरे में आये। रेखा चकित थी, क्योंकि इतनी विशाल कोठी में उसे एक आदमी भी अभी तक नहीं दिखाई पड़ा था। वह दोनों कमरे के मध्य में खड़े थे।

सहसा रेखा ने पदध्वनि सुनी और फिर एक लम्बे कद का आदमी कमरे में दाखिल हुआ। उसने घूर कर रेखा को देखा, फिर फिन्च की ओर मुड़ गया।

फिन्च ने उससे कुछ कहा, मगर रेखा की समझ में नहीं आया, क्योंकि उसने किसी ऐसी भाषा में कहा था जो रेखा की समझ से बाहर थी।

लम्बे आदमी ने भी उत्तर में कुछ कहा और जाने के लिये मुड़ गया, किन्तु चार ही छः कदम चला होगा कि सहसा चीख कर मुँह के बल फर्श पर गिर पड़ा।

उसकी पीठ में एक बड़ा सा तीर धंसा हुआ था, फिन्च उछल कर भागा।

रेखा भी उसके पीछे झपटी। वह अब भी भयभीत नहीं थी। वह भागती रही, किन्तु शीघ्र ही फिन्च उसकी आँखों से ओझल हो गया, और वह उसके कदमों की आहट पर दौड़ती रही।

फिर कदमों की आहट भी गायब हो गई, लेकिन रेखा उसी

प्रकार दौड़ती रही। सहसा वह एक दीवार से टकराई। आगे मार्ग नहीं था। कदाचित वह अभी तक किसी गलियारे में दौड़ती रही थी। वह अन्धकार में दोनों हाथों से टटोलने लगी। ठीक उसी समय टार्च का प्रकाश उसके चेहरे पर पड़ा और उसकी आँखें बन्द हो गई।

दूसरे ही क्षण उसने विनोद की आवाज सुनी।

"क्या बात है ?"

कुछ देर बाद रेखा को ज्ञात हुआ कि वह विनोद की भुजाओं के सहारे टिकी बुरी तरह काँप रही है।

"क्या है ?" विनोद ने फिर पूछा।

"वह ·· ····वहाँ····· ····एक लाश है—" रेखा कम्पित स्वर में बोली।

विनोद अपनी भुजायें हटाता हुआ बोला—

"यह बात आज तक मेरी समझ में नहीं आई कि इस विभाग में औरतों को क्यों स्थान दिया जाता है।"

रेखा कुछ नहीं बोली। वह सोचने लगी कि जब वह भयभीत नहीं थी तो फिर विनोद की आवाज सुनते ही अचानक इस प्रकार डर क्यों गई ? उसके स्वर में कम्पन क्यों उत्पन्न हो गया ?

"वह बन्दर कहाँ है ? तुम भाग क्यों रही थीं ?" विनोद ने एक साथ दो प्रश्न किये।

"वह भाग गया और उसके एक साथी को किसी ने तीर का निशाना बना दिया।"

"ओह....अच्छा··· उस कमरे में चलो।,

रेखा अपनी स्मरण शक्ति के भरोसे पथ-प्रदर्शक बनी औ उस कमरे की ओर बढ़ी जहाँ उसने उस लम्बे आदमी को तीर खाकर गिरते देखा था। गलियारे के सिरे पर पहुँचने के ब उन्हें प्रकाश मिला। इमारत के उस भाग में अब भी प्रकाश जिसमें पहले भी बत्तियाँ जल रही थीं, मगर मौत का सा सन्ना था। उन दोनों को अपने कदमों की चाल के अतिरिक्त औ किसी प्रकार की कोई आवाज नहीं सुनाई दे रही थी।

रेखा शीघ्र ही उस बड़े कमरे के पास पहुँच गई, मग भीतर प्रवेश करते ही बौखला कर इस प्रकार पीछे हटी कि यदि विनोद एक ओर हट न गया होता तो वह उससे अवश्य टकरा जाती। इस बौखलाहट का कारण यह था कि फर्श पर पड़ी हु लाश के शरीर पर अब वस्त्र नहीं थे। विनोद ने जल्दी से एक दरवाजे का परदा खींच कर लाश पर डाल दिया, फिर वह रेखा की ओर मुड़ कर बोला—

"क्या तुमने पहले भी लाश ही देखी थी ?"

इस पर रेखा ने लाश की ओर मुड़े बिना जल्दी जल्दी पूरी कथा सुना डाली।

"मैंने उस पर कपड़ा डाल दिया है—" विनोद ने कहा।

रेखा ने लाश की ओर देखा, मगर देखते ही चौंक पड़ी।

"अब क्या बात है ?" विनोद पूछा।

"मैंने जिस आदमी को तीर खाकर गिरते देखा था वह इतना मोटा नहीं था।"

विनोद ने फिर लाश की ओर देखा। चेहरा फुटबाल मालूम हो रहा था और यह बताना कठिन था कि नाक कहाँ पर समाप्त होती है और अधर कहां से आरम्भ होता है। ललाट के भी

ने आँखें ढाँप ली थीं।

"क्या कहना चाहती हो?"

"यह उस आदमी की लाश नहीं है जिसे मैंने गिरते देखा था।"

"ओह···इसका प्रत्येक अंग फूल गया था—" विनोद ने कहा और फिर झुक कर लाश के नीचे से बहे हुये रक्त को देखने लगा।

"वह आदमी तो लम्बा इतना ही था, मगर····।"

"देखो! यहां कहीं फोन भी है—" विनोद ने उसकी बात काट कर कहा, फिर तत्काल ही बोला—" ठहरो! मैं भी चलता हूँ। इस इमारत को पहले देख लिया जाये—क्या यहाँ केवल दो ही आदमी थे?"

"लेकिन यदि यह वही आदमी है तो फिर इसके कपड़े किसने उतारे और तीर किसने अलग कर दिया जो इसकी पीठ में धंसा हुआ था—" रेखा ने कहा।

"मेरा अनुमान है कि यह घटना बड़ी जटिलता उत्पन्न करेगी।"

वह दोनों उस कमरे से निकल कर इमारत के दूसरे भागों को देखने लगे, मगर उन्हें अपने अतिरिक्त तीसरा कोई भी नहीं दिखाई पड़ा।

रेखा उस बड़ी इमारत और उसके फर्नीचर को बड़े ध्यान और आश्चर्य से देख रही थी।

वह पूरी इमारत घूम कर उस कमरे में आये जहाँ उन्होंने फोन देखा था। विनोद ने अपने आफिस के नम्बर डायल किये।

रेखा उसे बातें करते सुनती रही! जब वह रिसीवर रखकर

रेखा की ओर मुड़ा तो उसके नेत्रों में एक ऐसी ज्योति रेखा को दिखाई पड़ी जिसका अर्थ समझना रेखा के वश की बात नहीं थी।

"यह घटनायें अवश्य ही जटिलता उत्पन्न करेंगी—" विनोद बड़बड़ाया।

"यही बात आपने कुछ देर पहले भी कही थी—आखिर इसका मतलब क्या है ?"

"यह वही आदमी हो सकता है जिसे तुमने तीर खाकर गिरते देखा था।"

"मगर उसकी सूरत शक्ल मुझे अच्छी तरह याद है—" रेखा बोली।

"तुम भी ठीक कह रही हो और मैं भी ठीक कह रहा हूं। अभी कुछ देर पहले हमीद को भी एक ऐसी ही दुर्घटना का सामना करना पड़ा है। आलेक्चनू के समीप किसी ने एक आदमी पर तीर फेंका और फिर उसके कपड़े उतार ले जाने के लिये धूयें का बम फेंका।"

"कपड़े उतारने के लिये !" रेखा आश्चर्य के साथ बोली।

"हां—मगर तुम्हें इतना आश्चर्य क्यों हो रहा है ?"

"आश्चर्य की बात ही है।"

"क्या वह आदमी जो उस कमरे में है, गिरते समय नंगा था ?"

"नहीं।"

"और अब ?"

"उसके शरीर पर कपड़े नहीं है।"

"अर्थात उसके मरने के बाद उसके शरीर से कपड़े उतार

लिये गये हैं ना ?''

''जी हाँ !''

''तो बस...यही कार्य उस आदमी की लाश के साथ भी किया गया—मगर चूंकि बीच सड़क पर यह कार्य कठिन ही नहीं बल्कि असम्भव था इसलिये धूयें का बम फेंका गया, और धूयें की आड़ में उसके कपड़े उतार लिये गये ।''

''मगर कपड़े उतारने का उद्देश्य क्या हो सकता है ?''

''ईश्वर ही जाने– '' विनोद ने कहा और रेखा को लिये हुये फिर उस कमरे में गया जिसमें लाश पड़ी हुई थी ।

''अभी फोन पर मैंने अपने विभाग के फोटोग्राफरों को बुलाया था, मगर वह इस समय आर्लेक्चनू के समीप कार्य कर रहे हैं ।''

''तो दूसरी घटना की सूचना आपको फोन पर मिली है ?'' रेखा ने पूछा ।

''हाँ···और अब···वह लाश भी थोड़ी ही देर में फूल गई थी, बिल्कुल इसी प्रकार हमीद ने भी उसे बड़ी कठिनाई से पहचाना ।''

''कपड़े और तीर वहाँ भी गायब है ?'' रेख ने पूछा ।

''हाँ—'' विनोद ने कहा और कुछ सोचने लगा ।

''क्या आप को इस दुर्घटना की आशा थी ?''

''नहीं—मैं यहाँ तक सोच भी नहीं सकता था ।''

''फिर आप का अनुभव ?''

''वह इससे भिन्न था । क्या तुम जानती हो कि इस इमारत में कौन रहता है?''

''नहीं !''

"एक विदेशी राजदूत यहाँ रहता है। हमारे देश की एक पार्टी उस देश से सहानुभूति रखती है, मुझे सन्देह था कि उस पार्टी के लोग राष्ट्र के भेद प्राप्त करके उस देश के राजदूत तक पहुँचाते हैं। उनकी कार्य प्रणाली यही होती है। वह जाल गुलाब लगा कर चाइना कार्नर में जाते हैं और वहां से कोई आदमी उन्हें राजदूत तक पहुँचा देता है। यह लाल गुलाब परिचय चिन्ह है।"

"तो वह···छोटा आदमी फिन्च इसी विदेशी दूतवास से सम्बन्ध रखता है?" रेखा ने पूछा।

"पता नहीं··· वैसे मैंने उसे यहाँ कभी नहीं देखा।"

"यह फिन्च कैसा नाम है—वह अंग्रेज तो नहीं मालूम होता।"

"मेरी समझ से पुर्तगाली है, मगर यह बात बड़ी आश्चर्य जनक है कि यहाँ एक भी नौकर नहीं दिखाई दे रहा है।"

"और दूत का भी पता नहीं—" रेखा बोली।

"यह एक खतरनाक ड्रामा है—" विनोद लाश को घूरता हुआ बोला।

ठीक उसी समय चार विदेशी कमरे में प्रविष्ट हुये, मगर इन दोनों को देखकर दरवाजे पर ही रुक गये। विनोद ने अपनी फेल्ट हैट उतारी और रेखा ने भी उनमें से दूत को पहचान लिया।

"तुम कौन हो और यहाँ क्या कर रहे हो?" राजदूत आगे बढ़ कर क्रोध भरे स्वर में कहा और फिर लाश पर दृष्टि पड़ते ही चौंक उठा।

राजदूत के तीनों साथी सशस्त्र थे। उन्होंने अपने हा

होल्स्टरों पर रख लिये, फिर विनोद ने जैसे ही अपना विजिटिंग कार्ड निकालने के लिये जेब में हाथ डाला, एक आदमी अपना रिवाल्वर निकालता हुआ बोला—

"अपना हाथ ऊपर उठाये रखो।"

मगर इतनी देर में विनोद कार्ड निकाल चुका था।

"मेरा परिचय कार्ड—" विनोद ने राजदूत की ओर कार्ड बढ़ाते हुये कहा।

राजदूत ने कार्ड ले लिया, मगर उसके नेत्र लाश ही पर जमे रहे····और फिर वह उस समय चौंका जब उसका साथी विनोद से दोबारा हाथ उठाने को कह रहा था। सब से पहले उसने कार्ड पर छपे हुये नाम को पढ़ा, फिर अपने साथियों की ओर मुड़ कर कुछ कहा, रेखा उसकी बात समझ तो नहीं सकी, मगर यह देखा कि रिवाल्वर फिर होल्स्टर में डाल लिये गये।

"आप यहां कैसे।" राजदूत ने अंग्रेजी मे पूछा।

विनोद लाश की ओर संकेत करके बोला—

"इसलिये····किन्तु आप यह नहीं कह सकेंगे कि मैं गैर कानूनी तौर पर यहाँ दाखिल हुआ हूँ।"

"मैं यह भी कह सकता हूँ और यह भी कह सकता हूँ कि यह लाश···!"

"मैंने यहाँ डाली है—" विनोद ने मुस्करा कर वाक्य पूरा कर दिया।

राजदूत के अधर खुले, मगर फिर बन्द हो गये। कदाचित वह कुछ कहना चाहता था, मगर कुछ सोच कर न कह सका।

"क्या आप यह बता सकेंगे कि यह लड़की यहाँ क्यों लाई

गई थी ?" विनोद ने शुष्क स्वर में कहा ।

"लाई गई थी, मैं समझा नहीं—" राजदूत ने आश्चर्य से कहा ।

"मैं समझाने का प्रयत्न करूंगा—" विनोद लाश की ओर देखता हुआ बोला—"क्या आप बता सकेंगे कि यह कौन है ?"

"अवश्य !" राजदूत ने हंसकर कहा—"अगर यह भी आप ही के समान अपना परिचय कार्ड मुझे दे सकें ।"

विनोद क्रोध से लाल हो उठा, मगर फिर संभल कर बोला—

"आपने मुझे यहां क्यों बुलाया था ?"

"मैंने ! कौन कहता है ?"

"क्या मतलब !" विनोद उत्तेजित हो उठा ।

"मैं क्यों बुलाऊंगा आपको ?"

"मैं नहीं जानता, आपने मुझे फोन किया था, मगर जब मैं यहां आया तो फाटक पर सन्तरी नहीं था और न कोई नौकर ही था जिससे मैं अपना कार्ड आपके पास भेजवाता । क्या यह आश्चर्य जनक बात नहीं है सर ?"

राजदूत मौन रहा अतः विनोद फिर बोला—

"फिर मुझे इस बात का अनुभव हुआ कि पूरी इमारत जन विहीन है, सन्तरी की अनुपस्थिति ने मुझे मेरा कर्त्तव्य याद दिला दिया और आपकी आज्ञा प्राप्त किये बिना मैं इमारत में घुस आया । जब यहां पहुंचा तो यह लाश मिली ।"

"और यह लड़की ?" राजदूत ने प्रश्न किया ।

"लेडी इन्स्पेक्टर रेखा फ्राम इन्टेलिजेन्स ब्युरो ।"

"क्या मतलब ?" राजदूत चौंक कर बोला—"अभी तो

आपने कहा था कि यह लड़की यहाँ जबरदस्ती लाई गई थी ?"

"नहीं तो···आपने गलत सुना होगा ।"

राजदूत के साथियों में से एक ने खिसकना चाहा, मगर विनोद ने हाथ उठाकर कहा—

"आप यहीं ठहरिये ! आप उस समय तक अपने स्थान से नहीं हिल सकेंगे जब तक कि पुलिस न आ जाये ।"

"क्या बकवास है—" राजदूत ने क्रोधित होकर कहा—"तुम्हारे राज्य को इसके लिये उत्तरदायी होना पड़ेगा ।"

"उससे पहले आपको उत्तरदायी होना पड़ेगा कि वह सन्तरी कहाँ है जो आपकी रक्षा के लिये हमारे राज्य की ओर से नियत किया गया था ।"

"इसके लिये वह सन्तरी उत्तरदायी होगा जो ड्यूटी पर नहीं है—और तुम इन लोगों को रोक नहीं सकते । बुद्धि से काम लो, कहीं ऐसा न हो कि तुम पर कोई विपत्ति आ पड़े ।"

"मैं और विपत्ति में !" विनोद ने मुस्कुरा कर कहा—"यह असम्भव है और यह भी सम्भव नहीं है कि आप कानून को अपने हाथों में लें, क्योंकि मैं अभी थोड़ी देर पहले अपने विभाग से सम्बन्ध स्थापित करने के लिये आपका फोन प्रयोग कर चुका हूँ—और मेरे आफिसर जानते हैं कि मैं इस समय यहाँ उपस्थित हूँ।"

राजदूत अपना निचला होंठ दबाकर फिर कुछ सोचने लगा, उसके तीनों साथी अधीर हो उठे थे ।

"अच्छा···हम कहीं बैठकर बातें करें—" राजदूत ने कहा ।

"मैं क्षमा चाहता हूँ···जब तक पुलिस यहाँ नहीं आ जाती तब तक मेरा यहाँ से हटना असम्भव है ।"

"तुम बड़े सिद्धान्त के आदमी मालूम पड़ते हो—" राजदूत

ने मुस्कुराकर कहा फिर तत्काल गम्भीर मुद्रा बनाकर बोला—"मैंने तुम्हें नहीं बुलाया था। मैं इस समय एक दूतावास के निमन्त्रण से वापस आया हूँ। मुझे भी फाटक पर सन्तरी नहीं मिला था, नौकर भी न जाने कहाँ गये—और यहाँ आने पर हमें एक लाश दिखाई पड़ी।"

राजदूत मौन होकर गर्व के साथ विनोद की ओर देखने लगा।

इतने में घन्टी बजी, राजदूत के साथियों में से एक ने जाना चाहा, मगर विनोद ने उसे रोक दिया और रेखा को भेजा।

रेखा की समझ में नहीं आ रहा था कि यह सब क्या हो रहा है।

पुलिस आई सब के बयान लिये गये, यदि विनोद अपना बयान पहले नहीं देता तो रेखा उलझन में पड़ जाती, क्योंकि कुछ ही देर पहले विनोद ने राजदूत से कई विभिन्न प्रकार की बातें की थीं····सारांश यह कि उसने विनोद के बयान को दुहरा दिया, रेखा ने जो बयान दिया वह यह था।

"मैं कर्नल विनोद कुमार की कोठी में मौजूद थी। राजदूत का फोन कर्नल साहब के नाम आया कि वह जितनी जल्दी हो सके उनकी कोठी में पहुँचे, क्योंकि वह खतरे में घिरे हुये हैं। विनोद कुमार ने मुझे अपने साथ लिया और चल पड़े, मगर जब हम लोग यहाँ पहुँचे तो यह कोठी बिल्कुल सुनसान थी, फाटक पर सन्तरी नहीं था। हम लोग जब अन्दर आये तो एक भी नौकर हमें दिखाई नहीं पड़ा, हम लोग जब यहाँ इस कमरे में पहुँचे तो हमें यह लाश दिखाई पड़ी, कर्नल साहब ने कोतवाली फोन किया और अपने विभाग को भी इसकी सूचना दी, उसके

बाद ही श्रीमान राजदूत साहब आ गये, उनके साथ तीन सशस्त्र आदमी थे।"

राजदूत का बयान था कि वह छः बजे नारवे के दूतावास की ओर से दिये गये एक निमन्त्रण में सम्मिलित होने के लिये गया था, उसे नहीं मालूम कि उसकी अनुपस्थिति में यहाँ क्या हुआ वापसी पर उसे एक लाश मिली और यह दोनों दिखाई पड़े जो गैर कानूनी तौर पर कोठी में दाखिल हुये थे।

राजदूत ने लाश को पहचानने से इन्कार कर दिया और रेखा को आश्चर्य हो रहा था कि आखिर विनोद ने फिंच का उल्लेख क्यों नहीं किया।

कुछ देर बाद लाश वहां से उठवा दी गई।

वापसी पर रेखा ने विनोद से कहा—

"बड़ा विचित्र अनुभव था।"

"जो अधूरा रहा—" विनोद ने धीरे से कहा—"मगर सन्तरी का क्या बना? जब तुम अन्दर पहुँची थीं तो फाटक पर सन्तरी मौजूद था या नहीं?"

"कोई भी नहीं था, मुझे स्वयं भी आश्चर्य था कि इतनी बड़ी इमारत इस प्रकार सुनसान पड़ी हुई है··· मगर यह सब हुआ क्या?"

"कुछ भी नहीं हुआ, फिंच निकल गया और उसका साथी मारा गया। इसके दो ही अर्थ हो सकते हैं, या तो वह अपने ही आदमियों के हाथों मारा गया था या फिर कोई दूसरी पार्टी भी इन मामिलों में दिलचस्पी ले रही है।"

"मगर मामलात क्या हैं?"

"मामलात चाहे जो भी कुछ हों, अभी मैं कुछ नहीं कह

सकता। बस इतना ही कहूँगा कि यह दूतावास हमारे राज्य की एक पार्टी को मिलाकर कुछ रहस्य प्राप्त करना चाहता है और नकली गुलाब का फूल इस संस्था का निशान है।"

"तो फिर यही कहना पड़ेगा कि फिंच और उसका साथी इसी दूतावास से सम्बन्ध रखते हैं—" रेखा बोली।

"ठहरो! मुझे सोचने दो—" विनोद बोला—"सन्तरी गायब! नौकर ला पता। क्या यहाँ आज कोई विशेष घटना होने वाली थी···ओह! हमें फिर चाइना कार्नर चलना चाहिये···तुम आज किसी दूसरे के भ्रम में राजदूत के निवास स्थान तक ले आई गई थीं। सम्भव है तुम्हारा स्थान ग्रहण करने वाली औरत अब भी वहाँ फिंच या किसी दूसरे आदमी की प्रतीक्षा कर रही हो। अब यह फूल तुम अपने कालर से निकाल लो और गाड़ी लेकर घर जाओ। हमीद से कहना कि वह घर ही पर रहे। मैं उसे किसी समय भी फोन कर सकता हूँ।"

● ● ●

रेखा के जाने के बाद विनोद ने एक टैक्सी की और चाइना कार्नर की ओर चल पड़ा। वहाँ तक पहुँचने में उसे कुल दस मिनट लगे।

जैसे ही उसने कार्नर में पग रखे उसकी दृष्टि एक सुन्दर सी लड़की पर पड़ी। जिसकी अवस्था सोलह-सतरह वर्ष से अधिक नहीं थी। वह किसी कालेज की छात्रा मालूम पड़ रही थी और उसके कोट के बांये कालर में नकली लाल गुलाब लगा हुआ था। उसके भावों से ऐसा प्रतीत हो रहा था मानों वह किसी की प्रतीक्षा करते-करते उक्ता गई हो।

विनोद सीधा उसकी मेज की ओर गया ।

"आपको काफी प्रतीक्षा करनी पड़ी—" विनोद एक कुर्सी खींच कर बैठता हुआ धीरे से बोला ।

"जी नहीं—" लड़की जबरदस्ती मुस्कुराती हुई बोली—"मैं वास्तव में खुद ही पन्द्रह मिनट लेट पहुँची थी ।"

"यह भी विचित्र संयोग है कि आज मुझे देर हो गई—आइये ! अब और अधिक देर नहीं करनी चाहिये ।" विनोद उठता हुआ बोला ।

लड़की भी उठ गई, मगर द्वार पर जाकर सहसा वह रुक गई ।

"क्या बात है ?" विनोद ने पूछा ।

"मैं नहीं जाऊंगी ।"

"क्यों ?"

"मुझे भय लग रहा है ।"

"ओह···अच्छा ! अब इस गुलाब को अपने कालर से निकाल लो ।"

लड़की ने गुलाब निकाल कर हाथ में ले लिया···लेकिन जब विनोद टैक्सी के पास पहुँचा तो एक बार फिर उसने कम्पित स्वर में कहा—

"मैं नहीं जाऊंगी ।"

"मूर्खता की बातें न करो—" विनोद उसे पिछली सीट पर धक्का देकर खुद भी बगल में बैठता हुआ बोला—"आखिर तुम डर क्यों रही हो ?"

"मुझे बताया गया था कि मुझे एक नाटे कद के आदमी के साथ जाना होगा । उसका हुलिया भी बताया गया था, मगर

आप तो···!"

"ओह ! बस इतनी सी बात—" विनोद ने उसकी बात काटकर मुस्कराते हुये कहा—"कभी कभी प्रोग्राम में परिवर्तन भी होता रहता है।"

"क्या मतलब ?"

"मतलब यह है कि वह बन्दर अचानक बिमार पड़ गया इसलिये उसके बदले मुझे यहाँ भेजा गया है।"

टैक्सी चल पड़ी, विनोद ने ड्राइवर को अपनी कोठी का पता बताया था। मार्ग में न तो लड़की ने कुछ पूछा और न विनोद ने। वह कुछ सोच रहा था।

लगभग पन्द्रह मिनट बाद टैक्सी उसकी कोठी के कम्पाउन्ड में प्रविष्ट हुई। विनोद ने लड़की से नीचे उतरने को कहा, लड़की अब भी भय के कारण कांप रही थी, वह टैक्सी से नीचे उतर गई। विनोद ने ड्राइवर को किराया दिया और पोर्च की ओर संकेत करके लड़की से कहा—"चलो !"

हमीद और रेखा से बरामदे में भेंट हुई, रेखा कदाचित वापस जा रही थी। विनोद के साथ एक सुन्दर लड़की को देख कर रेखा चौंक पड़ी और हमीद की जो दशा हुई होगी उसका उल्लेख ही बेकार है।

रेखा रुक गई, मगर विनोद ने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया। वह लड़की को लेता चला गया, ड्राइंग रूम में पहुँच कर उसने लड़की से कहा—

"बैठ जाओ।"

लड़की भय के कारण कांप तो पहले ही से रही थी—अब उसे सन्देह भी हो गया था—कि कदाचित वह किसी दूसरे

आदमी के हाथ लग गई है। विनोद के दूसरी बार कहने पर वह बैठ गई।

इतने में रेखा और हमीद भी वहाँ पहुँच गये, लड़की उनकी ओर देखने लगी, मगर विनोद की दृष्टि उसी लड़की पर ही जमी रही, सहसा वह उत्तेजित होकर बोला—

"इस समय तुम्हारे सामने इन्टेलिजेन्स ब्युरो का कर्नल विनोद बैठ हुआ है।"

"नहीं—" लड़की चीख पड़ी और उसके शरीर का कम्पन और बढ़ गया।

"तुम कब से उन लोगों के लिये काम कर रही हो?" विनोद ने उसकी चीख को अनसुनी करके कहा।

लड़की का मुख श्वेत पड़ गया था और ऐसा लग रहा था जैसे वह अपनी चेतना खो बैठेगी।

"मैं तुम्हीं से पूछ रहा हूँ—" विनोद ने कहा।

"मैं...कक...कुछ....नहीं....जानती—" लड़की हकलाई।

"लेकिन वह लाल गुलाब!"

लड़की कुछ नहीं बोली।

"तुम्हारा इस प्रकार चुप रहना अब तुम्हें कोई लाभ नहीं पहुँचा सकता, क्योंकि तुम उस नाटे कद के बन्दर की बात पहले ही कह चुकी हो।"

अचानक लड़की ने रोना आरम्भ कर दिया।

"बहुत हो चुका श्रीमान जी!" हमीद आगे बढ़ता हुआ बोला—"आप अकारण ही इस नन्हीं सी बच्ची को परेशान कर रहे हैं, मेरा विचार है कि इस बेचारी को धोखा दिया गया है।"

"जज···जी हाँ·····धोखा—" लड़की हिचकी लेती हुई

बोली—"मैं····निर्दोष हूं।"

"देखो—" हमीद सर हिला कर बोला—"मैं पहले से जानता था···देखूं वह फूल····जरा मुझे तो देना।"

लड़की ने जेब से फूल निकाल कर हमीद की ओर बढ़ा दिया—

"हां हां—यह वही फूल है—" हमीद उसके हाथ से फूल लेता हुआ बोला।

फिर उसने विनोद को आंख मारते हुये कहा—"यह बेचारी सचमुच धोखा खा गई है।"

अचानक विनोद उठा और रेखा को अपने साथ आने का संकेत करता हुआ बाहर चला गया।

"मुझे दुख है कि तुम इस विपत्ति में फंस गईं, मैं पूरी चेष्टा करूंगा कि कर्नल साहब तुम्हें इस विपत्ति से बचा लें।"

"मैं सदैव आपकी आभारी रहूंगी—" लड़की ने कहा, उसकी हिचकियां कम होती जा रही थीं।

"मैं जानता हूं कि तुम बहुत सभ्य लड़की हो, तुम मुझे उसका पता बताओ जिसने तुम्हें इस विपत्ति में फंसाया है।"

"मेरे कालेज की एक लेक्चरार ने।"

"तुम किस कालेज में पढ़ती हो?"

"नेशनल गर्ल्स कालेज में—" लड़की बोली—"मैं एक गरीब लड़की हूं। मेरा बाप अन्धा है। जिनकी अल्प पेन्शिन पर पूरे परिवार का गुजर होता है, मेरी तीन छोटी बहिनें और भी हैं, भाई एक भी नहीं है, मैं अभी पढ़ रही हूं, आप स्वयं विचार कीजिये कि आजकल मंहगाई के कारण कितनी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। सारांश यह कि मुझे एक अच्छे ट्यूशन

की आवश्यकता थी, मेरे कालेज में एक लेक्चरार हैं मिस वर्मा। उन्होंने मुझे वचन दिया था कि वह मेरे इनकम का कोई न कोई उपाय अवश्य निकालेंगी, आज उन्होंने मुझे एक पत्र दिया जो लिफाफे में बन्द था और कहा था कि मैं ठीक नौ बजे चाइना कार्नर में पहुँच जाऊं, वहाँ मुझे एक नाटे कद का विदेशी मिलेगा जो मुझे एक दूसरे आदमी के पास ले जायेगा, मैं वह पत्र उसे दूंगी और मुझे काम मिल जायेगा। मिस वर्मा से जब मैंने यह पूछा कि वह काम क्या होगा तो उन्होंने बताया कि एक विदेशीय राजदूत अपने बच्चों को हिन्दी पढ़वाना चाहता है, मैंने सोचा कि यह तो बड़ी अच्छी बात है। वेतन भी पर्याप्त ही मिलेगा, मगर जब मिस वर्मा ने कहा कि यह लाल गुलाब अपने कालर में लगा लो ताकि वह आदमी तुम्हें सरलता से पहचान सके तो मैं खटक गई और सोचने लगी कि एक साधारण से ट्युशन के लिये इतना षटराग क्यों ? क्या वह मुझे उस आदमी का पता नहीं बता सकती ? मैं स्वयं जाकर उससे मिल लेती ? आखिर इस मिलन के लिये चाइना कार्नर क्यों उचित समझा गया ? मैं इन समस्याओं पर जितना विचार करती मेरी उलझन उतनी ही बढ़ती जाती, मैंने मिस वर्मा के प्रति यह भी सुन रखा था कि वह किसी समय एक आतंक वादी पार्टी की सदस्य भी रह चुकी हैं और फिर उन्होंने जो लिफाफा मुझे दिया था उस पर लाख की मुहरें लगी हुई थी, यदि मैं उस लिफाफे को खोलकर पढ़ना भी चाहती तो असम्भव होता, आप स्वयं विचार कीजिये कि एक सिफारिशी पत्र के लिये इतनी सावधानी क्यों, इतनी व्यवस्था किस कारण ? मगर यह सब सोचने के बाद भी मैं इस चक्कर में फंस ही

गई। एक बार हृदय में यह विचार भी उत्पन्न हुआ कि सम्भव है मेरे सन्देह निर्मूल हों, बुरा हो इस आर्थिक कठिनाइयों का कि मैं सारे भ्रमों और सन्देह को ठुकराती हुई इस मार्ग पर चल निकली ''' और जब इन महाशय ने यह कहकर अपना परिचय दिया कि वह इन्टेलिजेन्स ब्युरो के कर्नल हैं तो मुझे ध्यान आया कि मेरे सन्देह निर्मूल नहीं थे, मैं अवश्य किसी बहुत बड़ी विपत्ति में फंस गई हूँ, मगर आप विश्वास कीजिये कि मुझे अब भी इस बात का पता नहीं है कि मुझ से क्या काम लिया जाने वाला था।

"वह पत्र कहां है ?" हमीद ने पूछा।

"ठहरिये ! देती हूँ—" लड़की ने कहा और जेब टटोलने लगी, फिर खड़ी हो गई, उसके चेहरे पर हवाइयां उड़ने लगीं और वह अधीर होकर बोली—

"मेरा पर्स''''ओह''''कदाचित वह टैक्सी में ही रह गया !"

हमीद उसे घूरने लगा, लेकिन उसके मुख मण्डल पर छल-कपट का एक चिन्ह भी नहीं दिखाई दे रहा था, वह बड़ी भोली-भाली तथा सीधी लड़की प्रतीत हो रही थी।

"वह पत्र मेरे पर्स में था।"

"तुम कहाँ रहती हो ?"

"शर्मा स्ट्रीट में।"

"और मिस वर्मा ?"

"कालेज के होस्टल में। वह वहां की वार्डन भी हैं, ईश्वर के लिये मुझे मेरे घर पहुँचा दीजिये। अब मैं किस प्रकार यह प्रमाणित करूं कि मैं निर्दोष हूँ, वह पत्र भी मेरे पास नहीं रहा।"

"चिन्ता मत करो—" हमीद हाथ हिला कर बोला।

"मेरा क्या बनेगा ?"

"कुछ भी नहीं····चलो ! मैं तुम्हें तुम्हारे घर छोड़ आऊं। लेकिन तुम दो तीन दिन तक घर से बाहर नहीं निकलोगी और न इस घटना का किसी से वर्णन करोगी।"

"बिल्कुल नहीं सर ! आप जैसा कहेंगे वैसा ही करूंगी।"

"तुम्हारा नाम क्या है ?"

"तारा···तारा नाइडो।"

"किस इयर में पढ़ती हो।"

"थर्ड इयर में।"

फिर हमीद उसे साथ लेकर बरामदे में आया, यहाँ रेखा और विनोद मौजूद थे। हमीद ने विनोद को लड़की के बयान से सूचित करते हुये कहा—

मैं इन्हें इनके घर पहुँचाने जा रहा हूँ।"

"जी नहीं आप को कष्ट करने की आवश्यकता नहीं है—" विनोद ने कहा, फिर उस लड़की से पूछा—"क्या तुम्हें मिस वर्मा ने उस आदमी के पहुँचने का समय नहीं बताया था ?"

"बताया था, उन्होंने कहा था कि वह ठीक नौ बजे मिलेगा, मगर मैं पन्द्रह मिनट लेट पहुँची थी।"

"तब फिर तुम बारह बजे तक उसकी प्रतीक्षा क्यों करती रहीं, क्या तुम यह सोच नहीं सकी थी कि वह दस मिनट तक तुम्हारी प्रतीक्षा करने के बाद वापस चला गया होगा ?"

"कदाचित मैं पागल हो गई थी, मैं इतना सोच नहीं सकती थी।"

"तुम झूठ बोल रही हो लड़की।" विनोद ने उत्तेजित हो

कर कहा :

लड़की ने कुछ कहना चाहा, मगर बात के बदले उसके मुख से एक भयंकर चीख निकली और वह दूसरी ओर उलट गई, उसके सीने से रक्त की धार निकल रही थी, विनोद उछल कर खड़ा हो गया और तेजी से फाटक की ओर दौड़ पड़ा ।

वह अवश्य कोई बे आवाज राइफल थी जो फाटक के बाहर से चलाई गई थी, क्योंकि उन लोगों ने फायर की आवाज नहीं सुनी थी ।

हमीद ने झपट कर बराम्दे की बत्ती बुझा दी और फाटक की ओर दौड़ पड़ा । फाटक खुला हुआ था और बाहर सड़क पर सन्नाटा था । हमीद की समझ में नहीं आ रहा था कि उसे क्या करना चाहिये । लगभग दो तीन मिनट तक वह फाटक पर खड़ा रहा, फिर उसे अपनी मूर्खता का ज्ञान हुआ । पता नहीं वह लड़की मर गई या अभी तक जीवित है ।

उसने मुड़ कर बराम्दे की ओर देखा । वहाँ अब भी अन्धकार था ।

वह फिर दौड़ता हुआ बराम्दे में आया ।

"कौन है ?" उसने रेखा का स्वर सुना ।

"मैं हूँ—" हमीद कहता हुआ स्वीच बोर्ड की ओर लपका और दूसरे ही क्षण फिर बराम्दे में प्रकाश हो गया । रेखा लड़की की लाश से थोड़ी ही दूर पर खड़ी थी । हमीद ने पहली ही दृष्टि में अनुमान लगा लिया कि लड़की मर चुकी है । फर्श पर दूर तक रक्त फैला हुआ था ।

"तुम अन्दर जाओ !" हमीद ने कहा ।

"क्यों ?" रेखा चौंक पड़ी ।

"इसलिये कि तुम इस समय यह दूसरी लाश देख रही हो।"

"लेकिन मैं कोई घरेलू नारी नहीं हूँ। मेरा सम्बन्ध उस विभाग से है जहाँ खून और लाश से ही सामना होता रहता है।"

"मेरा मतलब यह है कि तीसरी लाश के लिये कोतवाली फोन कर दो।"

रेखा चुपचाप चली गई।

कुछ देर बाद विनोद भी बरामदे में वापस आ गया। उसके चेहरे पर चिन्ताओं की रेखायें थीं।

"रेखा ने कोतवाली फोन कर दिया है—" हमीद बोला।

"ठीक है—" विनोद ने संक्षिप्त उत्तर दिया और कुर्सी पर बैठ कर कुछ सोचने लगा।

कुछ देर बाद उसने कहा—

"परिस्थित अत्यन्त जटिल हो गई है····रेखा ! तुम इस लाश की तलाशी लो। शायद कुछ हाथ लग जाये।"

लेकिन तलाशी से कुछ भी प्राप्त नहीं हो सका।

"क्या यह समझ लिया जाये कि यह कार्य उसी दूतावास का है ?" विनोद ने रेखा से पूछा।

"उनके अतिरिक्त और किसका हो सकता है—" रेखा ने कहा—"अपनी भूल मालूम हो जाने के बाद उन्हें असली औरत की चिन्ता हुई होगी। मगर क्या वह लोग भी उस औरत को नहीं पहचानते थे जिससे उन्हें कोई सन्देश मिलने वाला था ?"

"यही हो सकता है—" विनोद बोला, फिर हमीद से कहा—"तुम नेशनल गर्ल्स कालेज के होस्टल में किसी मिस वर्मा को

इसी समय तलाश करो। वैसे मुझे कोई आशा नहीं है।"

"फिर मुझे क्यों दौड़ा रहे हैं ?"

"मेरा अनुमान गलत भी तो हो सकता है।

● ● ●

नेशनल कालेज तक पहुँचने में हमीद को किसी कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ा, मगर रात के दो बजे होस्टल के वार्डन तक पहुँचना अवश्य एक कठिन कार्य था····मगर किसी न किसी प्रकार वह वार्डन तक पहुँच ही गया।

वार्डन आधेड़ आयु की औरत थी। उसे इतनी रात गये जगाया जाना बहुत बुरा लगा था। उसने क्रोध भरे स्वर में पूछा था—

"आप कौन हैं और क्या चाहते हैं ?

"क्या जगाने वाले ने आपको नहीं बताया था कि मैं कौन हूँ ?" हमीद ने शिष्टता के साथ पूछा।

"बस इतना ही कहा गया था कि आप एक सरकारी आदमी हैं—"

हमीद ने अपना कार्ड उसकी ओर बढ़ा दिया। वह कार्ड देख कर बोली—

"कहिये मैं आप की क्या सेवा कर सकती हूँ ?"

फिर जैसे ही हमीद ने मिस वर्मा का नाम लिया उसने कहा—

"मिस वर्मा नाम की कोई लेक्चरार इस कालेज में कभी

नहीं रही ।"

हमीद निराश होकर वापस हुआ ।

घर पहुँचते पहुँचते साढ़े तीन बज गये थे । वहां अब सन्नाटा था । हमीद ने खुदा का शुक्र अदा किया । अगर विनोद मौजूद होता तो यह निश्चित था कि कल का सूरज हमीद की खोपड़ी से ही उदय होता । इस अपूर्व अवसर से लाभ उठाने के सिलसिले में कुछ और समय नष्ट किये बिना उसे सूट और जूतों सहित लिहाफ़ में घुस जाना पड़ा ।

वास्तव में उसने यह सोचा था कि कपड़े बदलने और जूते उतारने में समय लगेगा और यदि इसी मध्य विनोद आ गया तो फिर रात भर जागना पड़ेगा इसलिये वह उसी प्रकार बिस्तर पर पड़ गया था ।

यह और बात है कि उसे आठ बजे से पहले ही जगा दिया गया हो । विनोद उसे बुरी प्रकार झंझोड़ रहा था।

"हां ··· हां ····सब ठीक है—" हमीद ने आखें खोले बिना बड़बड़ा कर करवट बदली ।

विनोद ने उसकी गर्दन दबोची और उठा कर फर्श पर खड़ा कर दिया ।

"क्या मुसीबत है—" हमीद गला फाड़ कर दहाड़ा—"अगर आपको आराम से नफरत है तो—"

"शट अप—" विनोद गरजा ।

"नहीं—मैं चुप नहीं रहूंगा—" हमीद ने कहा—"केवल जासूसी ही करने के लिये नहीं पैदा किया गया हूँ ।"

"तुम पैदा ही कब हुये थे—" विनोद ने बुरा सा मुंह बना कर कहा ।

"मैं पैदा हुये ही बिना आप को इतना बड़ा दिखाई हूं—" हमीद ने भनभना कर कहा।

"पैदा होने वाले जिन्दा रहते हैं—"विनोद ने कहा—" और जिन्दगी जाड़े के दिनों में लिहाफ का नहीं बल्कि ठण्डे पानी का नाम है।"

"क्या मतलब ?" हमीद बड़े जोर से चौंका।

"मतलब यह है कि तुम को ठण्डे पानी से नहाना होगा।

"मत बोर कीजिये—" हमीद ने कहा—"वर्ना मैं दीवार से सर टकरा लूंगा।"

"यही कर के दिखाओ-कुछ करो तो—" विनोद ने कहा। वह पूरी तरह गम्भीर था—"मगर ठण्डे पानी से तो नहाना ही पड़ेगा।"

"मगर क्यों ?"

"इसलिये कि तुम कपड़ों और जूतों सहित सो गये थे।"

"अरे तो क्या इन कपड़ों और जूतों ने मुझ पर पेशाब कर दिया है--" हमीद ने कहा—"क्यों नहाऊं ठण्डे पानी से।"

"काहिली की सजा—" विनोद ने कहा।

हमीद ने सोचा कि दिमाग ठण्डा ही रखना चाहिये वर्ना वह सचमुच उसे उठा कर ठण्डे पानी के टब में फेंक आयेगा।

एक बार पहले ऐसा हो चुका था। जाड़े के दिन थे और हमीद इसी प्रकार कपड़ों और जूतों सहित सो गया था। दूसरे दिन सबेरे ही सबेरे उसने हमीद को जगा कर ठण्डे पानी के टब में गोते दिये थे।

विनोद कुछ इसी प्रकार का आदमी था। वह हर दशा और हर स्थिति में हमीद को नियम बद्ध देखना चाहता था और

खुद भी नियम बद्ध रहता था।

हमीद ने सोचा कि विनोद का ध्यान किसी ओर ले चाहिये वर्ना ठण्डे पानी से अवश्य नहाना होगा। उसने ले से कहा—

"ओ हो। मैं तो भूल ही गया था। नेशनल गर्ल्स कालेज में मिस वर्मा नाम की कोई औरत नहीं है। पहले भी कभी नहीं रही।"

"अरे!" विनोद मुस्कुराया—"उतर आये जासूसी पर। अभी तो कह रहे थे कि ···।"

"मैं गलत कह रहा था—" हमीद उसकी बात काट कर बोला "असल में उस समय मैं नींद में था।"

"यह सब ठण्डे पानी का प्रभाव है, नहीं तो····।"

मगर वह अपनी बात पूरी नहीं कर सका, क्योंकि उसके शयन कक्ष में घन्टी बजने लगी थी इसलिये वह चला गया।

हमीद भी नित्य क्रिया से खाली होकर जब अपने कमरे की ओर जाने लगा तो विनोद से फिर सामना हो गया।

"उस लड़की का पता मिल गया?" विनोद ने कहा।

"किस लड़की का? मेरी लिस्ट पर हर समय दो दर्जन लड़कियाँ रहती हैं।"

विनोद क्रोधित होकर कुछ कहने ही वाला था कि फ़िर फोन की घंटी बजी और वह चला गया।

लगभग पाँच मिनट बाद वह फिर वापस आया, और दोनों जल पान की मेज पर पहुँचे। काफी पीते समय विनोद ने कहा—

"वह शर्मा स्ट्रीट में नहीं रहती थी—और यह भी गलत है कि किसी ने उसे धोखा दिया था।"

जो उसी समय प्रमाणित हो गया था जब नेशनल में कोई मिस वर्मा नहीं मिली थी।"

"क्या विचार है, यदि उसे गोली न मारी जाती तो ?"

"प्रकट है कि वह बाद में भी हमारे बन्धन में आ सकती थी—" हमीद बोला—"मैंने तो उसके बयान पर विश्वास कर ही लिया था। मैं उसको उसके बताये हुये पते पर छोड़ भी आता—मगर मिस वर्मा की असलियत प्रकट होते ही···।"

"छोडो—" विनोद बोला—"उसके बाद हम फिर उस तक कभी नहीं पहुँच सकते थे।"

"हो सकता है—" हमीद बोला—"लेकिन उसके बारे में आपने और क्या मालूम किया ?"

"उसकी बडी बहिन राजर्स स्ट्रीट में रहती है। अब यह देखना है कि हमें उससे कौन कौन सी बातें मालूम होती है।"

जलपान करने के बाद दोनों राजर्स स्ट्रीट की ओर चल दिये।

'मैं उस आदमी को कभी नहीं भूल सकूँगा जो पिछली सन्ध्या को मुझे आलेक्चून में मिला था—" हमीद ने कहा।

"तुम उसे किसी प्रकार नहीं बचा सकते थे। वह अवश्य उन लोगों के भेद को जानता था।"

"मगर वह उसे नंगा क्यों कर गये थे ? यह अवश्य एक ऐसा कार्य था जिसमें जरा सी भूल भी उन्हें फांसी के फन्दे तक पहुँचा देती उन्होंने केवल कपड़े उतारने के लिये धूयें का बम फेंका था आखिर कपड़े उतारने का क्या अर्थ हो सकता है ?"

"कपड़े ?" विनोद कुछ सोचता हुआ बोला—"मेरा विचार है कि कपड़ों से अधिक महत्व पूर्ण वस्तु वह तीर है। वह नहीं

चाहते कि सनके तीर पुलिस तक पहुँच सकें। राजदूत की कोठी में भी यही हुआ था। तीर नहीं मिल सका। हालाँकि रेखा ने स्वयं उसे तीर खाकर गिरते देखा था।"

"मगर उसके भी कपड़े उतार लिये गये थे—" हमीद ने इस प्रकार कहा जैसे तीरों से अधिक कपड़ों को महत्व देना चाहता हो।

"मैं नहीं कहता कि कपड़ों को कोई महत्व ही नहीं देना चाहिये—" विनोद बोला—"सम्भव है यह कोई महत्व पूर्ण बात हो···· मगर नहीं हमीद ? कपड़ों का उतारा जाना बहुत ही महत्व पूर्ण बात है। दोनों लाशें फूल कर उस दशा को पहुँच गई थीं कि उनका पहचाना जाना कठिन था। अतः कपड़े उतारने का उद्देश्य यही हो सकता है कि कपड़ों ही द्वारा लाशों की पहचान की सम्भावना शेष न रहे····और हमीद साहब ? मैं एक ऐसे विष को भी जानता हूँ जिससे शिकार की लाश पर सूजन आ जाती है····मगर शरीर के वही अँग फूलते हैं जो नंगे रहते हैं। अगर लाश नंगी हो तो पूरा शरीर फूल जाता है।"

"यह कैसा विष है ?" हमीद ने आश्चर्य से कहा—"मैंने तो आज तक इस प्रकार के विष के बारे में नहीं सुना था।"

"तुमने सुना ही क्या है ?" विनोद मुस्कुरा कर बोला—"मैक्सिको के शुष्क इलाके में एक प्रकार का काँटा दार पौधा होता है। उसका एक काँटा भी यदि शरीर में चुभ जाये तो आदमी एक मिनट के अन्दर मर जाता है। वास्तव में उस काँटे पर एक प्रकार का श्वेत भष्म होता है। वही भष्म ही विषैला होता है। उसी भष्म को लोग एकत्र कर लेते हैं और प्रयोग करते हैं।

विनोद उस विष की कथा कह रहा था और हमीद सोच रहा था कि यह आदमी आखिर किस प्रकार का आदमी है, कितनी योग्यतायें इसमें हैं।

राजर्स स्ट्रीट पहुँच कर विनोद ने एक इमारत के सामने कार रोक दी।

"इसी इमारत के अट्ठारहवें फ्लैट में वह रहती है···" विनोद ने कार से उतरते समय हमीद से कहा।

"मगर इतनी जल्दी यह बात आपको कैसे मालूम हो गई!" हमीद ने पूछा।

"पिछली रात तारा के फोटो लिये गये थे। विचार था कि आज सन्ध्या के समाचार पत्र में उसकी फोटो प्रकाशित की जायेगी, मगर फिंगर प्रिन्ट सेक्शन के एक आदमी ने तारा की लाश को पहचान लिया। उसी से उसके निवास स्थान का भी पता चला। वह उसकी बड़ी बहिन को भी जानता है।

अट्ठारहवें फ्लैल के दरवाजे पर पहुँच कर विनोद ने आवाज दी मगर कोई उत्तर नहीं मिला। तीन चार बार आवाज देने के बाद विनोद ने दरवाजे की हैन्डिल घुमाया, लेकिन दरवाजा अन्दर से बन्द था। उसने निराश होकर हमीद को बराबर वाले फ्लैट के दरवाजे पर आवाज देने को कहा। हमीद के आवाज देते ही दरवाजा खुल गया और एक अधेड़ अवस्था की औरत सामने आकर खड़ी हो गयी।

"कहिये!" उसने आश्चर्य के साथ कहा।

"क्या यहाँ मिसेज गुप्ता रहती हैं?"

"जी नहीं—वह बगल वाले फ्लैट में रहती हैं—" उसने उसी फ्लैट की ओर संकेत किया जिसके दरवाजे पर विनोद कई

बार आवाज दे चुका था ।

"मगर अन्दर से उत्तर नहीं मिलता । हम कई बार आवाज दे चुके हैं । क्या वह देर तक सोती हैं ?" विनोद ने उसके निकट आकर कहा ।

"पता नहीं—" औरत बोली "मिसेज गुप्ता तो अस्पताल में हैं । अन्दर नौकरानी है । सम्भव है वह ऊंचा सुनती हो !"

"अस्पताल में····मगर क्यों ?" हमीद ने पूछा ।

"आप उनके मिलने वालों में से हैं ?"

"जी हाँ ।"

"उनसे मिले हुये कितने दिन हुये ?"

"अभी तो पिछले ही सप्ताह हम लोग लगभग तीन घन्टे तक साथ रहे थे ।"

"अच्छा यह बताइये कि उस पिछले मिलन पर आपको यह सन्देह हुआ था कि यह औरत शीघ्र ही पागल हो जायेगी ?"

"नहीं तो—" हमीद ने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा—"क्यों...क्या बात है ?"

"आज सवेरे चार बजे उसके कुछ सम्बन्धी यहाँ आये थे और उसे ले गये । वह पशुओं के समान चीख रही थी ।"

"सम्भव है कोई और बात रही हो—" विनोद बोला ।

"जी नहीं···उसके सरपरस्त ने यही बताया है कि बहुधा उस पर पागलपन के दौरे पड़ा करते हैं ।"

"वह कब से यहाँ रहती थी ?"

"कदाचित तीन वर्ष से ।"

"क्या इससे पहले भी कभी दौरा पड़ा था ?"

"मैं नहीं जानती....सम्भव है पड़ा हो ।"

"नौकरानी से कैसे बात की जाये···वैसे यह तो आपको मालूम नहीं होगा कि वह किस अस्पताल में ले जाई गई हैं ?"

"जी नहीं—मुझे नहीं मालूम है।"

"उनकी एक बहिन और भी तो हैं···क्या वह भी घर में नहीं होंगी ?"

"कौन···शीला ! अरे···वह तो···" औरत बुरा सा मुंह बनाकर रह गई।

"क्यों ! उन्हें क्या हुआ ?" विनोद ने पूछा।

"एक आवारा औरत के कारण दोनों बहिनों में झगड़ा हो गया था। परमिला अर्थात् मिसेज गुप्ता का कहना था कि शीला उससे सम्बन्ध तोड़ ले, मगर शीला इस पर किसी प्रकार तैयार नहीं हुई और दोनों में झगड़ा हो गया। शीला अब उसी औरत के साथ रहती है।"

"ओह···कदाचित इसी दुर्घटना ने परमिला देवी को पागल बना दिया है—" हमीद ने कहा।

"सम्भव है—वैसे परमिला देवी बहुत ही सभ्य औरत हैं।"

"फिर क्या किया जाये ?" विनोद ने हमीद की ओर देख कर कहा—"मैं तो सोचता हूँ कि शीला को ही सीधे मार्ग पर लाने की चेष्टा की जाये।"

"हाँ—यही उचित होगा—" हमीद ने कहा।

"लेकिन यह कैसे मालूम हो कि वह आवारा औरत कहाँ रहती है ?" विनोद ने हमीद ही से पूछा।

"मैं आपको बताऊंगी—" वह औरत बोली—"मैंने निजी तौर पर पता लगाया था। वास्तव में वह बड़ी खराब औरत है। उसकी सूरत शकल देखने के बाद किसी को यह सन्देह भी

नहीं हो सकता कि वह आवारा होगी।"

"वह कहाँ रहती है?"

"शर्मा स्ट्रीट में। तारा नाइडो उसका नाम है।"

हमीद चौंक पड़ा, क्योंकि पिछली रात राइफल का निशाना बन जाने वाली औरत ने भी अपना नाम और पता यही बताया था।

"शर्मा स्ट्रीट में—" विनोद उस औरत की ओर देखता हुआ बोला—"मगर शर्मा स्ट्रीट में तो न जाने कितनी इमारतें हैं। हम उसे कहाँ खोजते फिरेंगे?"

"देखिए! वहाँ कैफे ग्रीन लाइट है। ठीक उसी के सामने वाली इमारत के किसी फ्लैट में रहती है।"

"ओह···ठीक है। अब हम पहुँच जायेंगे। आपको बड़ा कष्ट हुआ, क्षमा कीजियेगा।"

"कोई बात नहीं—" उस औरत ने दुस्कुरा कर कहा और अन्दर चली गई।

● ● ●

विनोद और हमीद नीचे आये। हमीद ने उससे कहा—

"मगर नौकरानी से हम लोग बात नहीं कर सके।"

"कोई आवश्यकता नहीं—समय नष्ट करना होता, लाभ कुछ भी नहीं होता।"

विनोद की लिफ्ट जब सड़क पर आई तो हमीद ने विनोद

की ओर देखा। उसे उसके मुख मण्डल पर किसी प्रकार का कोई भाव नहीं दिखाई पड़ा। हमीद इस परिवर्तन का कारण समझ नहीं सका।

"क्या वह औरत वास्तव में पागल हो गई होगी?" हमीद ने पूछा।

"इसका उत्तर भी तुम्हीं को देना होगा—" विनोद ने कहा।

"मेरा विचार है कि नहीं।"

"कारण?"

"उन लोगों ने उसे भी अपने मार्ग से हटा दिया है। जो लोग कर्नल विनोद कुमार फ्राम इन्टेलिजेन्स ब्युरो को छत के नीचे कत्ल कर सकते हैं उन्हें किसी औरत को अपना सम्बन्धी बनाकर निकाल ले जाना कोई कठिन कार्य नहीं है।"

"बहुत आगे बढ़ चुके हो!" विनोद ने प्रशंसात्मक स्वर में कहा।

"यह सब आपकी संगत का प्रभाव है—" हमीद ने कहा—"अब देखना यह है कि तारा नाइडो पर क्या पड़ता है?"

"जो कुछ भी पड़ना है अब तक पड़ चुका होगा—या फिर वह बिल्कुल सुरक्षित होगी।"

"क्यों! यह एक दूसरे के विपरीत दो बातें क्यों?"

"अगर वह उन्हीं में से होगी या उसका उन लोगों से कोई सम्बन्ध होगा तो सुरक्षित होगी—और अगर पिछली रात गोली खाने वाली लड़कियों में से होगी तो वह भी परलोक सिधार गई होगी।"

"कुछ हो या न हो, खुदा करे जवान हो, हसीन हो—"

हमीद बोला ।

"आ गये अपनी अवकात पर ना !"

"हर आदमी को अपनी अवकात पर रहना चाहिये कर्नल साहब !"

इतनी देर में कार शर्मा स्ट्रीट में दाखिल होकर दूसरी सड़क पर निकल आई थी ।

"अरे ! यह आप कहाँ जा रहे हैं ?" हमीद चौंककर बोला ।

"मैं इस समय सड़कें नापना चाहता हूँ ।"

"तो फिर जी० टी० सबसे लम्बी सड़क है··· वैसे तारा नाइडो के प्रति क्या विचार है ?"

" अच्छा है, मगर इस समय मुझे केवल उस औरत की चिन्ता है जो पागल हो गई है ।"

"क्यों ?"

"इसलिए कि वह अवश्य बूढ़ी होगी, और संसार का कोई भी हमीद उसके लिए परेशानी उठाने को तैयार नहीं होगा ।"

"लेकिन उसे इस प्रकार ले जाने का अर्थ तो यही हो सकता है-कि वह भी उन लोगों के किसी रहस्य को जानती रही होगी फिर उसे जीवित ही क्यों रखा गया होगा ।"

"ठीक कहते हो—मगर यह तो आवश्यक नहीं है कि हम जो सोच रहे हैं, वही उन्होंने सोचा होगा ।"

"मगर आप उसे कहाँ तलाश करेंगे ?"

"इस प्रश्न से पहले तुम्हें यह सोचना चाहिये था कि सैकड़ों बार ऐसे अवसर आये हैं, और इसी प्रकार की अर्थहीन भाग दौड़ ने हमें सीधे मार्ग पर लगा दिया है । हम अपने ध्येय में सफल हुये हैं—

क्यों ! क्या मैंने झूठ कहा ?''

हमीद कुछ नहीं बोला, क्यों कि वह एक ऐसा सत्य था जिसका प्रति उत्तर ही नहीं था ।

विनोद भी मौन रहा । दोनों अपने अपने स्थान पर कुछ सोच रहे थे ।

अंत में लिफ्ट एक जगह रुक गई और हमीद ने खिड़की से सर निकाल कर चाइना कार्नर का बोर्ड पढ़ा मगर उसकी समझ में न आ सका कि आखिर विनोद यहां से किस प्रकार जानकारी प्राप्त करेगा । अधिक से अधिक वह यहां फिंच के प्रति यह मालूम कर सकता था कि वह प्रति दिन के ग्राहकों में से है या कभी कभी आता है । प्रकट है कि फिंच जैसे लोग अपने बारे में दूसरों को अनभिज्ञ ही रखते हैं ।

बहर हाल वह विनोद के साथ ही कार से उतर गया और फिर दोनों चाइना कार्नर में दाखिल हुये ।

इस समय कार्नर में भीड़ भाड़ नहीं थी बस इक्का दुक्का आदमी नजर आ रहे थे ।

''क्या काफी पीने का इरादा है ?'' हमीद ने धीरे से पूछा ।

''अगर अवसर मिला तो पी लेंगे—'' विनोद ने कहा और काउन्टर की ओर बढ़ने लगा ।

हमीद उसके पीछे पीछे चल रहा था, उसके चेहरे पर पूरी तरह झल्लाहट के लक्षण छाये हुये थे ।

काउन्टर के निकट पहुँच कर विनोद ने चारों ओर उचटती सी नजर डाली फिर काउन्टर के पीछे खड़े हुये आदमी की ओर मुड़ा जो कदाचित उनके आर्डर की प्रतीक्षा कर रहा था ।

''मिस्टर फिंच नहीं आये ?'' विनोद ने उसकी आखों में

देखते हुये पूछा। वह आदमी कदाचित वार मैन था।

"कौन फिंच ? मैं किसी फिंच को नहीं जानता।"

"अरे वही नाटे कद का आदमी····बन्दर की सी सूरत वाला—" विनोद ने मुस्कुराकर धीरे से कहा।

"ओह····अब समझा····जी नहीं। वह रात ही को आते हैं—" वार मैन ने भी मुस्कुरा कर कहा, फिर धीरे से बोला—"फिन्च के अतिरिक्त भी यहाँ कुछ लोग और हैं। जिनके पास ऐसे ऐसे तगड़े माल हैं कि फिंच के बाप ने भी नहीं देखे होंगे।"

"अच्छा—" विनोद काउन्टर पर झुक कर बोल—"फिन्च की लड़कियाँ तो कालर में गुलाब लगाती हैं ?"

इसके उत्तर में उसने इतनी अश्लील बात कही कि यदि वह हास्यप्रद न होता तो हमीद थप्पड़ मार देता।

फिर उसने कहा—"वह सदैव रात में एक ही लड़की सप्लाई करता है, लेकिन पिछली रात यहाँ दो थीं, एक को तो वह अपने साथ ले गया और दूसरी को आप ले गये।"

"तुम्हारी स्मरण शक्ति बड़ी जोरदार है—" विनोद अपनी एक आँख दबा कर बोला—"वैसे क्या प्रतिदिन उसकी लड़कियाँ आती हैं यहाँ ?"

"जी नहीं···कभी कभी, मगर वह नित्य प्रति आता है।"

"शायद मिस्टर फूही से मित्रता होगी ?"

"मिस्टर फूही····हाँ, यही समझ लीजिये।"

"फूही से इस समय कहाँ भेंट होगी ?"

"यह बताना बड़ा ही दुष्कर है, क्योंकि उनके पैरों में चक्कर है, वह एक स्थान पर तो रुकना ही नहीं जानते। सम्भव है वह अपने कमरे में हों और यह भी सम्भव है कि शहर के किसी

मदिरालय में हों।"

"बड़ा मजेदार आदमी है फूही भी—" विनोद ने हमीद की ओर मुड़कर कहा—"उसके पास भी बड़ी अच्छी लड़कियाँ हैं।"

"आप किससे कम हैं सरकार!" हमीद मुस्कुरा कर बोला।

"ओह····हाँ···अच्छा चलो—" विनोद ने कहा, फिर उस आदमी से पूछा—"फूही किस नम्बर के कमरे में रहता है?"

"ऊपरी श्रेणी के कमरा नम्बर ११ में।"

विनोद हमीद को लेकर सीढ़ी की ओर बढ़ा।

११ नम्बर के कमरे का दरवाजा खुला था। विनोद सीधा कमरे में घुस गया, हमीद भी उसके पीछे ही पीछे था, कमरे में एक मोटा ताजा चीनी बैठा था, जो इन लोगों को इस प्रकार घुसते देख कर कुर्सी से उठ गया था।

"आप कौन हैं?" वह अंग्रेजी में बोला।

"तुम मुझे अच्छी तरह पहचानते हो—" विनोद ने कहा।

"मैं नहीं पहचानता।"

विनोद ने अपना विजिटिंग कार्ड उसकी ओर बढ़ा दिया, उसने कार्ड को देखा और उसकी भृगुटियाँ तन गईं।

"क्या मैंने कोई अपराध किया है?" वह उसी प्रकार गरजा—"आप बिना आज्ञा जो इस प्रकार मेरे कमरे में चले आये हैं, यह कहाँ की मनुष्यता है।"

"मुझे फिंच का पता चाहिये।"

"मैं किसी फिंच को नहीं जानता, आप अकारण ही मुझे परेशान नहीं कर सकते।"

"तुम फिंच को जानते हो इसलिये अवश्य परेशान किये जाओगे।"

"बड़ी विपत्ति है—" वह सर हिला कर बोला—"अगर मैं कोई गैर कानूनी कार्य करता होता तो रिश्वत भी दे सकता था।"

"अच्छा! तो मैं तुम से रिश्वत वसूल करने आया हूँ।" विनोद मुस्कुरा कर बोला।

"अगर आज्ञा दीजिये तो मैं इससे रिश्वत वसूल कर लूँ—" हमीद बोला।

"ठहरो।" विनोद ने धीरे से कहा, फिर फूही से बोला—"मैं इस कमरे की तलाशी लेना चाहता हूँ।"

"जी नहीं···क्या आपके पास वारन्ट तलाशी है?"

"मैं खुद ही वारन्ट हूँ।"

"तब आप तलाशी नहीं ले सकते।"

"हम तो तुम्हें फाँसी भी दे सकते हैं—" हमीद आँखें निकाल कर बोला।

"तो फिर प्रयत्न कीजिये—" फूही ने भी उसी टोन में कहा।

"हमीद! तुम्हें यहाँ से कोकीन बरामद करनी है—" विनोद शुष्क स्वर में बोला।

हमीद आल्मारियों की ओर बढ़ा, साथ ही फूही भी बढ़ा, मगर विनोद के हाथ में पिस्तौल देखकर रुक गया।

हमीद ने बड़ी तेजी से कमरे की वस्तुएँ उलटनी पलटनी आरम्भ कर दी।

"तुम हद से ज्यादा बढ़ रहे हो कर्नल विनोद। मैं कोई साधारण आदमी नहीं हूँ—" फूही ने तीव्र स्वर में कहा।

"तुम सभ्य और प्रतिष्ठ आदमी हो, मगर मैं तुम्हें जूते से

नहीं मारूँगा, समझे—" विनोद ने लापरवाही से कहा।

पन्द्रह मिनट तक हमीद परेशान रहा, मगर कोई परिणाम नहीं निकला। थक हार कर उसने विनोद से कहा—

"कोई दूसरा चार्ज लगाइये।"

"चिन्ता मत करो, मेरे जेब में हथकड़ियाँ हैं निकाल कर फूही के हाथों में लगा दो।"

"मजाक नहीं है इस प्रकार हथकड़ियाँ लगा देना""क्या तुम्हारा राज है—" फूही चीखा।

"हाँ—इस शहर पर हमारा ही राज है। हमीद जल्दी करो।"

हमीद ने विनोद की जेब से हथकड़ियाँ निकाली और फूही की ओर बढ़ा।

"अच्छी बात है। लगा दो हथकड़ियाँ, लेकिन इसे लिख लो कि यह तुम दोनों की मान मर्यादा का अन्तिम दिन है।"

"हमारी मान मर्यादा तो चौबीस घन्टे खतरे में रहती है, मगर तुम्हें इसकी चिन्ता क्यों है?"

इतनी देर में हमीद फूही के हथकड़ियाँ लगा चुका था।

कुछ क्षण तक विनोद और फूही एक दूसरे को घूरते रहे, फिर विनोद मुस्कुरा कर बोला—

"अब भी अच्छा है फिंच का पता बता दो, नहीं तो बड़ी विपत्ति में फँस जाओगे, यदि मैंने कोकीन बरामद की तो फिर किसी दशा में नहीं छोड़ूँगा।"

"मैं किसी फिंच को नहीं जानता, जो दिल चाहे करो।"

"अच्छी बात है—" विनोद ने कहा और आगे बढ़ कर सामने वाली दीवार के पास जाकर रुक गया, वह दीवार से

लगी हुई एक बड़े फ्रेम वाली तस्वीर को देखने लगा।

फिर उसने एक मेज को घसीट कर दीवार से लगाया और मेज पर चढ़ गया, फिर जैसे ही उसने फ्रेम पर हाथ रखा वैसे ही फूही चिल्ला उठा—

"ठहरो कर्नल ! मैं बता दूँगा।"

"अब बात आगे बढ़ चुकी है फूही—" विनोद ने उसकी ओर देखे बिना कहा और अपना कार्य आरम्भ कर दिया, वह फ्रेम किसी आलमारी के ढक्कन के समान खुल गया।

"बात आगे न बढ़े तो अच्छा है मैं वादा करता हूँ कि सब कुछ बता दूँगा कर्नल !"

"बात तो इतनी आगे बढ़ चुकी है फूही कि अब पीछे नहीं आ सकती···और अब मैं तुम से कुछ पूछना भी नहीं चाहता।"

"मैं मुँह माँगी रकम दे सकता हूँ—" फूही धीरे से बोला।

"अगर इस फ्रेम पर दृष्टि पड़ने से पहले तुमने क्षमा माँग ली होती तो मैं तुम्हें क्षमा कर देता।"

"मैं फिंच का पता बता सकता हूँ, मैं उसके बारे में बहुत कुछ जानता हूँ।"

"और उसके बाद फिंच को भी सूचित कर सकते हो कि तुमने उसका पता हमें बता दिया है।"

"नहीं—मेरा सम्बन्ध लड़कियों के व्यापार से नहीं है, बस वह मेरा मित्र है, मैं जानता था कि वह किसी न किसी दिन अवश्य विपत्ति में फँस जायेगा।"

"हथकड़ियाँ निकाल दो—" विनोद ने हमीद से कहा।

हमीद ने हथकड़ियाँ खोल दीं और विनोद ने पिस्तौल जेब

में रख लिया।

"बैठ जाओ—" विनोद ने फूही से कहा।

फूही कुर्सी में ढेर होकर हाँफने लगा। उसके मुख मण्डल पर कुछ इसी प्रकार के लक्षण थे जैसे वह काल के गाल से निकल आया हो। अब वह विनोद की ओर देख भी नहीं रहा था।

"मेरी ओर देखो—" विनोद ने कहा।

फूही ने सर उठा कर उसकी ओर देखा।

"फिंच लड़कियों का व्यापार करता है?" विनोद ने पूछा।

फूही केवल सर हिला कर रह गया। वह अपना निचला होंठ दाँतों में दबाये हुये था। कदाचित इस प्रकार वह अपनी चढ़ती हुई साँसों पर अधिकार प्राप्त करने की कोशिश कर रहा था।

"मुख से बोलो—" विनोद ने कहा।

"हाँ, वह लड़कियों का व्यापार करता है।"

"तुम्हें उसका पता मालूम है?"

"हाँ!"

"उसने अपना पता तुम्हें खुद बताया था?"

"नहीं—मैंने निजी तौर पर मालूम किया था।"

"क्या पता है?"

"नम्बर १३ पैरामाउन्ट लेन।"

विनोद ने हमीद को पता नोट करने का संकेत करके फूही से पूछा—"क्या तुम्हें इसका विश्वास है कि वह लड़कियों का व्यापार करता है?"

"जी हाँ !" मुझे विश्वास है, किन्तु उनकी प्रणाली बड़ी विचित्र है, इसी आधार पर मुझे सोचना पड़ा है कि इस व्यापार के पीछे कोई दूसरा है और फिंच की हैसियत एक एजेन्ट से अधिक नहीं ।"

"क्यों ! यह तुम कैसे कह सकते हो ?"

"क्योंकि वह लड़कियाँ उसके लिये अपरिचित होती हैं, यदि वह अपने कालरों में लाल गुलाब न लगायें तो कदाचित फिंच उन्हें पहचान भी न सके, हर बार एक नई लड़की दिखाई पड़ती है। मैंने किसी लड़की को दूसरी बार नहीं देखा, फिंच उन्हें यहाँ से कहीं ले जाता है, मगर गत रात्रि मुझे सूचना मिली थी कि कल दो लड़कियाँ आई थीं, आगे पीछे'''और वह बिल्कुल नई बात थी, पहले कभी ऐसा नहीं हुआ था ।"

"तो प्रतिदिन एक नई लड़की यहाँ आती है ?" विनोद ने पूछा ।

"नहीं—कभी कभी'''न फिंच ही यहाँ प्रतिदिन आता है और न लड़कियाँ ही ।"

"अच्छी बात है—" विनोद उठता हुआ बोला—"मगर तुम्हारा मुख बन्द रहना चाहिये ।"

"मैं इतना बड़ा व्यापार छोड़कर इस शहर से भाग नहीं सकता कर्नल ।"

"समझदार आदमी हो—" विनोद मुस्कुराता हुआ निकल गया ।

बाहर निकलने के बाद हमीद ने पूछा—

"उस फ्रेम के पीछे क्या था ?"

"वह फ्रेम नहीं बल्कि एक अलमारी का दरवाजा था—"

विनोद ने मुस्कुरा कर कहा।

"अरे!" हमीद ने विस्मय के साथ कहा फिर पूछा—"मगर आपको सन्देह कैसे हुआ था?"

"मैं आँखें खुली रखता हूँ और मेरा दिमाग जागता रहता है—" विनोद ने कहा।

"यह बात तो मैं आपकी जबान से हजारों बार सुन चुका हूँ—" हमीद ने मुँह बना कर कहा—"मैं सन्देह का कारण जानना चाहता हूँ।"

"तस्वीरी फ्रेम इस प्रकार नहीं लगाये जाते कि वह दीवार से चिपके रहें—" विनोद ने कहा—"तस्वीरी फ्रेम इस प्रकार लगाये जाते हैं कि उसका ऊपरी भाग दीवार से काफी फासले पर होता है मगर वह फ्रेम दीवार से बिल्कुल ही चिपका हुआ था—बस इसी आधार पर मुझे सन्देह हुआ था।"

"तो इतनी छोटी छोटी बातों पर आपकी नजर रहती है।"

"बड़ी बड़ी बातों पर तो सब ही की नजर पड़ जाती है—" विनोद ने कहा।

"अब आपको अपने ही मुख से अपनी तारीफ करने की आदत पड़ती जा रही है—" हमीद ने व्यंग भरे स्वर में कहा—

"तुम उल्लू हो—" विनोद ने कहा—"चलो बैठो।"

दोनों कार में बैठ गये।

———

कार फिर स्टार्ट हो गई और हमीद आँखें बन्द करके कुछ सोचने लगा, पिछली रात वाली दोनों लाशें जो उसने अपनी आँखों से देखी थी जो उसे व्याकुल बनाये हुये थी, शीला जिसे विनोद अपने साथ अपनी कोठी में लाया था भयभीत थी, सम्भव है उसे उन्हीं लोगों का भय रहा हो जिन्होंने विनोद के बरामदे में उसे राइफल का निशाना बना दिया था। कदाचित वह पकड़े जाने पर जासूसों से पीछा छुड़ाकर इस शहर ही से निकल भागना चाहती थी, इसी लिये उसने अपना नाम तारा वाइडो बताया था और यह भी बता दिया था कि वह शर्मा स्ट्रीट में रहती है। ध्येय यही रहा होगा कि वह इस प्रकार उस औरत को पुलिस के चक्कर में फँसा देगी जिसके कारण उसे उस विपत्ति में फँसना पड़ा था। मगर वह अपने ध्येय में सफल नहीं हो सकी।

फिर वह उस आदमी के बारे में सोचने लगा जिसने अपने जीवन रक्षा के लिये उससे विनती की थी, मगर हमीद समझा था कि वह उसे किसी चक्कर में फँसाना चाहता है....और फिर हमीद को अपने सन्देह पर लज्जित होना पड़ा, क्योंकि वह बेचारा उसकी आँखों के सामने ही तीर खाकर गिरा और मर गया।

उधर विनोद लाल गुलाब के पीछे दौड़ रहा था। प्रकट में दोनों मामले अलग अलग थे, लेकिन जहरीले तीर का जादू हर जगह था, और अब उन्हें इस बात का निर्णय करना था कि वह दोनों मामले वास्तव में अलग अलग थे या फिर एक ही थे।

"क्या अब फिंच तक पहुँचने का इरादा है ?" हमीद ने पूछा ।

"हाँ मगर आशा कम ही है । उसे विदेशी राजदूत की ओर से सावधान कर दिया गया होगा ।"

"लेकिन यदि हम १३ पैरामाउन्ट लेन को देख ही लें तो हर्ज क्या है ।"

"अवश्य··· मैं जानता हूँ कि आजकल पैरामाउन्ट लेन की एक लड़की से तुम्हारा रोमान्स चल रहा है, और तुम उसके बहुत ही समीप पहुँच चुके हो ।"

"नहीं····यह गलत है—" हमीद आश्चर्य के साथ बोला ।

"मैं यह भी बता सकता हूँ कि उसने अपना नाम तुम्हें लाली बताया था । वह कहती है कि उसका कोई धर्म नहीं । वह नारी पुरुष के मध्य हर सम्बन्ध को उचित समझती है ।"

"तो आप मेरी टोह में रहा करते हैं—" हमीद मुँह बना कर बोला ।

"जी नहीं····आपकी बातें अपने पैरों चलकर मेरे पास तक आ जाती है ।

"आपकी बातों से तो पता चलता है कि उसका नाम लाली नहीं है ?"

"मैं यह सब नहीं जानता ।"

विनोद ने जो कुछ कहा था वह सच था इसलिये हमीद इस विचार से चुप हो गया कि जब विनोद इतना जानता है तो फिर लाली के बारे में और भी बहुत कुछ जानता होगा—फिर अपनी मदद कराने से क्या लाभ—वैसे लाली के बारे में विनोद को मालूम हो जाना तो कोई ऐसी आश्चर्य जनक बात नहीं थी

हमीद को तो इस बात पर आश्चर्य हो रहा था कि आखिर विनोद को वह बातें कैसे मालूम हुई जो उसके और लाली के मध्य हुई थी।

लाली उसे एक साधारण से होटल में मिली थी। हमीद का विचार था कि उसकी मुखता पूर्ण हरकतों ने लाली को उसकी ओर आकृष्ट किया था।

वह रविवार की सन्ध्या थी और हमीद इस प्रकार बाहर चकराता फिर रहा था जैसे पतझड़ का मारा हुआ कोई पत्ता शुष्क और उन्माद रहित हवाओं के झक्कड़ में जा पड़े। पतझड़ के मारे हुये पत्ते की उपमा इसलिये उचित प्रतीत होती है कि हमीद आजकल अपने ही शब्दों में खुद को "बंजर" महसूस कर रहा था और वह उसी स्थिति में अपने आपको बंजर महसूस करता था जब सन्ध्या व्यतीत करने के लिये उसे कोई नई लड़की नहीं मिलती थी। पुरानी जान पहचान की लड़कियाँ उसे हमेशा बोर मालूम होती थीं—अगर वह कभी कहीं नजर भी आ जातीं तो वह कतरा कर निकल जाना ही उत्तम समझता था।

हाँ—तो उस सन्ध्या को हमीद उदास था—उदास इसलिये था कि कोई नई लड़की नहीं मिली थी—और उदासी में पैदल टहलना उसकी पुरानी आदतों में से था। जब टहलते टहलते थक गया तो पास ही के एक कैफे में जा घुसा। वहाँ से भी उक्ता कर निकलने ही वाला था कि एक लड़की अन्दर दाखिल होती हुई नजर आई—लड़की बस ऐसी ही थी कि हमीद ने उसे अपनी ओर आकृष्ट करने का प्रयास आरम्भ कर दिया।

हमीद किसी को अपनी ओर आकृष्ट करना चाहे और वह न हो—यह तो सम्भव ही नहीं था। उसने शीघ्र ही अपनी

असाधारण गतिविधि से लड़की को अपनी ओर आकृष्ट कर लिया।

लड़की भी अपनी मेज पर अकेली ही थी और लगातार हमीद को देखे जा रही थी। हमीद ने एक वेटर को बुलाकर उससे एक पैकेट सिगरेट लाने को कहा और पर्स से कुछ इस भाव में एक नोट निकाला कि दो नोट उसकी बनावटी अनभिज्ञता में फर्श पर गिर पड़े। उसने यह हरकत कुछ इस प्रकार की थी कि वेटर की नजर नहीं पड़ सकी वर्ना वह खुद ही उसे बता देता।

वेटर सिगरेट लेने चला गया और हमीद ने पर्स जेब में डाल लिया। उस लड़की ने नोटों को फर्श पर गिरते हुये देख लिया था। वह कुछ देर तक तो मौन बैठी रही फिर हमीद को सम्बोधित करके बोली—

"आपके नोट गिर गये हैं मिस्टर।"

"जी—" हमीद चौंक पड़ा।

लड़की ने फर्श की ओर संकेत किया और हमीद कुछ इस प्रकार बौखलाये हुये भाव में नीचे झुका जैसे पैरों के पास साँप बैठा हो।

लड़की मुस्कुराने लगी और हमीद खड़ा होकर बोला—

"यहाँ किसी महाशय के नोट गिर गये हैं।"

लड़की को हँसी आ गई। यहाँ उनके अतिरिक्त दो आदमी और थे, वह अपनी जेबें टटोलने लगे, मगर लड़की ने कहा—

"वह नोट आप ही के हैं।"

"मेरे!" हमीद ने आश्चर्य प्रकट करते हुये कहा—"नहीं तो।"

"मैंने आपके पर्स से गिरते देखा था।"

"क्या आप मुझे गधा समझती हैं? क्या मैं बच्चा हूँ कि नोट गिरा दूँगा?"

लड़की अपनी मेज से उठकर उसके पास आकर बैठ गई।

हमीद ने अब तक नोट नहीं उठाये थे।

"नोट उठा लीजिये!" लड़की ने धीरे से कहा।

"आप ही उठा लीजिये! मैं क्यों किसी विपत्ति में पड़ने जाऊँ।"

लड़की ने झुक कर दोनों नोट उठा लिये, नोट दस दस के थे। फिर उसने अपने वैनिटी वैग से एक नोट बुक निकालते हुये कहा—

"हमारे कालेज में एक ड्रामा होने वाला है इन नोटों के बदले में आपको दो टिकट दे रही हूँ।"

"मैंने एक बार आपसे कह दिया कि नोट मेरे नहीं हैं, फिर आप क्यों किसी दूसरे की विपत्ति मेरे सर डालना चाह रही हैं—" हमीद कुछ गर्म होकर बोला—

"आप इसकी चिन्ता मत कीजिये—" लड़की मुस्कुराती हुई बोली–"विपत्ति आयेगी तो मेरे सर क्योंकि नोट मैंने उठाये हैं.... यह लीजिये टिकिट! ड्रामा कल नौ बजे रात को होगा अपनी श्रीमती के साथ अवश्य, अवश्य पधारियेगा, एक टिकिट पर दो बच्चे एलाऊ हैं, अर्थात् आप अपने साथ चार बच्चे भी ला सकते हैं। यदि चार से अधिक हों तब भी आप किसी बात का संकोच न कीजियेगा, मैं दस रुपये वाले क्लास के गेट पर आपको मिलूंगी।"

"आप तो बेकार ही.... ।"

"कल ठीक नौ बजे, मार्डन कालेज में—मैं आपकी प्रतीक्षा करूँगी—" लड़की अपना बैग उठाकर खड़ी हो गई।

"देखिये। नोट के समान कल आना भी न भूल जाइयेगा!" उसने चलते चलते एक बार फिर मुस्कुरा कर कहा।

फिर हमीद दूसरी रात मार्डन कालेज पहुँच गया। लाली से वहाँ भी भेंट हुई और दो ही तीन घन्टे में वह हमीद से बहुत ही अधिक घुल मिल गई···और फिर वह नित्य ही शहर के किसी तफ़रीह गाह में मिलते रहे। हमीद के मतानुसार लाली उसे बुद्धू समझ रही थी। हमीद ने अपने आपको इसी रूप में प्रस्तुत ही किया था। यही कारण था कि उसका मन आज कल काम करने में नहीं लग रहा था।

विनोद ने एक जगह कार रोक दी और हमीद को बैठे रहने का संकेत करके नीचे उतर गया। सामने ही एक पब्लिक बूथ था। उसने वहाँ जाकर कुछ फ़ोन किये और फिर वापस आ गया।

"तुम घबड़ाओ नहीं—" उसने इन्जिन स्टार्ट करते हुये कहा—"अब हम पैरामाउन्ट ही की ओर जायेंगे।"

"मुझे तो आप घबड़ाने ही दीजिये, क्योंकि घबड़ाहट में हृदय की गति तीव्र हो जाती है और रक्त साफ हो जाता है।"

विनोद कुछ नहीं बोला। कार चल पड़ी और हमीद बड़-बड़ाता रहा।

"मेरा दिल चाहता है कि अब बाप बनने की इच्छा छोड़ कर माँ बनने का प्रयत्न करूँ। इस तरह कुछ दिनों तक तो आराम करने का अवसर मिलेगा। वैसे छुट्टियाँ भी नष्ट हो जाती हैं। पिछली बार छुट्टी ली थी तो आपने केस में मुझे फँसा

दिया।"

"तो क्या बुरा किया! उस केस में माला तुम्हारी दिलचस्पी की सामग्री थी और इस केस में लाली के साथ लाल गुलाबों और तीरों की भी समस्या सामने है।"

"मैं कहता हूँ कि आखिर आप हर मामले में क्यों कूद पड़ते हैं?"

"सुनो बेटे। यह कहानी आज की नहीं है। गुलाबों की समस्या बहुत दिनों से उलझन में डाले हुये है। जिन मामलों के प्रति मुझे विश्वास हो जाता है कि बिना हाथ लगाये काम नहीं चलेगा उनके लिये कुछ न कुछ करना ही पड़ता है और बाद में तो सब कुछ अपने ही सर आ पड़ता है, सारांश यह है कि मैं बहुत दिनों से उन गुलाबों की चिन्ता में था, मगर यह तीर बिल्कुल नवीन वस्तु है और यह भी संयोग ही है कि एक ही रात में हम दोनों को अलग अलग तीरों के केस का सामना करना पड़ा।"

"आपको सामना करना पड़ा होगा—" हमीद ने कहा—"मेरे लिये तो वह एक तमाशा था—मैं तो वहाँ से भाग निकला होता मगर एक कानेस्टेबिल ने मुझे पहचान लिया था। वह मेरा नाम अवश्य बताता इसलिये विवश होकर अपना बयान देने के लिये मुझे रुकना पड़ा—।"

कार एक झटके के साथ रुक गई और हमीद का सर डेश बोर्ड से टकराते टकराते बचा। दाहिने वाले मोड़ से अचानक एक कार सामने आ गई थी, दोनों ही एक दूसरे से केवल एक फिट पर रुकी थी।

दूसरी कार एक औरत ड्राइव कर रही थी, हमीद हाथ

हिला कर बोला—

"दो आदमी एक साथ ही मरते श्रीमती जी, आप अकेली मरती तो मुझे कोई दुख नहीं होता।"

औरत ने कुछ कहने के लिये अधर खोले ही थे कि विनोद अपनी कार आगे निकाल ले गया।

"यह औरतें कार चलाना खूब जानती हैं—" हमीद बड़बड़ाया—"लेकिन मैंने आज तक किसी औरत को टांगा हांकते नहीं देखा।"

विनोद कुछ नहीं बोला। हमीद की भाषा में कदाचित उसे इस समय सोचने का दौरा पड़ा हुआ था।

थोड़ी देर बाद वह पैरामाउन्ट लेन में पहुँच गये, इमारत नम्बर १३ के सामने विनोद ने कार रोक दी।

इमारत काफी बड़ी थी, यहाँ पहुँच कर उन्हें इस बात का पता चला कि इस इमारत में फिंच को खोज निकालना सरल नहीं होगा, क्योंकि इस इमारत में लगभग पचीस या तीस फ्लैट थे।

वह दोनों कार से उतरे और विनोद उस बड़े फाटक की ओर बढ़ा जिसके भीतर वाले गलियारे से दोनों ओर ऊपरी श्रेणी पर जाने वाली सीढ़ियाँ थीं। फाटक पर एक मोटे और भद्दे शरीर वाला सन्तरी मौजूद था।

"क्यों? वह बूढ़ा बन्दर किस श्रेणी पर रहता है?" विनोद ने पूछा।

"बूढ़ा बन्दर!" चौकीदार ने आश्चर्य से दुहराया, फिर हँसने लगा। उसके बाद बोला—"कदाचित आप फिंच साहब को पूछ रहे हैं?"

"हाँ हाँ—फिच ही को।"

"पाँचवें खन्ड के तीसरे फ्लैट में।"

विनोद आगे बढ़ गया···फिर जब वह सीढ़ियों पर चढ़ रहे थे तो हमीद बोला—

"पाँचवें खन्ड पर·····बाप रे बाप ! सांस फूल जायेगी··· जरा ठहरिये।"

विनोद रुक गया।

"आप ऊपर जाइये ! मैं नीचे ही ठहर कर आपकी वापसी के लिये खुदा बन्द करीम से दुआ करता रहूँगा।"

"चलो !" विनोद ने उसकी गर्दन पकड़ कर आगे धक्का दिया।

पहले खन्ड की गैलरी में एक सुन्दर सी लड़की दिखाई पड़ी।

"मुझे यहां रह जाने दीजिये।" हमीद धीरे से बोला—"मैं यहाँ से भी आपकी वापसी के लिये दुआ कर सकता हूँ।"

"बकवास मत करो···बस चुपचाप चलते रहो।"

हमीद ने इस विचार से जल्दी कदम बढ़ा दिये कि कहीं विनोद उस लड़की के सामने ही उसकी गर्दन न दबोच ले।

पांचवें खन्ड पर पहुँच कर वह तीसरे फ्लैट के सामने रुके। दरवाजा बन्द तो था मगर ताला नहीं लगा हुआ था। विनोद ने आवाज दी।

"भाग जाओ नहीं तो मैं तुम पर कुत्ते छोड़ दूँगी—" भीतर से किसी औरत की गर्जना सुनाई पड़ी। यह वाक्य अँग्रेजी में कहा गया था और स्वर का भारीपन बता रहा था कि बोलने वाली मोटी-ताजी तगड़ी औरत होगी।

"हमें मिस्टर फिंच से मिलना है—" विनोद ने बड़ी भद्रता से कहा।

"अररर···हुश—" कुछ इस प्रकार की आवाज आई जैसे वह औरत अपने व्यवहार पर लज्जित हो। फिर द्वार खुलने में देर नहीं लगी। एक लम्बी तड़ंगी श्वेत रंग वाली औरत उनके सामने आकर खड़ी हो गई।

"आइये अन्दर आइये।" उसने कहा।

कमरे में साधारण से फर्नीचर थे।

"बैठिये!" उसने कहा—"मैंने समझा था कि पड़ोस के शरारती बच्चे होंगे। बहुत तंग करते हैं बच्चे भी। आप आराम से बैठिये। जवानी में मुझे पूर्वीय देशों से प्रेम था, मगर अब सोचती हूँ कि आदमी को उत्तरी या दक्षिणी ध्रुव पर भी शान्ति नहीं मिल सकती।"

"आप ठीक कह रही हैं—" विनोद बोला—"मिस्टर फिंच कहाँ हैं?"

"ईश्वर ही जानता है, मगर मुझे आश्चर्य के साथ दुख भी हो रहा है कि आप ऐसे भद्र लोग फिंच से क्यों मिलना चाहते हैं। आप लोग बिजिनेस मैन भी नहीं मालूम पड़ते हैं।"

"क्या यह आवश्यक है कि केवल बिजिनेस मैन ही से मिस्टर फिंच की जान पहचान हो?"

"अगर मैंने फिंच को समझने में भूल नहीं की है तो यही होना चाहिये।"

"आप ठीक समझी हैं! हम लोग अभी नये कारोबारी हैं।"

"और फिन्च से अधिक जान पहचान भी नहीं है—

क्यों ?"

"यह आप कैसे कह सकती हैं ?"

"अगर आप फिच को समीप से जानते होते तो आपको इस बात का भी पता होता कि वह घर पर कभी नहीं टिकता। वह केवल पैसे पैदा करने के लिये संसार में आया है। एक साढ़े चार फीट के आदमी से इसके अतिरिक्त और क्या आशा की जा सकती है कि वह जिस कार्य में लगे बस उसी का होकर रह जाये।"

"हमीद उस मोटी औरत की इस बारीक बात पर चकित हो उठा।

"आपका मिस्टर फिच से क्या सम्बन्ध है ?" हमीद ने पूछा।

"वह सम्बन्ध है जिसका महत्व उसकी दृष्टि में कुछ भी नहीं।"

"मैं समझा नहीं।"

"लोग मुझे मिसेज फिच कहते हैं।"

"हाँय !" हमीद आँखें फाड़ कर रह गया, फिर उसने उर्दू में यह चरण पढ़ा।

"कोई पहाड़ यह कहता था इक गिलहरी से।"

"जी !" औरत उसे घूरने लगी।

"मतलब यह है कि....।"

"मैं मतलब समझती हूँ। आप मेरी हँसी उड़ाना चाहते हैं—" औरत मुस्कुरा कर बोली—"मगर मैं इसकी आदी हो चुकी हूँ। मुझे लेशमात्र भी दुख नहीं होगा। जब हमारा विवाह हुआ था तो हम चुटकुला बनकर रह गये थे।"

"मिस्टर फिंच से मिलना अत्यन्त आवश्यक है—" विनोद बोला।

"यह घर आप ही का है, लोग फिंच से मिलने के लिये यहाँ पन्द्रह दिन तक ठहरे रहते हैं।"

"मैं नहीं समझा।"

"फिंच से मिलने वाले प्रायः दूसरे शहरों से यहाँ आते हैं अपने सामान सहित, फिंच से भेंट नहीं होती और वह यहीं डेरा डाल देते हैं। फिंच को तलाश करते हैं और जब वह मिल जाता है तो अपना सामान उठाकर वहीं चले जाते हैं जहाँ वह रहता है, अभी कल ही दोपहर को एक महाशय आये थे, अपना सामान रखकर वह जो गायब हुये हैं तो अभी तक उनकी शकल नहीं दिखाई पड़ी।"

"आप विश्वास कीजिये—ऐसे अवसरों पर मैं बड़ी विपत्ति में पड़ जाती हूँ। कभी कभी ऐसा भी होता है कि कई मेहमान आ जाते हैं और इस फ्लैट में केवल तीन ही कमरे हैं—आप खुद सोचिये कि किस प्रकार व्यवस्था की जा सकती है। मैंने एक कमरा ऐसे लोगों के लिये खाली कर दिया है। वे आते हैं और फर्श पर अपना बिस्तर जमाते हैं।"

"हम लोग अपना सामान स्टेशन ही पर छोड़ आये हैं—" हमीद मुस्कुरा कर बोला।

"तो आप ठहरेंगे ?"

"जी हाँ—रात तो यहीं व्यतीत करनी ही पड़ेगी—" विनोद बोला।

"आप लोग किसी अच्छे होटल में क्यों नहीं ठहरते, देखने में तो बड़े आदमी मालूम पड़ते हैं।"

"लेकिन फिच का आदेश यही है कि हम यहीं ठहरें।"

"चलिये ! मगर आप लोगों के पास बिस्तर नहीं है और कमरे में चटाइयों के अतिरिक्त और कुछ नहीं।

"आप इसकी चिन्ता मत कीजिये ! हम लोग हर प्रकार का जीवन व्यतीत कर सकते हैं।"

औरत उन्हें एक कमरे तक लाई। विनोद ने दरवाजे को धक्का दिया और औरत की ओर मुड़ कर बोला—"हम आपको अधिक कष्ट नहीं देंगे।"

औरत कुछ कहे सुने बिना लौट गई।

● ● ●

कमरा छोटा सा था, फर्श पर चटाई बिछी हुई थी और एक ओर एक होलडाल और सूटकेस रखा हुआ था, यह कदाचित उसी आदमी का था जिसके बारे में उस औरत ने कहा था कि वह फिच को तलाश करने गया है और अभी तक वापस नहीं लौटा।

विनोद चटाई पर बैठता हुआ बोला—

"बैठो हमीद दी ग्रेट ! बैठो ! किसी का अतिथि होना भी कितनी सौभाग्य की बात है, मगर भोजन का क्या होगा, मैं समझता हूँ कि भोजन की व्यवस्था हमें ही करने पड़ेगी।"

"क्या आप गम्भीर हैं ?" हमीद ने बौखला कर पूछा।

"क्या तुमने किसी अवसर पर मुझे उच्छृंखल भी देखा है ?"

"तो फिर आप ही ठहरिये। मैं तो किसी अनाथालय में जाना पसन्द करूँगा।"

"बकवास मत करो ! बैठ जाओ।"

"मुझे अपनी पतलून की किरीज खराब नहीं करनी है।"

विनोद कुछ नहीं बोला, वह उठा और दरवाजा अन्दर से बन्द करके उसके शीशों से बाहर की ओर देखने लगा।

"इधर आओ!" उसने मुड़कर हमीद से कहा—

"तुम उस औरत पर दृष्टि रखो! मैं जरा उस सूटकेस और होलडाल को देखना चाहता हूँ।"

हमीद शीशे से बाहर की ओर देखने लगा और विनोद अपने कार्य में लीन हो गया। हमीद यह तो नहीं समझ सकता था कि विनोद समय नष्ट कर रहा है मगर यह अवश्य समझ रहा था कि इससे कोई लाभ नहीं होगा—"वैसे उसे अब फिंच और अधिक रहस्य पूर्ण मालूम होने लगा था—मगर इस समय वह सचमुच लाली के बारे में सोच रहा था जिससे आज होटल नियाग्रा में मिलने की आशा थी—लेकिन यदि विनोद का प्रोग्राम लम्बा हो गया तो फिर यह सन्ध्या उसे उस रोगी के समान व्यतीत करनी पड़ेगी जो जिन्दा रहना नहीं चाहता मगर उसे जीना पड़ता है।

वह शीशे से नाक लगाये बाहर की ओर देखता रहा मगर निकट या दूर कोई भी मौजूद नहीं था। उसने एक बार भी मुड़ कर विनोद की ओर देखने का कष्ट नहीं उठाया। उसके जेहन पर केवल लाली सवार थी—एक चंचल और हँसमुख लड़की जो उसे मूर्ख समझती थी और उसकी किसी बात का बुरा नहीं मानती थी।

लगभग दस मिनट के बाद विनोद ने कहा—

"अब वापस आ जाओ।"

हमीद वापस चला आया मगर उसका मूड बहुत अधिक खराब हो गया था।

"घबड़ाओ नहीं, बस पन्द्रह मिनट हम और यहाँ ठहरेंगे—"

विनोद ने कहा।

हमीद मौन रहा।

"ईश्वर इन लड़कियों को सद बुद्धि दे–" विनोद बड़बड़ाया।

"सब को नहीं, वर्ना मेरा क्या बनेगा—" हमीद जल्दी से बोला।

"जरा यह पत्र देखो!" विनोद ने पत्र उसकी ओर बढ़ा दिया। वह पत्र एक लिफाफे में था जो विनोद को उसी सूटकेस में मिला था।

यह पत्र किसी कमला ने किसी राज के नाम लिखा था, जिसमें कहा गया था कि वह उसकी फोटो वापस कर रही है। उसकी बेवफाइयों और लापरवाहियों के कारण उसका दिल टूट गया है, उसे चाहिये कि वह भी उसकी फोटो वापस कर दे।

"क्या इन आशिक साहब का चित्र भी लिफ़ाफे में है?" हमीद ने पूछा।

"हाँ—" विनोद ने लिफाफा भी उसकी ओर बढ़ा दिया।

हमीद ने लिफाफे से फोटो निकाली, मगर उस पर दृष्टि पड़ते ही चित्र और पत्र दोनों उसके हाथ से छूट गया।

"क्यों क्या बात है?"

"यह···आदमी···?"

"क्या तुम इसे पहचानते हो?"

"हाँ! मुझे विश्वास है···मेरी स्मरण शक्ति मुझे धोखा नहीं दे सकती।"

"खुलकर बताओ कि यह कौन आदमी है?"

"यह वही आदमी है जो मुझे होटल में मिला था और फिर बाद में विषैले तीर का निशाना बन गया।"

"अच्छा!" विनोद ने झुककर चित्र और पत्र उठा लिया फिर पत्र की और लिफाफे की लिखावट मिलाने लगा और उसके

बाद दोनों वस्तुयें अपनी कोट के जेब में डाल ली ।

"चलो अब हमें देर नहीं करनी चाहिये ।"

वह दोनों कमरे से निकले मगर आगे जाने का मार्ग नहीं था क्योंकि गलियारे का दरवाजा बाहर से बन्द कर लिया गया था।

विनोद ने आवाज लगाई और द्वार खुल गया सामने वही मोटी औरत थी मगर उसका मुख क्रोध वश लाल हो रहा था उसने तीव्र स्वर में पूछा—

"क्या बात है ?"

"हमने यह सोचा है कि इस प्रकार बेकार बैठे रहने से तो अच्छा यह है कि हमें मिस्टर फिंच को खोजना चाहिये ।"

औरत एक ओर हट गई और वह दोनों नीचे उतर आये ।

"अब कहाँ ?" हमीद ने पूछा ।

"अगर लिफाफे पर लिखा हुआ पता ठीक है तो हम इस राज के निवास स्थान तक तो पहुँच ही सकते हैं । उसने तुम से यही न कहा था कि उसके पास कुछ खतरनाक आदमियों के विरुद्ध प्रमाण है ?"

"हाँ—" उसने यह भी कहा था कि सारे प्रमाण उसने अपने घर ही में किसी गुप्त स्थान पर छिपा रक्खे हैं ।"

"तो ठीक अब हम वहीं जा रहे हैं ।"

"क्या आपको अपनी सफलता का विश्वास है ?"

"आवश्यक नहीं है, वह प्रमाण उन लोगों के हाथ लग गये हों ।"

"क्या उस सूटकेस में और कुछ नहीं मिला ?" हमीद ने पूछा ।

"हाँ—एक वस्तु और मिली है—" विनोद ने एक छोटी सी डिबिया निकाल कर हमीद की ओर बढ़ा दी ।

वह लोग अब तक नीचे पहुँच चुके थे ।

कार फिर चल पड़ी। हमीद उस डिबिया को उलट पलट कर देख रहा था, फिर उसने उसे खोल डाला और निराश हो उठा। उसने यह समझा था कि उस डिबिया में कोई अनोखी वस्तु होगी, मगर उसमें से निकलने वाली लोहे की छोटी सी एक नलकी थी जो न तो उसे किसी काम की ही वस्तु मालूम हुई और न यही समझ सका कि विनोद ने उसे इतना महत्व क्यों दिया है।

"यह क्या है ?" हमीद ने पूछा।

"यह तो मुझे भी नहीं मालूम है ?"

"फिर इसे इतना महत्व क्यों दिया है आपने ?"

"केवल इसलिये कि यह इतनी सुरक्षित रूप से रखी हुई थी, बेकार वस्तुयें इस प्रकार तो रखी नहीं जाती।"

"और यदि यह बेकार प्रमाणित हो तो ?"

"तो इसे मैं सड़क पर फेंक दूँगा—वैसे क्या तुमने इसकी बनावट पर ध्यान नहीं दिया ?"

"इस समय तो मेरा ध्यान अपनी खोपड़ी की बनावट पर है।"

"क्या किसी परिणाम पर पहुँचने की सम्भावना है ?" विनोद ने मुस्कुरा कर पूछा।

"सोचता हूँ कि यदि मैं इसे सौ से गुणा करूँ तो गुणनफल कुछ आयेगा भी या नहीं ?"

"गुणनफल होगा गोबर का ढेर।"

"आप मेरा अपमान कर रहे हैं ?"

"तुम्हारी खोपड़ी में गोबर के ढेर के अतिरिक्त और कुछ नहीं है।"

"इतनी जल्दी मेरी कृतियां भूल गये आप ?"

"याद है—और यह भी याद है कि तुम्हारी पिछली

सफलताओं में किस किस का हाथ था।"

"खैर होगा—" हमीद बुरा सा मुँह बना कर बोला—

विनोद मार्ग में एक जगह फिर फोन करने के लिये उतरा। क्षणिक टेलीफोन बूथ में उसने लगभग दस मिनट व्यतीत किये।

"कई समाचार हैं हमीद साहब—" विनोद मुस्कुराकर बोला।

"मैं सुने रहा हूँ।"

विनोद ने कार स्टार्ट करने के बाद कहा—

"वह सन्तरी मिल गया है जिसकी ड्युटी पिछली रात उस राजदूत की कोठी पर थी। उसका बयान है कि वह ड्युटी पर जाने के लिए अर्जुन पूरे की एक गली से गुजर रहा था कि किसी ने पीछे से उसके सर पर किसी भारी चीज से आक्रमण किया। और जब उसकी चेतना लौटी तो उसने अपने आपको मिन्टो पार्क में पाया। उसके सर पर गहरा घाव है।"

"क्या राजदूत की ओर से यह रिपोर्ट भी नहीं की गई कि सन्तरी ड्युटी पर नहीं पहुँचा?"

"यह भी एक दिलचस्प बात है—" विनोद ने कहा— "आठ बजे ड्युटी बदलनी थी। आठ बज कर पाँच मिनट तक सवेरे की ड्युटी वाले सन्तरी ने उसकी प्रतीक्षा की, फिर वह उसके बाद राजदुत के परसनल सेक्रेट्री से आठ बजकर पाँच मिनट की रवानगी पर हस्ताक्षर लेकर चला गया था। सेक्रेट्री ने आठ बजकर दस मिनट पर कोतवाली फोन किया कि रात की ड्युटी वाला सन्तरी अभी तक नहीं आया। वह लोग केवल इस विचार में रह गये कि वह किसी कारण वश देर में पहुँचा होगा अतः उससे जवाब तलब कर लिया जायेगा।"

"दूतावास से फिर फोन नहीं किया गया?"

"नहीं।"

"क्या यह बात तर्क युक्त नहीं है?"

"है, लेकिन इसके लिए भी एक कारण उपस्थित कर दिया गया है। परसनल सेक्रेट्री प्रातः काल तक किसी मादक वस्तु के प्रभाव से अचेत पड़ा रहा है।"

"तो इसका अर्थ यही हुआ कि जिसने उस सन्तरी पर आक्रमण किया था उसी ने···।"

"हाँ प्रकट में तो यही मालूम होता है कि यह दोनों कार्य एक ही आदमी या एक ही टोली ने किया है, एक ओर उन्होंने सन्तरी को ड्यूटी पर जाने से रोका और दूसरी ओर राजदूत के परसनल सेक्रेट्री को कोई दवा देकर मूर्छित कर दिया। इसका यह भी अर्थ हो सकता है कि वह सन्तरी की अनुपस्थिति की सूचना दोबारा न दे सके।"

"फिर भी राजदूत के लिए कई ऐसे प्रश्न तैयार किये जा सकते हैं जिनके उत्तर देने के लिये उसे विवश होना पड़ेगा।"

"आवश्यक नहीं है। वह हर बात पर अपनी अनभिज्ञता और आश्चर्य प्रकट कर सकता है, क्योंकि यह सब सन्तरी की अनुपस्थिति में हुआ था। वह तो अभी तक आश्चर्य जनक लाश पर सर पीट रहा है। उसका कहना है कि वह इन घटनाओं पर आश्चर्य वश पागल भी हो सकता है।"

"आपने इन घटनाओं के आधार पर क्या सोचा है?"

"मेरी राय यह है कि यह दो पार्टियों के आपसी संघर्ष का परिणाम है।"

"और एक पार्टी राजदूत की भी है?"

"हाँ—" विनोद बोला—"और सुनो! अर्जुन पूरे में एक औरत की लाश भी मिली है जिसे अभी तक पहचाना नहीं जा सका है मैंने फिंगर प्रिन्ट सेक्शन के उस आदमी को लाश देखने के लिये फोन किया है जिसने शीला की लाश पहचानी थी और मिसेज गुप्त अर्थात परमिला की पड़ोसिन को भी कोतवाली बुलवाया है। सम्भव है वह परमिला ही की लाश हो।"

हमीद एक दीर्घ स्वाँस खींचकर रह गया।

"क्यों क्या बात है ?" विनोद ने पूछा।

"लाश देखते देखते मैं अपने जीवन से तंग आ गया हूँ।"

"अच्छी बात है! कार से कूद जाओ! मैं जवाब दही कर लूंगा।"

हमीद कुछ नहीं बोला। विनोद भी मौन रहा। कार फर्राटे भरती रही। हमीद गम्भीरता से इस समस्या पर विचार कर रहा था कि क्यों न वह इस्तीफा देकर हमेशा हमेशा के लिये इस विभाग से अलग हो जाये। दिन रात लाशें देखते देखते उसकी आँखें पथरा गई थीं और हर समय लाशों की बातें सुनते सुनते उसके कान पक गये थे।

जोजफ लेन के सामने विनोद ने कार रोक दी।

यह इमारत भी काफी बड़ी थी और कई फ्लैट थे। विनोद ने लिफाफा निकाल कर उस पर लिखे हुये पते को एक बार फिर देखा और कार से उतर पड़ा।

थोड़ी देर बाद वह दोनों उसी फ्लैट के सामने खड़े थे जहाँ उन्हें पहुँचना था। दरवाजे पर एम० राज की प्लेट लगी हुई थी मगर द्वार बाहर से बन्द था और ताला लगा हुआ था। विनोद ने चारों ओर देखा। पूरी गैलरी सुनसान पड़ी हुई थी।

"क्यों! क्या विचार है ?" हमीद ने धीरे से पूछा।

"ताला खोलना है।"

"दिन है कर्नल साहब! क्या तलाशी का वारन्ट आपके पास है ?"

"मैं स्वयं वारन्ट हूँ—" विनोद ने अपनी जेब में हाथ डालते हुए कहा।

और फिर उसने जेब से वह बारीक औजार निकाला जिसकी सहायता से बड़े से बड़ा ताला मिनटों में खोल लिया जाता था।

ताला खुल गया और दोनों अन्दर घुस गये। विनोद ने

अन्दर से दरवाजा बन्द कर लिया। वह फ्लैट नहीं बल्कि कबाड़ खाना मालूम हो रहा था। फ्लैट में चार कमरे थे। एक कमरा बड़ा था। उसी से सट कर किचन रूम और बाथ रूम थे। दस मिनट के अन्दर ही उन्होंने पूरा फ्लैट देख डाला, मगर उन्हें फ्लैट में कोई ऐसा भाग नहीं मिला जिसकी वस्तुयें ढंग के साथ हों। हर कमरे की वस्तुयें उलटी पलटी दिखाई दी। फल कुछ नहीं निकला।

"न जाने आपने क्या सोच रखा है—" हमीद झल्ला गया—"आखिर आपने किस आधार पर यह समझ लिया है कि वह वस्तुयें जिनका हवाला राज ने दिया था अब भी यहाँ होगी ?"

"मुझे विश्वास है कि वह अब भी यहीं है।"

"तो फिर तलाश कीजिये···मैं विश्वास का कारण नहीं पूछूँगा।"

"कारण तो मैं पूछूँगा—" विनोद उसे घूरता हुआ बोला।

"मुझसे···क्यों ? क्या मैं आपको यहाँ लाया था ?"

"नहीं, लाया तो मैं था, मगर इसलिये नहीं लाया था कि तुम्हें किसी शीशे के मर्तबान में रख कर देखता रहूँ।

हमीद ने चिढ़ कर मुख फेर लिया।

विनोद फिर बोला—

"मैं तुम्हें इसलिये लाया था कि तुमसे अपने इस विश्वास का कारण पूछूँ और तुम्हें बताना पड़ेगा।"

"मैं आपके समान त्रिकाल दर्शी नहीं हूँ।"

"मैं फिर कहता हूँ कि तुम्हें कारण बताना पड़ेगा। क्योंकि कारण तुम्हें प्रत्येक दिखाई दे रहा है। अन्धे नहीं हो।"

हमीद ने उसे ध्यान पूर्वक देखा। उसके नेत्र में वही क्रोध झलक रहा था जो किसी स्कूल मास्टर के नेत्रों में उस समय प्रकट होता है जब उसका कोई शिष्य पिछला पाठ भूल बैठता है। हमीद ने बौखला कर चारों ओर देखा, कुछ क्षण तक सोचता

रहा, फिर बोला—

"आपका विचार सत्य है।"

"क्या है ?"

"इस विध्वंस से तो यही प्रकट होता है। यदि इस फ्लैट की कोई वस्तु भी अपने स्थान पर होती तो मैं यह समझता कि वह लोग उन वस्तुओं को पा लेने में सफल हो गये हैं।"

"गुड····" विनोद ने चुटकी बजाई—"तुम्हें जो गधा समझे वह खुद गधा है। बस बुराई यह है कि तुम शारीरिक सुख के लिये अपनी बुद्धि को प्रयोग नहीं करना चाहते।"

"धन्यवाद !"

"अब आओ ! तुम्हें मैं वह स्थान दिखाऊँ जहाँ वह वस्तुयें हो सकती हैं।"

"तो क्या आपको स्थान भी मालूम हो गया है ?"

"सम्भव है मेरा अनुमान सत्य हो—वैसे यह मेरा दावा नहीं है।"

फिर वह उस भाग में आये जहाँ किचन और बाथ रूम थे। विनोद किचन के द्वार पर रुक कर चौखट के दाहिने बाजू पर झुक गया और एक छोटे से सुराख से देखने लगा। फिर उसने जेब से वही ताला खोलने वाला बारीक औजार निकाला और सुराख में डालकर घुमाने लगा, मगर परिणाम कुछ नहीं निकला।

"क्यों समय नष्ट कर रहे हैं—" हमीद बोला।

"बस देखते जाओ। अब अनुमान ही नहीं बल्कि मेरा दावा है कि वह वस्तुयें यहीं है।"

उसने औजार जेब में डाल लिया और एक दूसरी वस्तु उस छिद्र में डाली····फिर देखते ही देखते एक मन्द सा खटका हुआ और दीवार में चौखट के समीप एक दो फीट लम्बी और बारह अंगुल चौड़ी दरार दिखाई देने लगी।

हमीद ने उस दरार में रत्न जटित आभूषण, बड़े बड़े नोटों

की गड्डियाँ, कुछ पत्र और एक तीर देखा।

विनोद ने उसमें से तीर निकाल लिया। हमीद दूसरी वस्तुयें उलटने पलटने लगा। उसने वह पत्र निकाल लिये और पढ़ने में इतना खो गया कि उसे विनोद की उपस्थिति का भी ज्ञान नहीं रह गया।

"यह सब क्या है?" उसने विनोद की आवाज सुनी और चौंक पड़ा।

"ओह! कदाचित यह राज ब्लैक मेलर भी था। उन विभिन्न लड़कियों के पत्र विभिन्न पुरुषों के नाम हैं।"

"इन्हें यहीं रख दो। यह मेरे लिये बेकार है।"

हमीद ने पत्र उसी दरार में रख दिया और विनोद ने जैसे ही अपनी उँगली उस काली सी वस्तु पर रख कर थोड़ा सा दबाव डाला, दरार बड़ी तेजी से बराबर हो गई। अब हमीद ने ध्यान से देखा तो वह वही लोहे की नली थी जो विनोद को राज के सूटकेस में मिली थी। विनोद ने उसे छिद्र से निकाल कर जेब में डाल लिया।

"वह तीर।" विनोद ने हमीद से कहा—"इसकी नोक से सावधान रहना। इस पर डारकेन लिखा हुआ है।"

"डारकेन!" हमीद बड़बड़ाया—"यह नाम तो सुना हुआ सा मालूम होता है।"

"उत्तरीय अमेरिका का खतरनाक आदमी। विषों का विशेषज्ञ। पन्द्रह वर्ष से वहाँ की पुलिस इसके चक्कर में है, किन्तु उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकी।"

अचानक किसी ने बाहर से आवाज दी—

"अन्दर कौन है?"

हमीद दरवाजे की ओर बढ़ा ही था कि विनोद ने उसका हाथ पकड़ लिया।

"ठहरो!" वह धीरे से बोला और पंजों के बल दरवाजे

झुक जाकर एक छिद्र से बाहर देखने लगा। दरवाजा बाहर से पीटा जा रहा था। फिर किसी ने चिल्ला कर कहा।

"अन्दर चोर है।"

विनोद ने शीघ्र ही हमीद की ओर मुड़ कर संकेत किया कि वह अपनी पीठ दरवाजे की ओर कर ले। बाहर कोलाहल बढ़ता जा रहा था और चोर चोर की आवाज से वायुमन्डल गूँजने लगा था। विनोद ने हमीद को दूसरे कमरे की ओर खींचा। वह इस समय गलियारे में थे—फिर गलियारे से बड़े कमरे में मुड़ गये।

"यह क्या विपत्ति आ गई ?" हमीद बड़बड़ाया।

"चिन्ता मत करो ! अब पुलिस आयेगी।"

"मगर उससे पहले हमारे सर के बाल साफ हो जायेंगे। भीड़ कदाचित बढ़ती जा रही है।"

"इसके प्रति कुछ मत सोचो, अभी एक दिलचस्प घटना होगी।"

"अवश्य दिलचस्प घटना होगी—" हमीद जल कर बोला—"कितनी शानदार हेडिंग होगी समाचार पत्रों की ··· गुप्तचर विभाग के दो आफिसर चोरों और डाकुओं के धोखे में जनता के हाथों पीटे गये।"

विनोद उत्तर देने के बजाय मुस्कुराने लगा।

"अच्छी बात है।" हमीद क्रोधित होकर बोला—"मैं तो एक दो को गोली मार दूँगा।"

"इसकी आवश्यकता ही नहीं पड़ेगी, क्योंकि बिना पुलिस के आये अन्दर घुसने का कोई साहस नहीं कर सकता—और पुलिस प्रिस्टन ही के थाने से आयेगी।"

"मगर यह तो सोचिये कि हम कानूनी तौर पर यहाँ नहीं दाखिल हुये हैं।

"ठीक है—मगर दरवाजे पर आवाज देने वाला आदमी भी आवाज देने का अधिकारी नहीं हो सकता।"

"क्यों ? क्या राज का कोई सम्बन्धी नहीं हो सकता ?"

"अगर सम्बन्धी होता तो वह यही समझता कि राज के अतिरिक्त अन्दर कौन हो सकता है। फिर वह चोर चोर की आवाज ही नहीं लगाता बल्कि राज का नाम लेकर दरवाजा खोलने को कहता—और अगर उसे यह मालूम रहता कि राज मर चुका है तो पहले वह उसके मरने की सूचना कोतवाली में देता।"

"ठीक है, मगर जब हाथ उठ जाते हैं तो लोगों के तर्क और फलसफे धरे रह जाते हैं—" हमीद झल्ला कर बोला—"वह हमें अनभिज्ञता में पीट देंगे और हम कुछ न कर सकेंगे ?"

अच्छा ! अब चुप हो जाओ—" विनोद भी झल्ला गया।

"अच्छी बात है—" हमीद ने कहा।

लगभग बीस मिनट व्यतीत हो गये, अब बाहर से आवाजें भी नहीं आ रही थीं।

बड़े कमरे से वह फिर गलियारे में आये, बाहर सन्नाटा था। विनोद पंजों के बल दरवाजे तक गया और फिर मुड़कर धीरे से बोला—

"विचित्र बात है, अब यहाँ कोई भी नहीं है।"

"खुदा का शुक्र है।"

विनोद ने उस तीर को पुराने समाचार पत्र में लपेट लिया और दरवाजा खोल कर बाहर निकल आया।। ।गैलरी भी सुनसान थी मगर हमीद को अब भी सन्देह हो रहा था कि लोग कहीं आकर टूट न पड़ें।

विनोद ने झुककर ताला लगाया और फिर राज के पड़ोसी के दरवाजे पर आकर आवाज दी। दरवाजा खुला और एक आदमी बाहर आया।

"कहिये !"

"अभी यहाँ चोर चोर का शोर हो रहा था ?" विनोद ने पूछा।

"ओह !" वह आदमी हँसकर बोला—"कोई बात नहीं थी, केवल भ्रम मात्र था।"

भ्रम ! क्या मतलब ?"

"अन्दर से खड़बड़ाहट की आवाज सुन कर दो आदमी आवाज दे रहे थे। जब कोई उत्तर नहीं मिला तो वह चोर चोर चिल्लाने लगे। लोग एकत्र होने लगे कि इतने में एक आदमी आया और उसने हँस कर कहा कि कोई बात नहीं है। भीतर राज के चाचा होंगे। वह बिल्कुल बहरे हैं। वह उस समय तक कुछ नहीं सुन सकते जब तक कि कान में सुनने वाला यंत्र न लगा लें। इस पर वह दोनों आदमी जो आवाज दे रहे थे हँसते हुए चले गये।"

"ओह····मगर यह मिस्टर राज हैं कहाँ ?"

"पता नहीं।"

"खैर···आपको बहुत कष्ट दिया—इसके लिये क्षमा कीजिये—" विनोद कह कर आगे बढ़ गया।

"क्या मैं पूछ सकता हूँ कि आपने क्या सोच रखा था ?" हमीद ने हँसी उड़ाने वाले भाव में पूछा।

"कुछ न पूछो हमीद····कुछ भी नहीं हुआ—मैंने समझा था कि वह पुलिस की सहायता अवश्य प्राप्त करेंगे।"

"तो इससे क्या होता ?"

"पुलिस को अपना कार्ड दिखाता और फिर आवाज देने वालों से बहुत सी बातें मालूम हो जातीं।"

"आपकी समझ से आवाज देने वाले कौन थे ?"

"या तो वह लोग जो तीर की तलाश में थे या फिर वह लोग जो राज की टोली से सम्बन्ध रखते रहे होंगे।"

"राज की भी कोई टोली हो सकती है ?"

"क्यों नहीं, यह तो प्रकट है। फिंच के यहाँ राज का सामान पहुँचने का क्या अर्थ हो सकता है ? वह फिंच की पार्टी

ही का आदमी था और फिच का सम्बन्ध राजदूत की पार्टी से है, किसी कारण वश दोनों पार्टियों में ठन गई है।"

वह इमारत से बाहर आये, हमीद ने घड़ी देखकर कहा—

"पाँच बजने में केवल आधा घन्टा शेष है।"

"तो जाओ।"

"जाऊँ कहाँ! मुझे आर्लेक्चनू के सामने उतार दीजियेगा—" हमीद कार में बैठता हुआ बोला।

"ठहरो! मैं जरा फोन करूँगा—" विनोद ने कहा और एक दुकान में घुस गया।

हमीद कार में बैठा लाली के बारे में सोचने लगा।

थोड़ी देर के बाद विनोद वापस आया और उदास होकर बोला—

"पापियों ने एक अच्छे गवाह की जान ले ली!"

"क्या मतलब?"

"शीला की बहिन मार डाली गई।

"ओह! अर्जुनपूरे में पाई जाने वाली लाश उसी की थी?"

"हाँ।"

"मेरी समझ में नहीं आता कि आप तारा नाइडो की ओर ध्यान क्यों नहीं दे रहे हैं?"

"उसे मत छेड़ना हमीद, नहीं तो सारा खेल बिगड़ जायेगा। राजदूत से सम्बन्ध रखने वाले सारे अपराधी मेरी दृष्टि में हैं।"

"तारा नाइडो भी?"

"हाँ—और आज से नहीं बल्कि बहुत दिनों से।"

"फिर प्रतीक्षा क्यों?"

"प्रमाण! तुम जानते हो कि बिना प्रमाण प्राप्त किये मैं किसी पर हाथ नहीं डालता।"

"क्या आपने लेडी इन्स्पेक्टर रेखा को गुलाब वाली लड़की बना कर प्रमाण नहीं प्राप्त कर लिया?"

"वह कुछ भी नहीं है हमीद वह लोग यह कहकर घटनाओं को दूसरा रूप दे सकते हैं कि उनकी बिजिनेस लड़कियाँ सप्लाई करना है। वह दूतावास के कर्मचारियों को लड़कियाँ सप्लाई करते हैं।"

"मगर यह प्रश्न भी तो किया जा सकता है कि इसके लिये इतना जटिल मार्ग क्यों अपनाया गया ?"

"तारा नाइडो इसका भी उत्तर दे सकती है।"

"उसका उत्तर क्या हो सकता है ?"

"कुछ भी कह सकती है। अदालत में कार्य प्रणाली पर किसी प्रकार का तर्क नहीं किया जा सकता और वह भी इस स्थिति में जब कि वह स्वयं ही इसका समर्थन कर लें कि वह लड़कियों के सप्लाई का धन्धा करते हैं।"

"मगर वह लाश ! दूतावास उस लाश के प्रति क्या सफाई देगा ?"

"यही कह सकता है कि जो लोग लड़कियाँ लाते थे कोई उनकी ताक में था और उसने ही वह हत्या की थी।"

"अच्छा तो आप प्रमाण एकत्र कीजिये, मैं चला शान्ति और सुख की खोज में।"

"समाधि अर्थात् कब्र की खोज कहो प्यारे।"

"यही सही···आपने कोई नवीन बात नहीं कही। नारी जन्म देती है और नारी ही कब्र बनाती है।"

"और तुम जैसे लोग आँख के अन्धे कहलाते हैं।"

"इस टाइटिल के लिये धन्यवाद !"

विनोद ने फिर कुछ नहीं कहा, यद्यपि कार्य के समय हमीद की ऐसी बेकार बातें उसे बिल्कुल ही अच्छी नहीं लगती थीं और वह उसे रोक दिया करता था, मगर आज न जाने क्यों उसने हमीद को आर्लेक्चनू के फाटक ही पर उतार दिया।

हमीद ने रुमाल निकाल कर चेहरा साफ किया। टाई की

गांठ ठीक की और कलाई की घड़ी पर दृष्टि डालता हुआ अलेक्चनू के कम्पाउन्ड में दाखिल हो गया, लाली ने ठीक पांच बजे यहीं मिलने का वादा किया था।

वह हाल में मौजूद थी। हमीद को देखकर इस भाव में मुस्कुराई जैसे वह हमीद को कोई बच्चा समझती हो या फिर अपनी हैसियत से कम।"

"हेलो—" हमीद उसकी मेज पर बैठता हुआ बोला—"बुद्धू का अर्थ समझती हो।"

"यह शब्द खुद ही इतना प्यारा है कि इसका अर्थ समझने की आवश्यकता ही नहीं।"

लातैनी भाषा में शौहर अर्थात् जीवन साथी को कहते हैं—" हमीद उसे घूरता हुआ बोला—

"आज बुद्धिमानों के समान बोल रहे हो, बात क्या है?" लाली ने मुस्कुरा कर कहा।

"आज ही तो मुझे इस बात का अनुभव हुआ है कि वास्तव में मैं उल्लू हूँ।"

"लेकिन इस अनुभव से तुम्हें लाभ ही क्या पहुँच सकता है।" लाली ने हँसकर कहा।

"लाभ हो चाहे न हो, मगर मैं बातें ऐसी ही कर सकता हूँ जैसी इस समय कर रहा हूँ। अभी अभी मैंने एक पुस्तक में लिखा हुआ देखा है कि औरतों से अकड़ कर रहना चाहिये।"

"अच्छा!" लाली मुस्कुराई—"मगर तुम अकड़े हुये दिखाई नहीं दे रहे हो।"

"वाह! तुम क्या जानो! यह अर्थ तो है नहीं कि शरीर अकड़ा रहना चाहिये—" हमीद हँसकर बोला।

"फिर?"

"मतलब यह है कि ... बस अकड़ना ... अब मैं कैसे समझाऊँ।"

"मत समझाओ, किन्तु अपने बारे में अवश्य बताओ।"

"क्यों··· मगर क्या बताऊँ ?"

"यही कि तुम क्या करते हो ? कहाँ रहते हो ? तुम्हारा जीविका साधन क्या है ?"

"यह सब तुम क्यों पूछ रही हो ?"

"वाह ! यह भी कोई पूछने की बात है, हम इतने घनिष्ट मित्र हैं और एक दूसरे के प्रति कुछ नहीं जानते ?"

"न जानना ही अच्छा होता है··· नहीं तो कभी कभी बड़ी विपत्ति का सामना करना पड़ता है ।

"क्यों ? विपत्ति का सामना क्यों ?"

"बस इस विषय को यहीं समाप्त कर दो—" हमीद हाथ उठाकर बोला—"मैं तर्क में नहीं पड़ना चाहता । क्योंकि अगर इस सिलसिले में मैं कुछ और बताऊँगा तो तुम मुझे और अधिक बुद्धू समझोगी ।"

"मैं नहीं समझूँगी···आखिर तुम छिपाते क्यों हो कि तुम कौन हो ?"

"इसकी आवश्यकता ही क्या है ।"

"न बताओ, लेकिन मैं यह अवश्य समझती हूँ कि तुम मुझसे कुछ छिपाते हो ?"

"अवश्य छिपाता हूँ, मुझे इससे इन्कार कब है । मैं तुमसे यही छिपाता हूँ कि मेरा नाम जानी है ।"

"हाँय ! तो तुम इस मामले में भी मुझसे झूठ बोले थे । तुमने अपना नाम राघव बताया था ।"

"राघव तो उपनाम है, मैंने गलत नहीं कहा था···मुझे लोग राघव जानी कहते हैं ।"

"यह जानी क्या बला है ?" लीला ने हँसकर कहा ।

"तुम खुद होगी बला··· इसी लिये तो मैं औरतों से दूर भागता हूँ । यह क्या है ? वह क्या है ? ऐसा क्यों है वैसा क्यों हुआ ? इन प्रश्नों का उत्तर देना मेरे वश की बात नहीं है ।"

"मैं तुम्हारा घर देखना चाहती हूँ।"

"मैं घर भी नहीं दिखा सकता।"

"हाँ! मैं जानती हूँ कि तुम कोई बहुत बड़े आदमी हो, मगर रहस्य पूर्ण।"

"क्यों! यह तुम किस आधार पर कह रही हो?"

"मैंने तुम्हें कई बार लिकन में देखा है और लिकन बड़े आदमियों ही के पास होती है।

"सम्भव है मैं किसी बहुत बड़े आदमी का मोटर ड्राइवर हूँ।"

"मोटर ड्राइवर इतने बहुमूल्य सूट नहीं पहनते।"

"यह तो मेरे मालिक ने मुझे पुरस्कार में दिया है।।"

"यह भी झूठ है।"

"क्यों?"

"इसलिये कि मैं हर बार तुम्हें एक नये सूट में देखती हूँ।"

"छोड़ो इन बातों को—" हमीद पाइप में तमाखू भरता हुआ बोला—"इससे न तो तुम्हें कोई लाभ पहुँच सकता है न मुझे।"

हमीद ने पाइप भर कर उसे मेज पर रख दिया—फिर न जाने क्या सोचकर पाइप उठाया और लाली की ओर बढ़ता हुआ बोला—

"लो!"

"मैं क्या करूँ?" लाली ने चकित होकर पूछा।

"पिओ—" हमीद ने गम्भीरता से कहा।

लाली हँसने लगी।

"इसमें हँसने की क्या बात है?" हमीद ने क्रोधित होकर कहा।

"अरे वाह!"

"इस वाक्य का क्या अर्थ हुआ?" हमीद ने उसी स्वर में

पूछा।

लाली और तेजी से हँसने लगी।

"कुर्सी उठाकर तुम्हारे सर पर पटक दूँगा, मैं पूछता हूँ कि पाइप पीने में क्या आपत्ति है।"

"नारियाँ पाइप नहीं पीतीं।"

"नारियों को पाइप पीना पड़ेगा—" हमीद मेज पर घूँसा मारकर बोला—"नारियों की फौज बन सकती है। महिलायें डिप्टी कलेक्टर हो सकती हैं। स्त्रियाँ वायुयान उड़ा सकती हैं। नारियाँ रायफल चला सकती हैं तो फिर क्या कारण है कि नारियाँ पाइप नहीं पी सकतीं। मैं सच कहता हूँ कि यदि तुम मुझसे विवाह करने पर तैयार हो जाओ तो मैं तुम्हें हुक्का भी पिला दूँ।"

"आज तुम कैसी बहकी बहकी बातें कर रहे हो?" लाली ने उसे घूरते हुये कहा।

"आज मुझे अनुभव हो गया है कि मैं वास्तव में उल्लू हूँ अर्थात बुद्धू—" हमीद बोला।

"अच्छा तो मैं जा रही हूँ और अब तुमसे कभी नहीं मिलूँगी।"

"मुझे तुम्हारा घर मालूम है?"

"नहीं—मैं किसी उल्लू से मिलना पसन्द नहीं करती।"

"मैं अन्तिम साँस तक तुम्हारा पीछा नहीं छोड़ूँगा।"

इन दोनों में नौ बजे रात तक उटांग पटांग वाली बातें होती रही, फिर वह रिकरियेशन हाल में जाने के लिये उठे ही थे कि हमीद को सार्जेन्ट नाशाद दिखाई पड़ा जो उसे संकेत से बुला रहा था।

"ठहरो! मैं अभी आता हूँ—" हमीद ने लाली से कहा और नाशाद की ओर बढ़ गया।

"कर्नल साहब ने तुम्हें अभी बुलाया है।"

"उनसे कह देना कि मैं ड्यूटी पर नहीं हूँ—" हमीद झल्ला कर बोला।

"तुम ड्यूटी ही पर हो, विभाग ने तुम लोगों को तलब कर लिया है, शेष छुट्टी कैन्सिल कर दी गई है।"

"विभाग की ऐसी तैसी, मैं एक राउन्ड नाचे बिना यहाँ से नहीं जा सकता।"

"तुम्हें तो चलना ही पड़ेगा, नहीं तो सम्भव है तुम्हारी लाश भी पहचानी न जा सके।"

"क्या मतलब ?" हमीद क्रोधित होकर बोला।

"मतलब यह है कि अभी कुछ देर पहले कर्नल साहब उस जहरीले तीर से बाल बाल बचे हैं। बस यही समझ लो कि अभी उनके दिन पूरे नहीं हुये थे।"

"क्या हुआ था ?"

"विवरण मैं नहीं जानता—बस तुम्हें अभी चलना है।"

"अच्छा ! ठहरो !" हमीद ने कहा और दौड़ता हुआ लाली के पास आया।

"देखो डियर !" वह हाँफता हुआ बोला—"मेरे पिता के पाँव में बिच्छू ने डंक मार दिया है और मुझे इसी समय घर पहुँचना है। शीघ्र ही फिर भेंट होगी, तुम चिन्ता मत करना, अच्छा टा टा।"

हमीद तेजी से होटल के बाहर निकल आया, नाशाद भी उसके पीछे था।

● ● ●

क्लाक ने एक बजाया और हमीद टहलते टहलते रुक गया।

वह बड़ी देर से अपने कमरे में टहल रहा था, वह इस समय अत्यन्त गम्भीर था, उसे इस बात से अत्यन्त दुख पहुँचा था कि विनोद इतनी रात गये अकेला बाहर गया था। वह भी साथ ही जाना चाहता था मगर विनोद इस पर तैयार नहीं हुआ

था और अकेला ही चला गया था। यद्यपि हमीद काम से जान छुड़ाने ही के चिन्ता में रहा करता था, मगर जब विनोद खतरे में घिर जाता था तो वह बहुत ही अधिक चाक चौबन्द दिखाई देने लगता था।

आज जब वह लाली के साथ आर्लेक्चनू में मनोरंजन में लीन था, विनोद पर आक्रमण हुआ था और नाशाद से खबर पाकर वह घर चला आया था, घर आने पर उसे मालूम हुआ कि आक्रमण उसी जहरीले तीर से हुआ था जिसका एक शिकार हमीद के नेत्रों के सामने ही भयंकर परिणाम को पहुँचा था। विनोद पर होने वाला आक्रमण बीच शहर में हुआ था, वह अपनी कार से उतर कर एक पब्लिक टेलीफोन बूथ में दाखिल हो रहा था कि एक बाण सन सनाता हुआ उसके दाहिने कान के समीप से गुजर कर एक खटाके के साथ लकड़ी के बूथ में घुस गया था, वह तीर बिल्कुल उसी के समान था जैसा विनोद ने राज के फ्लैट से बरामद किया था, फिर सावधान हो जाने के बाद यह कहाँ सम्भव था कि कोई विनोद पर हाथ डाल सकता मगर विनोद ने यह भी देखा कि एक आदमी अपनी जान पर खेलकर उस तीर को बूथ की दीवार से निकाल ले गया—यह और बात है कि विनोद के पिस्तौल से निकलने वाली गोली ने उसे पचीस कदम से आगे नहीं बढ़ने दिया हो।

गोली उसके पाँव मे लगी थी, वह लड़खड़ा कर गिरा था और चारों ओर से राहगीर दौड़ पड़े थे, फिर अचानक पाँच छः आदमी उस घायल पर गिर पड़े थे, लेकिन जब तक विनोद वहाँ पहुँचता तीर गायब हो चुका था। भीड़ की अधिकता के कारण यह पता नहीं चल सका कि वह तीर किसने गायब किया, मगर गोली खाकर गिरने वाला मर चुका था। मगर क्या उसकी मृत्यु गोली लगने के कारण हुई थी? बाद की जाँच से पता चला कि उसकी कलाई पर एक छोटा सा घाव था और उसके

शरीर के खुले हुये अंग इतने फूल गये थे कि उनकी बनावट ही बदल गई थी, ऐसी दशा में इसके अतिरिक्त और क्या कहा जा सकता था कि वह घाव उसी विषैले तीर का था। कदाचित तीर को गायब करने वाले ने यही उचित समझा था कि उसे समाप्त ही कर डाले, नहीं तो सम्भव था कि उसके बयान के आधार पर विनोद उन लोगों के मार्ग पर लग जाता जो उन तीरों द्वारा अब तक तीन आदमी की जानें ले चुके थे।

हमीद को विनोद ने सब कुछ बता देने के बाद आदेश दिया था कि वह भी सावधान रहे और फिर अकेला बाहर चला गया था। हमीद ने लाख चेष्टा की कि उसे भी साथ ले ले मगर विनोद ने यह कह कर उसे ले जाने से इन्कार कर दिया था कि वह वहीं ठहर कर फोन पर उसके आदेशों की प्रतीक्षा करे।

अब स्थिति कुछ और ही थी इसलिये हमीद भी पूरी तरह सावधान हो गया था और उसे इस बात का भी विश्वास हो गया था कि यह मामला अब बहुत आगे बढ़ जायेगा। विनोद ऐसे अपराधियों के लिये दिन रात एक कर दिया करता था जो कानून के रक्षकों से टकराने की चेष्टा करते थे। दूसरी ओर हमीद को यह भी चिन्ता थी कि यदि वास्तव में वह डा० डारकेन का ही मामला था तो इसमें असफलता की भी सम्भावना हो सकती थी, क्योंकि डारकेन एक अन्तर्राष्ट्रीय अपराधी था और अमेरिका की पुलिस आज तक उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकी थी।

हमीद टहलता रहा और सोचता रहा। डा० डारकेन वह खतरनाक आदमी था जिसने एक बार अमरीकी सेन्ट के तीन सदस्यों को एक साथ मार डाला था। वह जन समारोह नहीं था, बल्कि वहाँ केवल सरकारी आदमी थे। एक ही साथ तीन लाशें फर्श पर गिरीं और लगभग पाँच मिनट के अन्दर ही हाल के सारे द्वार बन्द करा दिये गये, मगर इसके अतिरिक्त और कुछ

नहीं मालूम हो सका था कि आक्रमणकारी डारकेन था। उन दिनों डारकेन की कार्य प्रणाली यही थी कि वह अपने शिकारों के समीप अपना परिचय कार्ड रख दिया करता था। मरने वाले उन तीन आदमियों पर बिना आवाज के रिवाल्वर से गोलियाँ चलाई गई थी—और वह रिवाल्वर वहीं पड़ा मिल भी गया था।

यह था डाक्टर डारकेन—अमेरिका की पुलिस के पास उसके एक नहीं सैकड़ों फोटो थे किन्तु वह अभी तक उसे पकड़ नहीं सकी थी।

यहाँ होने वाली हत्याओं में यदि डारकेन का हाथ है तो फिर उसने अपनी कार्य प्रणाली अवश्य ही बदल दी थी। अमेरिका में उसने अब तक जितनी वारदातें की थीं उनके प्रति उसने किसी न किसी प्रकार यह बता दिया था कि वह उसी से सम्बन्धित थीं, किन्तु यहाँ वह गुप्त रीति से काम कर रहा था हालाँकि उन तीरों में से एक पर विनोद ने उसका नाम भी लिखा हुआ देखा था। तीर पर नाम अंकित होने का तो यही अर्थ हो सकता था कि डारकेन अपने अपराधों का प्रोपेगन्डा चाहता है, किन्तु साथ ही साथ तीर गायब भी करा दिये थे, जिसका ध्येय यही हो सकता था कि वह अभी इन केसों में अपना नाम नहीं प्रकट करना चाहता था।

यह सारी बातें हमीद के मस्तिष्क में चक्कर काटती रही और वह टहलता रहा।

एक बज कर बीस मिनट पर फोन की घन्टी बजी और हमीद ने झपट कर रिसीवर उठा लिया।

"हमीद।" दूसरी ओर से आवाज आई—"तुम तैयार हो ना?"

"हाँ।"

"एक ब्लड हाउन्ड''''कुत्ताखाने से निकलवा लो और मेरी दूसरी काल की प्रतीक्षा करो।"

"अच्छा···क्या आप अकेले हैं ?"

"नहीं—मेरे साथ मेरा मस्तिष्क और मेरा साहस भी है—" विनोद से कहा और फिर सम्बन्ध विच्छेद हो गया।

हमीद ने कुत्ताखाने से एक ब्लड हाउन्ड निकलवाया। वह एक ट्रेन्ड कुत्ता था और वह शिकार को सागर की तह में भी नहीं छोड़ता था। हमीद सोचने लगा कि क्या विनोद उनमें से किसी को कोई वस्तु पा गया है।

पन्द्रह मिनट बाद फिर फोन की घन्टी बजी और दूसरी ओर से विनोद की आवाज आई।

"बस अब आ जाओ। मैं प्रिस्टन के चौराहे पर तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा हूँ। गैरेज से वह गाड़ी निकाल लेना जिसके नम्बर बदले जा सकते हैं। कुत्ता साथ लेते आना।"

हमीद गैरेज से आस्टेन निकाली और ब्लड हाउन्ड सहित प्रिस्टन के चौराहे की ओर चल दिया।

दो बज रहे थे। ठण्ड अपने यौवन पर थी। आस्टेन सुनसान सड़कों पर दौड़ती रही।

फिर प्रिस्टन का चौराहा आ गया। विनोद यहाँ था, मगर अकेला था। उसने अपनी लिकन न जाने कहाँ छोड़ दी थी और इतनी रात गये एक आवारा के समान सड़क के किनारे खड़ा था।

वह कार में आकर बैठ गया।

"चलो।"

कहाँ चलूँ ?" हमीद ने पूछा।

"साधना रोड।"

"वहाँ···मगर···?"

"चिन्ता मत करो! यदि असफलता भी हुई तो मुझे दुख नहीं होगा।"

"क्यों ?"

"इसलिये कि अब जो कुछ भी मैं करने जा रहा हूँ वह ऐसा

ही होगा जैसे साँप की लकीर पीटना।"

"कुछ मुझे भी बता दीजिये।"

"मेरा विचार है कि मरने वाले के पास जो भीड़ एकत्र हो गई थी उसमें से एक आदमी को मैंने पहचान लिया है—और विश्वास है कि इस समय मैं उसी से टकरा गया हूँ।"

"वह है कहाँ?"

"पता नहीं। अब यह ब्लड हाउन्ड उसे खोज निकालेगा।"

"क्या उसकी कोई वस्तु हाथ आ गई है?"

"हाँ, एक रूमाल—जो प्रयोग करते करते गन्दा हो गया है।"

विनोद ने वह रूमाल जेब से निकाल कर पिछली सीट पर पड़े हुये कुत्ते के आगे डाल दिया। वह उसे सूँघता रहा। हमीद यह सब बड़े ध्यान से देख रहा था।

"चलो भाई! क्या सोचने लगे—" विनोद ने कहा।

कार स्टार्ट हो गई। मार्ग में हमीद ने पूछा—

"वह कहाँ मिला था आपको?" हमीद ने पूछा।

"होटल डी फ्रान्स के फाटक पर वहाँ से वह फिंच के एक साथी का पीछा आरम्भ कर रहा था।"

"फिंच और उसके साथियों के प्रति क्या आप बहुत कुछ जानते हैं?"

"वे सब मेरी दृष्टि में हैं।"

"वह अगर डाक्टर डारकेन ही है तो इतने गुप्त रीति से क्यों काम कर रहा है। अमेरिका में तो वह अपने नाम के एलान के साथ हत्यायें करता रहा है।"

"ओह! तो तीरों के गायब करा देने का उद्देश्य तुम्हारी समझ में आ गया था।"

"हाँ...इसके अतिरिक्त और क्या ध्येय हो सकता है कि वह अपना नाम नहीं प्रकट करना चाहता, मगर तीर पर नाम अंकित होने का क्या तात्पर्य हो सकता है, यदि उन तीरों पर

उसका नाम अंकित न हो तो मैं समझता हूँ कि उन्हें गायब कराने की भी आवश्यकता न रहे।"

तीरों पर नाम ही होना तो सबसे बड़ा उद्देश्य है हमीद साहब। तुम डाक्टर डारकेन और उसके कार्यों को भली भाँति नहीं जानते हो ?"

"न जानता हूँ, मगर यह मोटी सी बात सब की समझ में आ सकती है कि डारकेन बिल्कुल गधा है। जब अपने को छिपाने के लिये वह तीरों को गायब करा देता है तो फिर अपना नाम अंकित कराने की उसे आवश्यकता ही क्या थी। अगर तीर पर नाम न हो तो उन्हें गायब कराने की भी आवश्यकता न पड़े।"

"तुम समझे नहीं। समझ नहीं सकते। डारकेन को वही समझ सकता है जो उसे भली प्रकार जानता हो। वह जहां भी जाता है अकेला जाता है और वहीं के स्थानीय लोगों की टोली बनाता है, उन आदमियों को शिक्षा देता है। उसके शिक्षा देने का यही ढंग है, जैसे अपनी टोली वालों को तो उसने यह आदेश दे रखा है कि उसका नाम किसी प्रकार प्रकट न होने पावे और उधर तीरों पर अपना नाम भी अंकित करवा दिया जिसे उसकी टोली वाले जानते हैं, मगर चूँकि उसका आदेश है कि उसका नाम प्रकट न होने पाये अतः उसके चले हुये तीरों को प्राप्त करने के लिये उसकी टोली वाले जान की बाजी लगा देते हैं। वह केवल अपने आदमियों को ट्रेन्ड बनाता है, वैसे इस भय से वह तीर वापस नहीं मंगवाता कि तीर पुलिस के हाथ लग जाने पर वह पकड़ लिया जायेगा। एक बार दक्षिणी अफ्रीका में भी उसने यही प्रणाली अपनाई थी, यह एक संयोग है कि उसका एक तीर मेरे हाथ लग गया, मगर डारकेन का इससे बिगड़ता ही क्या है। डारकेन ऐसा अपराधी नहीं है जिस पर सरलता से हाथ डाला जा सके। अमेरिका के बच्चे बच्चे के मस्तिष्क में डारकेन की तस्वीर है, किन्तु फिर भी वहाँ की पुलिस आज तक उस पर हाथ नहीं डाल सकी। अमेरिका के समाचार पत्रों में सदैव उसका चित्र प्रकाशित होता रहता है, मगर आज तक कोई उसका कुछ नहीं बिगाड़ सका। जिस प्रकार वायु मुट्ठी में बन्द

नहीं की जा सकती उसी प्रकार डारकेन भी न किसी के हाथ आया और न आने की सम्भावना है।"

"तब तो फिर""।"

"तब तो फिर क्या ?" विनोद ने उसकी बात काट दी।

"कुछ नहीं। अल्लाह मालिक है।"

"मैं उस अल्लाह मालिक से दुआ करूंगा कि वह तुम पर कोई जहरीली औरत फेंक मारे—" विनोद अट्टहास कर उठा।

"अगर ऐसा हो तो मैं अभी मरने के लिये तैयार हूं—" हमीद ने कहा मगर उसका मस्तिष्क यह सोच रहा था कि आखिर यह कर्नल विनोद किस मिट्टी का बना हुआ है जो इस कठिन परिस्थिति में भी इस प्रकार अट्टहास कर रहा है जैसे यह डारकेन के चक्कर में नहीं बल्कि मनोरंजन करने के लिये घर से निकला है।

थोड़ी देर तक दोनों मौन रहे, फिर विनोद ने कहा—

"बाईं ओर गली में मोड़ कर कार खड़ी कर दो।"

हमीद बताये हुये स्थान पर आस्टेन खड़ी करके नीचे उतर गया। ब्लड हाउन्ड की जंजीर उसके हाथ में थी।

होटल डी फ्रान्स यहाँ से दूर नहीं था। वह दोनों उसी होटल की ओर चले।

अचानक एक स्थान पर कुत्ता रुक गया और विपरीत दिशा में जाने के लिये जोर करने लगा। वह बार बार जमीन पर सूंघ कर गुर्रा रहा था।

"पट्टे से जंजीर निकाल लो यह गन्ध पा गया है—" विनोद ने कहा।

"और यदि इसने दौड़ना आरम्भ किया तो ?" हमीद ने पूछा।

"तब मैं तुम्हें इसकी पूँछ में बाँध दूँगा।"

"नहीं, मैं मजाक नहीं कर रहा हूँ मैं इस कुत्ते के पीछे न दौड़ सकूंगा। क्यों न हम कार ही में रहें, और यह पथ प्रदर्शक बने।"

"मैं जो कहता हूँ वह करो।"

हमीद ने पट्टे से जंजीर निकाल दी और कुत्ता जमीन सूँघता हुआ एक ओर चल पड़ा। उसकी चाल तेज नहीं थी। विनोद और हमीद उसके पीछे पीछे चलते रहे। वह चक्कर काटता हुआ रेक्सन स्ट्रीट में मुड़ गया और चलता रहा।

"क्या यह आवश्यक है कि वह आदमी जहाँ जाना चाहता रहा हो वहाँ तक पैदल ही गया हो—" हमीद ने पूछा।

"यह भी तो आवश्यक नहीं है कि वह गया ही हो।"

"फिर ?"

"मरे क्यों जा रहे हो···बस चलते रहो।"

हमीद मौन हो गया।

सारा शहर साँय साँय कर रहा था। सड़क के किनारे के बिजली वाले पोल ऊँघ रहे थे और ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे साल भर की ठण्ड आज ही समाप्त हो जायेगी।

कुत्ते के पीछे पीछे चलते हुए वह रेक्सन स्ट्रीट से होकर तिलक रोड पर आये। यहाँ इस सड़क पर प्रकाश लाइन कदाचित फेल हो गई थी। पूरी सड़क पर इतना गहरा अन्धकार था कि विनोद को अपनी टार्च जलानी पड़ी।

चलते चलते कुत्ता एक चौराहे पर रुक गया। यहाँ ऐसा लग रहा था जैसे कुत्ता यह निर्णय करने का प्रयत्न कर रहा हो कि उसका शिकार किस ओर गया था।

कदाचित आधे मिनट के बाद कुत्ता फिर एक ओर चल पड़ा। विनोद ने हल्की सी सीटी बजाई, बिल्कुल उसी भाव में जैसे उसे विश्वास रहा हो कि वह उसी दिशा की ओर जायेगा।

कुत्ता अर्जुन पूरे की ओर जा रहा था।

"या खुदा ! यह हरामी कुत्ता पूरे शहर में घुमायेगा क्या।" हमीद अपने आप बड़बड़ाया।

अचानक कुत्ते ने सड़क पर एक चक्कर लगाया और फिर उसी ओर मुड़ा जिधर से अभी चलता हुआ आया था। अन्तर केवल इतना था कि अब वह सड़क के दूसरे किनारे पर चल रहा

था। फिर वह एक पब्लिक मूत्रालय के द्वार पर रुक गया।

"क्या यह आपसे कोई भजाक वाला सम्बन्ध रखता है कर्नल साहब!" हमीद झल्लाकर बोला।

किन्तु कुत्ता दूसरे ही क्षण गुर्राता हुआ मूत्रालय में घुस गया। विनोद भी झपटा! बस हमीद ने इतना ही देखा कि विनोद ने झुककर उसका पट्टा पकड़ लिया और उसे अपनी ओर खींचने लगा। हमीद के हाथ में टार्च थी और वह भली भाँति यह देख रहा था कि कुत्ता विनोद के बन्धन से निकल कर उस लाश पर झपट पड़ना चाहता था जो मूत्रालय के फर्श पर पड़ी हुई थी।

लाश का चेहरा बिगाड़ दिया गया था और उसे किसी धार वाले अस्त्र से कत्ल किया गया था। फर्श पर चारों ओर रक्त की लालिमा दिखाई दे रही थी। इसका अर्थ तो यही हो सकता था कि इस दुर्घटना के बाद से कोई इस मूत्रालय में नहीं आया था। या सम्भव है आया ही हो।

विनोद कुत्ते को खींचता हुआ मूत्रालय से निकल आया।

"जंजीर डाल दो—" विनोद ने धीरे से कहा।

"क्या यह वही आदमी है?"

"यद्यपि चेहरा बिगाड़ दिया गया है, मगर फिर भी मैं विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि यह वही आदमी है।"

"विश्वास का कारण मैं पूछ सकता हूँ?"

"इसके शरीर पर वही कपड़े हैं जो मैंने उस आदमी के शरीर पर देखे थे। मेरा विचार है कि यह काम फिंच के पार्टी का है। यह फिंच तो मेरे लिये डारकेन से भी अधिक रहस्य पूर्ण है।"

"क्या वह बन्दर···।"

"हाँ हाँ वही···ठहरो! मुझे कोतवाली फोन कर देना चाहिये।"

"क्या हम दोनों अकेले ही हैं?" हमीद ने पूछा।

"हाँ।"

"मैंने तो समझा था कि हमारे साथ गुप्त रूप में भी कुछ

आदमी होंगे। मैं यह सोच भी नहीं सकता था कि डारकेन जैसे खतरनाक आदमी के लिये आप अकेले निकलेंगे।"

"किला नहीं फतह करना था पगले, केवल जासूसी करनी थी। ऐसे अवसरों पर भीड़भाड़ साथ रखने से काम खराब हो जाया करता है।"

हमीद चुप हो गया।

कोतवाली फोन करने के बाद वह फिर उसी मूत्रालय के पास पहुँच गये। वहाँ उन्हें सवेरे पाँच बजे तक ठहरना पड़ा।

घर पहुँच कर नित्य क्रिया तथा जल पान से छुट्टी पा जाने के बाद विनोद ने हमीद से कहा कि वह कुछ देर सोना चाहता है। हमीद के लिये यह बिल्कुल नई बात थी। उसने आज तक विनोद को दिन में सोते नहीं देखा था। वह दिन को कभी नहीं सोता था चाहे पिछली कई रातें जाग कर ही क्यों न व्यतीत की हों।

हमीद का भी नींद के मारे बुरा हाल था इसलिये उसने इस परिवर्तन का कारण उससे नहीं पूछा।

हमीद चार बजे सन्ध्या तक सोता रहा। उसने कमरे का दरवाजा अन्दर से बन्द कर लिया था ताकि विनोद उस तक न पहुँच सके, मगर उसे विनोद ही के कारण जागना पड़ा।

ठीक चार बजे विनोद ने उसके कमरे का दरवाजा पीटना आरम्भ कर दिया था।

उसने उठकर दरवाजा खोला।

"अभी तक नींद नहीं पूरी हुई तुम्हारी?"

"हो गई—" हमीद ने जबरदस्ती मुस्करा कर कहा।

"मैंने तुम्हें केवल यह बताने के लिये जगाया है कि लाली मुझे बहुत अच्छी लगती है।"

"हाँय!" हमीद आँखें फाड़ कर बोला—"तब जगाने की क्या आवश्यकता थी। सोते ही में जहर का इन्जेक्शन दे दिया होता।"

"नहीं यार! बिना प्रतिद्वन्दी के इश्क करने का क्या मजा?"

"अरे! आप तो घिसे हुए आशिक मालूम होते हैं।"

"सुनो !" विनोद बोला—"इस समय हमें उसी दूतावास के एक निमन्त्रण में चलना है जिसका केस हमारे हाथ में है।"

"यह किस उत्सव में ?"

"उनके राष्ट्र की वर्ष गाँठ है।"

"आपके पास निमन्त्रण पत्र आया है ?"

"तुम क्या समझते हो कि हम ऐसे ही चले जायेंगे।"

"मगर पहले तो किसी दूतावास के निमन्त्रण में हमें आमंत्रित नहीं किया गया।"

"यह बात नहीं है। हमें बराबर निमन्त्रण मिलते रहते हैं। हम खुद ही नहीं जाते।"

विनोद उसे तैयार रहने का आदेश देकर चला गया।

हमीद को इस निमन्त्रण पर आश्चर्य था और यह आश्चर्य उस समय दूर हुआ जब वह विनोद के साथ वहाँ पहुँच गया। वास्तव में बात यह थी कि दूतावास ने इस महोत्सव के सिलसिले में सरकारी तौर पर कर्नल विनोद और कैप्टेन हमीद की सेवायें प्राप्त की थीं, केवल इसलिये कि इस उत्सव में किसी प्रकार की कोई गड़बड़ी न होने पाये।

फिर विनोद ने हमीद को समझा दिया।

"देखो हमीद ! यह राजदूत नम्बरी चतुर और चालबाज मालूम होता है। हमारी ही सेवायें प्राप्त करके यह प्रकट करना चाहता है कि वह अपने उन गुप्त शत्रुओं से भयभीत है जिन्होंने दूतावास को बदनाम करने के लिये वहाँ एक कत्ल कर दिया था। तुम यह भी जानते हो कि आज कल पश्चिमी देशों में ठन्डा युद्ध हो रहा है, अतः हमारा राष्ट्र इसे स्वीकार कर लेगा कि कोई तीसरा देश हम दोनों के सम्बन्ध खराब करना चहता है।"

"मैं समझ गया—" हमीद ने सर हिला कर कहा।

"यह बड़ा अच्छा हुआ—" विनोद ने मुस्कुरा कर कहा—"नहीं तो तुम्हें समझाने के लिये तो प्रायः बड़ी देर तक सर मारना पड़ता है।

विनोद ने अपने विभाग के तीन सब इन्स्पेक्टर भी वहाँ लगा रखे थे, विभिन्न स्थान पर उनकी ड्यूटियाँ लगाई गई थीं। ऐसा प्रतीत हो रहा था मानों विनोद को विश्वास हो कि इस उत्सव में अवश्य उत्पात मचेगा।

"क्या आपको यहां फिच की पार्टी का भी कोई आदमी दिखाई पड़ा ?" हमीद ने पूछा।

"नहीं, उनमें से तो कोई दिखाई नहीं पड़ा जिन्हें मैं जानता हूँ।"

"अगर मेरी नाक चिपटी होती तो मजा आ जाता—" हमीद ने कहा।

"क्यों ?"

"वह चीनी लड़की मुझे बड़ी अच्छी लग रही है—" हमीद ने एक ओर संकेत करके कहा।

"ओह !" विनोद इतना ही कह कर दूसरी ओर देखने लगा, फिर बोला—

"हमीद !"

"जी।"

"उस आदमी को देख रहे हो जो उस लड़के के पीछे खड़ा है ?"

"हाँ—क्यों ?"

"उसके हाथ में कितनी सुन्दर छड़ी है।"

"मुझे तो कोई विशेषता नहीं दिखाई पड़ रही है, एक साधारण सी बेंत जिस पर रंगीन तार लिपटे हुये हैं।"

"क्या इससे पहले भी इस प्रकार की कोई छड़ी तुमने देखी थी।"

"मुझे याद नहीं—" हमीद चिढ़ कर बोला—"आखिर आपने यह कौन सी बात छेड़ दी।"

"कुछ नहीं—बस वैसे ही—" विनोद ने कहा और धीरे धीरे चलता हुआ उस आदमी के पास पहुँच गया।

हमीद ने देखा कि अब भी विनोद की दृष्टि उसी आदमी की छड़ी पर जमी हुई है। विनोद की इस संलग्नता से हमीद

को भी दिलचस्पी हो गई। उसने भी समीप जाकर उस छड़ी को ध्यान पूर्वक देखा, मगर अपने विचार से एक इन्च भी हट नहीं सका, अर्थात वह एक साधारण सा बेंत था जिसे विभिन्न रंगों के तार से लपेट कर सुसज्जित किया गया था, इसमें सन्देह नहीं कि इस प्रकार की छड़ी आज तक उसने नहीं देखी थी, मगर इस आधार पर वह उस छड़ी को कोई महत्व नहीं दे सकता था, क्योंकि वह थी एक छड़ी ही। बनावट के विचार से चाहे जैसी भी रही हो।

थोड़ी देर के बाद न तो उसे यही याद रहा कि वह विनोद के साथ यहाँ आया था और न उसे उस छड़ी और छड़ी वाले का ही ध्यान रह गया, इसका कारण यह था कि अब नृत्य आरम्भ हो गया था। सारा हाल मधुर संगीत की मादकता से झूम रहा था। नौजवान जोड़े चिकने फर्श पर थिरकने लगे थे।

हमीद दिल ही दिल में अपने भाग्य को कोसने लगा, यहाँ इस समय कई जातियों की सुन्दर तथा चंचल लड़कियाँ मौजूद थीं। ऐसा अन्तर्राष्ट्रीय शुभ अवसर इस प्रकार हाथों से निकला जा रहा था। उसका कलेजा खून हो रहा था, काश वह इस समय ड्यूटी पर न होता। वह हसरत भरी नजरों से नाचने वाले जोड़ों को देख रहा था कि अचानक उसकी दृष्टि विनोद पर पड़ी, जो दूर खड़ा उसे अपनी ओर आने का संकेत कर रहा था।

हमीद तेजी से उसकी ओर बढ़ा।

विनोद उसे अपने पीछे आने का संकेत करके एक ओर चलने लगा था।

हमीद शीघ्र ही उनके समीप पहुँच गया।

"उस आदमी पर दृष्टि रखो—" विनोद ने कहा और हमीद की दृष्टि उस आदमी पर पड़ी जिसकी छड़ी ने विनोद को अपनी ओर आकृष्ट कर लिया था।

"क्यों उस गरीब के पीछे पड़ गये हैं आप ?" हमीद ने कहा—"यदि वह छड़ी आपको पसन्द आ गई हो तो कहिये।

मैं उससे प्रार्थना करूँगा कि वह छड़ी आपको....।"

"बकवास मत करो—" विनोद ने उसे वाक्य पूरा नहीं करने दिया।

वह आदमी टहलता हुआ सीढ़ियों की ओर जा रहा था। वह सीढ़ियाँ हाल के फर्श को हाल की ऊपर वाली गैलरी से मिलाती थीं।

वह सीढ़ियों पर चढ़ने लगा। वह अकेला नहीं था। उसके आगे पीछे और लोग भी थे। वास्तव में बहुत से अतिथिगण ऊपर गैलरी से नृत्य देख रहे थे और कुछ इसी ध्येय से अब भी ऊपर जा रहे थे।

विनोद और हमीद भीड़ में मिल गये। मगर उनकी निगाहें अब भी छड़ी वाले आदमी पर ही थी। वह उसी के पीछे लगे रहे। हमीद की दिलचस्पी अब पहले से अधिक हो गई थी, क्योंकि वह आदमी यदि तमाशा देखने वालों में से होता तो गैलरी की ओर जाता, मगर वह तो गैलरी की दूसरी ओर वाले आँगन की ओर जा रहा था।

वह हाल जहाँ नृत्य हो रहा था अर्ध चन्द्राकार था और ऊपर वाली गैलरी भी ऐसी ही थी। दूसरी ओर आँगन में जाने के लिये इसमें कई दरवाजे लगे हुये थे। बाहर आँगन में पहुँच कर उन्हें ऐसा लगा जैसे भूमध्य रेखा से ध्रुव में पहुँच गये हों। ठण्ड के मारे शरीर के खुले हुये अंग ठिठुरने लगे थे।

आँगन में यद्यपि अँधेरा था मगर नक्षत्रों के प्रकाश में वह उस आदमी की छाया सरलता पूर्वक देख सकते थे। वह थोड़ी देर के लिये रुका और फिर चलने लगा। फिर उन्होंने उस आदमी को गैलरी के अन्तिम द्वार में प्रविष्ट होते हुये देखा। वह दोनों पंजों के बल तेजी से चलते हुये उसकी ओर बढ़े—और फिर हमीद ने जो दृश्य देखा, उसने विनोद की महानता उसकी दृष्टि में और बढ़ा दी। अब उस छड़ी का महत्व प्रकट हो चुका था। उसमें लिपटा हुआ एक तार खुल गया था और वह छड़ी मध्य से लचक कर धनुष का रूप धारण कर चुका था। हमीद सन्नाटे में आ गया। पता नहीं कौन आदमी उस तीर का लक्ष्य बनने वाला था जो बड़ी सावधानी से उस धनुष पर चढ़ाया जा रहा

था। गैलरी का यह भाग जन विहीन था और प्रकाश भी मन्द था। कारण यह था कि यह गैलरी उस स्थान पर पड़े हुये पर्दों के कारण कई भागों में विभाजित हो गई थी। संयोग वश इस समय उस भाग का पर्दा खिचा हुआ था इसलिये वह आदमी दूसरी ओर बैठे हुये थे लोगों की दृष्टि से सुरक्षित हो गया था।

"बच्चों का यह खेल भयंकर भी हो सकता है—" अचानक विनोद ने आगे बढ़कर खिचे हुये धनुष पर हाथ डालते हुये कहा।

उस आदमी के हाथ से धनुष बाण गिर गये और वह बौखला कर पलटा।

विनोद का घूँसा उसके ललाट पर पड़ा। पहले तो वह गैलरी की रेलिंग से टकराया, फिर दूसरी ओर हाल में उलट गया। उसके मुख से निकलने वाली चीख संगीत की लहरों पर भारी हो गई। सहसा ऐसा प्रतीत हुआ जैसे लोगों की साँसें रुक गईं हो। एक क्षण के लिये मौत की सी स्तब्धता छा गई।

फिर कोलाहल मच उठा।

विनोद ने झुककर फर्श से तीर और कमान उठा लिए।

फिर वह नीचे आये। यहाँ चारों ओर प्रलय मचा हुआ था। लोग भाग रहे थे। औरतें चीख रही थीं।

सहसा कोई वस्तु अपनी पूरी शक्ति से हमीद के शरीर से टकराई और वह उछल पड़ा। एक तीर उसके चरणों के पास पड़ा हुआ था। उसने तत्काल ही रिवाल्वर निकाल लिया। यदि उसने कपड़ों के नीचे बुल्ट प्रूफ न पहिन रखा होता तो दूसरे संसार की यात्रा सरल हो जाती।

फिर पूरा हाल प्रकाश विहीन हो गया। चीखें तेज हो गईं। हमीद एक ओर दीवार से जा लगा।

इसके अतिरिक्त वह कुछ और कर भी नहीं सकता था। इस भाग दौड़ में उसको दिशाओं का भी ज्ञान नहीं रह गया था वर्ना वह बाहर निकलने की चेष्टा करता।

कोलाहल बढ़ता जा रहा था। चीत्कारों से कान में पड़ी

आवाज भी नहीं सुनाई दे रही थी। लोग कदाचित आपस में टकराकर एक दूसरे को बुरा भला कहने लगे थे।

लगभग तीन मिनट बाद अन्धकार दूर हो गया और हाल फिर प्रकाश से जगमगाने लगा। लोग गिरते पड़ते दरवाजों की ओर भागने लगे। हमीद जहाँ था वहीं रहा। अचानक उसने माइक पर विनोद की आवाज सुनी।

"ठहरिये! इस प्रकार भागने से आप लोग हानि भी उठा सकते हैं।"

लोग एक क्षण के लिये रुके और फिर भागने लगे।

दो मिनट के अन्दर ही अन्दर हाल खाली हो गया।

अब यहाँ तीन लाशें दिखाई दे रही थीं। एक तो उसी आदमी की थी जिसे विनोद ने ऊपरी गैलरी से नीचे फेंका था और दो लाशें उन सब इन्स्पेक्टर की थी जो विनोद के साथ यहाँ आये थे। उनके कपड़ों के नीचे भी बुल्ट प्रूफ थे, मगर मृत्यु से कौन बचा सकता है। जहरीला तीर एक की गर्दन में लगा था और दूसरे के ललाट में। विनोद ने उन्हें उनके वस्त्रों से पहचाना नहीं तो उनके चेहरे सूजन के कारण बिल्कुल बिगड़ गये थे।

दस मिनट के बाद शसस्त्र पुलिस की एक टोली वहाँ आ गई।

"बड़ी विचित्र बात है—" हमीद ने विनोद की ओर देख कर कहा।

विनोद मौन रहा। वह डी० एस० पी० सिटी की ओर देख रहा था जिसने आते ही सारे दरवाजे बन्द करा दिये थे।

"अब यह श्रीमान जी क्या करेंगे—" विनोद ने धीरे से हमीद से कहा।

डी० एस० पी० सिटी कदाचित यह सोच रहा था कि विनोद खुद ही आगे बढ़कर उसे कुछ बतायेगा मगर विनोद जहाँ था वहीं खड़ा रहा।

इतने में एक द्वार खुला और राजदूत कुछ आदमियों के

साथ अन्दर आया। पहले वह डी० एस० पी० से कुछ कहता रहा, फिर विनोद की ओर बढ़ा।

"मैं एक बार फिर कहता हूँ कि फिंच को मेरे हवाले कर दिया जाये, नहीं तो परिस्थिति इससे भी अधिक भयंकर और शोचनीय हो सकती है—" विनोद ने कहा।

"मैं किसी फिंच को नहीं जानता कर्नल विनोद! विश्वास करो—" राजदूत ने कहा।

विनोद कुछ नहीं बोला। वह दूसरी ओर देखने लगा।

दस बज गये थे। कानूनी कार्यवाहियों के बाद वह बाहर निकले। विनोद ने कार में बैठते हुये कहा—

"जानते हो उस जहरीले तीर का लक्ष्य कौन बनता?"

"नहीं—मैं देख ही नहीं सका था।"

"फिंच।"

"नहीं—" हमीद बौखला कर बोला।

"मैं ठीक कह रहा हूँ हमीद।"

"फिर आपने उसे क्यों निकल जाने दिया?"

"बस निकल गया, बात यह है कि मैंने उसे उस समय देखा जब धनुष पर बाण चढ़ चुका था, फिंच ऊपर वाली गैलरी ही में था।"

"मेरी समझ में नहीं आता कि वह कौन सा पार्ट अदा कर रहा है।"

"ईश्वर ही जानता है।"

"आपने ड० डारकेन को बेकार ही छेड़ा—" हमीद बोला।

"अच्छा! तो क्या तुम यह समझते हो कि उसके जहरीले तीर मुझे अपने मार्ग से हटा देंगे। यह और बात है कि इस समय मैं उससे हाथ उठा लूँ, मगर यह विचार कि मैं उसका पीछा छोड़ दूँगा बेकार है। डारकेन और फिंच के मध्य जो कुछ भी हो रहा है मुझे उसकी चिन्ता नहीं है। मैं तो वास्तव में लाल गुलाबों के ही चक्कर में हूँ, क्योंकि मेरे अनुसन्धान का प्रारम्भ वहीं से हुआ था।"

"आपने तारा नाइडो को भी चेक नहीं किया ?"

"उसे चेक करने से लाभ ही क्या, मैं तुमसे पहले ही कह चुका हूँ कि वह अपने वचन का उपाय निकाल सकती है।"

"फिर उसे बन्धन में कैसे लिया जा सकता है ?"

"तुम इसकी चिन्ता मत करो, कोई आधार मिल जायेगा।"

कार सड़कों पर दौड़ती रही। हमीद ने थोड़ी देर बाद कहा—

"मैं बहुत थक गया हूँ मुझे आर्लेक्चनू में उतार दीजिये। मेरी दशा ठीक नहीं है। मैं अपने दोनों सब इन्स्पेक्टरों की लाशों को कभी न भूल सकूँगा।"

"नहीं—अब सीधे घर चलो, नहीं तो सम्भव है इस बार वह तीर तुम्हारी ही गर्दन छेद कर रख दे।"

"मुझे इसकी चिन्ता नहीं है, मगर घर इस समय मुझे खा जायेगा।"

"अच्छी बात है—" विनोद बोला।

"आप यह मत समझियेगा कि मैं इस समय तफरीह के मूड में हूँ, मैं बस समय व्यतीत करना चाहता हूँ।"

"मुझे कोई आपत्ति नहीं है—" विनोद बोला—"मैं स्वयं यह नहीं पसन्द करता कि आदमी खतरों से डर कर चूहे के बिल में घुस जाये।"

विनोद ने उसे आर्लेक्चनू के सामने उतार दिया।

हमीद वास्तव में इस समय मनोरंजन के मूड में नहीं था, वह कुछ देर अकेला रहना चाहता था। सम्भव है यह प्रभाव उन घटनाओं का रहा हो जो अभी घटित हुई थी।

वह जैसे ही आर्लेक्चनू में दाखिल हुआ उसकी दृष्टि लाली पर पड़ी और उसने उल्टे पाँव वापस जाना चाहा, मगर लाली स्वयं उठकर उसकी ओर बढ़ी और हमीद को विवश होकर रुकना पड़ा।

"तुम मुझे देखकर भागे क्यों जा रहे थे ?" लाली ने उसका हाथ पकड़ कर कहा।

"आज मेरी तबियत ठीक नहीं है।"

"क्या बात है ?"

"पता नहीं—" हमीद कहता हुआ उसी मेज की ओर बढ़ा जिस पर लाली बैठी हुई थी।

दोनों बैठ गये।

"मुझे बताओ कि बात क्या है ?"

"कोई बात नहीं है, मेरे कान मत खाओ।"

"मैं भोजन कर चुकी हूँ नहीं तो तुम्हें ही खा जाती, कान तो कान ही है।"

"मैं काफी पीना चाहता हूँ, बहुत थक गया हूँ।"

"तुम मेरा रक्त भी पी सकते हो, मगर इतने शुष्क स्वर में मुझसे बातें न किया करो।"

लाली ने एक वेटर को बुलाकर काफी का आर्डर दिया, फिर हमीद से बोली—

"काफी पी लो फिर मैं तुम्हें अपनी एक ऐसी सहेली से मिलाऊँगी जो तुमसे मिलने के लिये अत्यन्त उत्सुक है।"

"क्या वह उत्सुक है ?"

"हाँ—लेकिन तुम्हें आश्चर्य क्यों है ?"

"क्योंकि मैंने आज तक किसी औरत का नाम उत्सुक नहीं सुना।"

लाली हँसने लगी।

फिर काफी आ गई और दोनों पीने लगे।

"तुम्हारी सहेली मुझसे क्यों मिलना चाहती है ?" हमीद ने पूछा।

"उसे सनकी आदमी बहुत अच्छे लगते हैं।"

"मैं सनकी हूँ ?" हमीद ने क्रोधित होकर कहा।

"लाली फिर हँसने लगी।

हमीद सोचने लगा कि दिल तो कुछ बहलने लगा है। चलो इसकी सहेली को भी देख लें। सम्भव है वह इससे भी अधिक दिलचस्प हो।

काफी पीने के बाद हमीद ने पाइप सुलगाया और जैसे ही पहला कश लगाया वैसे ही लाली ने अपने वैनिटी बैग से सिगरेट का एक पैकेट निकाला। हमीद उसे आश्चर्य पूर्वक देखने लगा।

"इस प्रकार क्यों देख रहे हो ?"

"तुम्हें नहीं, तुम्हारे पैकेट को देख रहा हूँ।"

"मगर क्यों ? तुमने ही तो कल कहा था कि मैं तमाशू मिया करूँ—" लाली ने बड़े स्वाभाविक ढंग से कहा।

"अगर मैं कहूँ कि तुम कूयें में कूद पड़ो तो तुम कूद जाओगी ?"

"कह कर देख लो।"

"ठीक है। मैं कह रहा हूँ। मुझे कल सवेरे तुम्हारी लाश मिलनी चाहिये।"

"बड़े कठोर हो—" लाली ने प्यार भरे स्वर में मुँह बना कर कहा—"औरतों से इसी प्रकार बातें की जाती हैं।"

"की जाती हो या न की जाती हो, मगर मेरा विचार है कि इसी प्रकार बातें करनी चाहिये, क्योंकि मैं पुरुषों और स्त्रियों में कोई अन्तर नहीं समझता और क्यों समझूँ जब कि नारियाँ पुरुषों से कन्धा मिला कर काम करने का दावा रखती हैं।"

"तर्क करोगे ?"

"बस औरतों से मैं एक तर्क ही नहीं कर सकता।"

"क्यों ?"

"इसलिये कि पुरुष के साथ काम कर दिखा देने का दावा करने वाली औरतें भी तर्क में अपना नारीपन जताये बिना नहीं रह सकतीं।"

"मैं समझ गई—" लाली ने हँसकर कहा—"आज भी तुम्हें अपने उल्लू होने का अनुभव है।"

"आजकल मैं चौबीस घन्टे उल्लू ही रहता हूँ—बस चलो! देखूँ तुम्हारी सहेली साहिबा किस स्प्रिट से भेजा चाट सकती हैं।"

"ठहरो। मैं फोन करके मालूम कर लूँ कि वह जाग रही है या सो गई है—" लाली ने कहा और उठकर चली गई।

तीन चार मिनट के बाद वह वापस आई और फिर दोनों होटल से बाहर निकल आये।

"ओह! क्या अपनी गाड़ी नहीं लाये ?" लाली ने उदास

होकर कहा ।

"नहीं, मैं टैक्सी में आया था ।"

"तो फिर टैक्सी ही में चलो—वैसे तुम्हारी गाड़ी होती तो अच्छा रहता, क्योंकि मैंने उसे बताया था कि तुम्हारी गाड़ी बड़ी शानदार है ।"

हमीद कुछ नहीं बोला ! उसने एक टैक्सी की ओर ड्राइवर से कहा—

"विल्माट हाउस चलो ।"

"विल्माट हाउस ।" हमीद बोला—"वहाँ तो कदाचित कोई विदेशी व्यापारी रहता है ।"

"हाँ—मेरी सहेली सूफिया एक फ्रेन्च लड़की है ।"

"ओह !" हमीद चुप हो गया ।

टैक्सी शीघ्र ही विलमाट हाउस पहुँच गई । यह एक बड़ी ही शानदार इमारत थी । लाली ने टैक्सी फाटक ही पर रुकवा दी थी । हमीद ने ड्राइवर को पैसे दिये ।

फिर वह इमारत के बाहरी बरामदे में आये जो ट्यूब लाइट के प्रकाश से प्रकाशित हो रहा था । एक नौकर उन्हें देखकर आगे बढ़ा । लाली ने उसे अपना परिचय कार्ड देते हुये कहा ।

"सूफिया से मेरा सलाम कह दो ।

नौकर कार्ड लेकर चला गया, फिर दो या तीन मिनट बाद वापस आकर उनसे अन्दर चलने की प्रार्थना की ।

हमीद इस इमारत में आज प्रथम बार आया था ।

नौकर ने उन्हें लाकर एक सुसज्जित कमरे में बैठाया और स्वयं वापस चला गया ।

किन्तु दूसरे ही क्षण हमीद उछल कर खड़ा हो गया ।

"यह क्या ?" वह लाली को घूरता हुआ बोला—"कदाचित उसने दरवाजा बाहर से बन्द कर दिया है ।"

"नहीं ···ऐसा कैसे हो सकता है । तुम्हें भ्रम हुआ है ।"

"तुम स्वयं इस भ्रम का निवारण कर लो–" हमीद बोला।

लाली उठी और दरवाजा खोलने की चेष्टा करने लगी, मगर वह वास्तव में बाहर से बन्द कर दिया गया था।

"क्यों ? क्या मतलब है इसका ?" हमीद गरज उठा।

"मैं क्या बताऊँ···ठहरो ! सम्भव है सूफिया ने मजाक किया हो।"

"ठीक है, मगर वह भी सोच ले कि मेरे साथ मजाक करने का परिणाम होता है, मृत्यु को गले लगाना !"

"बस इतने ही में जान निकलने लगी—" लाली ने हँसकर कहा—"यह मजाक ही है मेरे प्यारे उल्लू···अभी सुनना सूफिया का अट्टहास।"

ठीक उसी समय बाहर से किसी औरत की आवाज सुनाई पड़ी।

"लाली···लाली।"

"कौन ! सूफिया ?" अन्दर से लाली ने कहा।

"हाँ हाँ···क्या वह तुम्हारे साथ है ?"

"हाँ—और तुम पर बिगड़ रहा है।"

"क्यों ? किस लिये ?"

"वह इस प्रकार का मजाक पसन्द नहीं करता।"

"उसे शीघ्र ही मालूम हो जायेगा कि पसन्द न होने में कितना लाभ होता है। दुख है कि मैंने तुम्हें धोखा देकर उसे यहाँ बुलवाया। वास्तव में वह हम लोगों का शत्रु है, एक भयंकर शत्रु ! इसलिये अब उसके जीवित रहने का प्रश्न ही नहीं पैदा होता।"

"अरे क्यों ऐसा मजाक करती हो—" लाली हँसी।

"मैं मजाक नहीं कर रही हूँ। तुम्हें अभी सब कुछ मालूम हो जायेगा। इस काम के लिये तुम्हें इतना ही पुरस्कार मिल सकता है कि तुम्हारी हत्या न की जाये।"

"यह तो किसी ड्रामे का रिहरसल मालूम होता है—" लाली फिर हँसने लगी। मगर इस बार प्रतिउत्तर में उसे केवल

पद ध्वनि सुनाई पड़ी जो क्रमशः दूर होती जा रही थी।

"हे भगवान! तो क्या वह सच कह रही है—" लाली ने भयभीत होकर कहा—"क्या तुमने उसका कुछ बिगाड़ा है?"

"मैं नहीं जानता—" हमीद होंठ सिकोड़ कर बोला—"मगर इतना याद रखो कि यहाँ रक्त की नदियाँ बह जायेंगी।"

"देखो प्यारे! ऐसी बातें न करो! मुझे विश्वास है कि यह मजाक ही है।"

सहसा हमीद की दृष्टि मेज पर रखे हुये टेलीफोन पर पड़ी और उसका चेहरा चमक उठा, मगर वह टेलीफोन को ओर बढ़ा ही था कि लाली ने उसे ललकारा।

"अगर तुमने फोन में हाथ भी लगाया तो गोली मार दूंगी।"

हाँय!" हमीद बौखला कर मुड़ा और उसे लाली के हाथ में अपना ही रिवाल्वर दिखाई पड़ा। कदाचित उसने किसी समय उसकी जेब से निकाल लिया था।

"तुम फोन नहीं कर सकते—" लाली ने फिर कहा। अब वह पहले से भिन्न दिखाई दे रही थी। उसके चेहरे पर अब वह भोलापन नहीं रह गया था। उसने फिर कहा—

"तुम कर्नल विनोद को फोन नहीं कर सकते। इन गधों को मैं क्या कहूँ कि ऐसे कमरे में छोड़ गये जहाँ टेलीफोन मौजूद है।"

"ओह! देखो! सुनो!" हमीद अपने दोनों हाथ ऊपर उठाये हुये उसकी ओर बढ़ने लगा—"मैंने तुम्हारा··· क्या बिगाड़ा है·· तुम मेरी मित्र थीं न···।"

लाली पीछे हटती रही और फिर हमीद ने अचानक उस पर छलाँग लगा दी। दूसरे ही क्षण रिवाल्वर उसके हाथ में था और लाली फर्श पर पड़ी हुई उसे भय पूर्ण नेत्रों से देख रही थी।

"अब तुम बताओ! अगर आवाज निकली तो अपना काम तमाम ही समझना—" हमीद ने कहा।

उसने रिवाल्वर की नाल उसकी ओर किये हुये विनोद के

नम्बर डायल किये। यह उसका सौभाग्य ही था कि उस समय विनोद घर ही पर था। हमीद ने जल्दी जल्दी उसे बताया कि वह विलमाट हाउस में फँस गया है और फिर वह कथा को दुहरा ही रहा था कि पीछे से किसी ने उसके सर पर आघात किया। हमीद ने गिरते गिरते फायर कर दिया, मगर बेकार। गोली किसी को भी नहीं लग सकी····"

और फिर वह अचेत हो गया।

जब उसकी चेतना लौटी तो उसे प्रतीत हुआ कि वह हवा में उड़ा जा रहा है, मगर शीघ्र ही यह बात उसकी समझ में आ गई कि वह किसी बन्द गाड़ी में यात्रा कर रहा है जो तीव्र गति से जा रही है।

यह यात्रा भी शीघ्र ही समाप्त हो गई, गाड़ी किसी स्थान पर रोक दी गई थी। हमीद के हाथ पाँव स्वतन्त्र थे।

अचानक गाड़ी के अन्दर प्रकाश घुस आया, कदाचित दरवाजा खोला गया था। फिर किसी ने उससे उतरने को कहा। हमीद चुपचाप नीचे उतर आया, लेकिन उसे यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि गाड़ी एक लम्बे चौड़े कमरे में खड़ी है, यह एक काले रंग की बड़ी सी वान थी, उस कमरे में ड्राइवर सहित छः आदमी थे। उनमें से दो को हमीद अच्छी तरह पहचानता था एक तो लाली थी और दूसरा वह राजदूत जिसे इन तमाम फसादों की जड़ कहना अनुचित न होगा, वह हमीद की ओर देखकर मुस्कुरा रहा था।

"हलो माई डियर कैप्टन !" लाली मुस्कुराई—"तुम लोग वास्तव में बड़े चालाक हो।"

"जी हाँ····वास्तव में हम लोग बड़े चालाक हैं--" हमीद ने कहा।

"अभी वह श्रीमान जी भी इसी प्रकार लाये जा रहे होंगे जो तुमसे भी अधिक चालाक हैं।"

"कौन ?" हमीद ने जान बूझ कर पूछा।

"कर्नल विनोद ! जो अपने को सम्राट जासूस कहते हैं और जिन्हें अपनी योग्यता पर बड़ा गर्व है···गर्व नहीं बल्कि अभिमान

है···मगर न कहना कैप्टन ! यह चाल कितनी शानदार थी, संसार में कौन ऐसा गधा है जो अपने शिकार को ऐसे कमरे में बन्द करेगा जहाँ फोन मौजूद हो ! विनोद ने फोन पर तुम्हारी चीत्कार और फायर की आवाज भी सुनी होगी । प्रकट है कि इन दोनों वस्तुओं ने उसे विलमाट हाउस आने पर विवश कर दिया होगा । इसके आगे अब तुम स्वयं सोचो कि विलमाट हाउस जो अब बिल्कुल वीरान है क्या तुम्हारे कर्नल के लिये चूहेदान नहीं बन जायेगा ? क्या वह चूहा उसमें नहीं फँस जायेगा ?"

"मेरे खुदा ।" हमीद अपना माथा रगड़ता हुआ बड़बड़ाया ।

"और फिर—" लाली आनन्द लेती हुई बोली—"तुम दोनों मौत के घाट उतार दिये जाओगे ।"

हमीद कुछ नहीं बोला, वह राजदूत की ओर देखने लगा था । जिसके अधरों पर अब भी वही विष में बुझी व्यंगात्मक मुस्कान थी ।

"योर एक्सेलेन्सी ! हम लोगों का अपराध ।" हमीद ने राजदूत को सम्बोधित किया ।

"हर मामले में टाँग अड़ा देना बुरा होता है—" राजदूत ने गम्भीरता से कहा ।

"कदाचित आप भी डाक्टर डारकेन के तीरों का शिकार बनना चाहते हैं ।"

"डारकेन !" राजदूत ने चकित होकर कहा—"तुम जानते हो ?"

"हमीद दी ग्रेट क्या नहीं जानता ।"

कुछ देर के लिये स्तब्धता छा गई । फिर हमीद ने कहा—

"यह औरत मुझसे शादी करने वाली थी अतः इसके वैधव्य का तो विचार आपको करना ही चाहिये । यदि यह विवाह से पहले ही विधवा हो गई तो मुझे बड़ा दुख होगा ।"

"लेकिन यह तो···।"

"हिन्दू है—" यही कहना चाहते हैं न आप···मगर मैं जानता हूँ कि यह हिन्दू नहीं है, यह मुसलमान है और इसका असली नाम कहकशाँ है ।"

"बकवास मत करो—" लाली ने गरज कर कहा—"तुम अपनी समझ से मुझे मूर्ख बना रहे थे।"

"मूर्ख तो तुम अब भी बन रही हो डार्लिंग मगर तुम समझ नहीं सकोगी ···लेकिन इतना याद रखो कि अगर तुम लोगों ने विनोद को कत्ल करने से पहले मेरी हत्या की तो बड़ी हानि में रहोगे।"

"क्यों ?" राजदूत ने पूछा।

"कर्नल विनोद कुमार ने अभी तक तुम लोगों के प्रति अपनी रिपोर्ट नहीं पेश की है, लेकिन वह जानते सब कुछ हैं। उन्होंने सारे कागजात पूरे कर लिये हैं और यह बात केवल मैं ही जानता हूँ कि वह ऐसे कागजात कहाँ रखते हैं।"

"फिर तुम क्या चाहते हो ?" राजदूत ने व्याकुल होकर पूछा।

"यही कि विनोद के कत्ल करने से पहले मुझे कत्ल मत करना नहीं तो कागजात विभाग के हाथ लग जायेंगे। तुम उन्हें मार भी डालो तब भी वह नहीं बतायेंगे, वह कुछ इसी प्रकार के आदमी हैं। कागजात तुम्हें केवल मुझसे मिल सकेंगे वर्ना हमारे विभाग के हाथ लग जायेंगे।"

ठीक उसी समय एक और वान कमरे में घुसती चली आई, वह भी काले रंग की थी और ठीक वैसी ही थी। जिस पर हमीद लाया गया था।

"ले आये ?" लाली ने हर्षित होकर पूछा।

"हाँ—" ड्राइवर ने कहा।

"शाबाश ! उतार दो उसे !"

वान का दरवाजा खुला और दो आदमी एक ऐसे आदमी को उठाये हुये बाहर आये जिसके हाथ पाँव रस्सियों से जकड़े हुये थे और उसके सर पर काले रंग का इतना बड़ा गिलाफ चढ़ा हुआ था कि पूरा चेहरा छिप गया था।

लाली ने आगे बढ़कर गिलाफ उसके सर से खींच लिया, लेकिन साथ ही साथ वह चीख भी पड़ी, फिर गरज कर बोली—

"क्या तुम लोग घास खा गये हो ! यह तो अपना आदमी है।"

वह दोनों बौखला कर उसकी ओर बढ़े, मगर उस पर दृष्टि पड़ते ही इस प्रकार ढीले पड़ गये जैसे अचानक गुब्बारों से हवा निकल गई हो।

हमीद अट्टहास कर उठा और फिर बोला—

"देखा तुमने ! मैं कह रहा था ना कि तुम अब भी मूर्ख बन रही हो।"

"अच्छा तो तुम जाओ—" लाली ने अपने ब्लाउज से पिस्तौल निकालते हुये कहा।

"ठाँय !" एक फायर हुआ, मगर हमीद उसी प्रकार खड़ा रहा जैसे पहले खड़ा था और लाली के हाथ से पिस्तौल निकल कर दूर जा पड़ा था। वह बायें हाथ से इस प्रकार दाहिना हाथ दबाये हुये थी जैसे उसकी कलाई के निकल भागने की सम्भावना हो।

"ऐसा भी क्या मिस तारा नाइडो !" कमरे में विनोद की आवाज गूँजी जो बाद में आने वाली वान से निकल रहा था—"यह इतना बोदा भी नहीं है कि औरतों के हाथ से मरे, वैसे यह औरतों पर खुद बुरी तरह मरता है।"

तारा नाइडो का नाम सुनकर हमीद की आँखें फैल गईं।

विनोद आठ आदमियों में अकेला खड़ा था, मगर किसी में इतना साहस नहीं था कि उसकी ओर पाँव बढ़ा सकता, क्योंकि उसके दोनों हाथों में पिस्तौल थे और बारह राउन्ड में से केवल एक राउन्ड चलाया गया था, ग्यारह राउन्ड अभी शेष थे।

"मैं जरा डारकेन के चक्कर में पड़ गया था सर !" विनोद ने राजदूत को सम्बोधित करते हुये परिहास जनक स्वर में कहा—"नहीं तो यह खेल कब का समाप्त हो गया होता। लाल गुलाब बहुत दिनों से मेरी दृष्टि में थे और यह औरत तारा नाइडो भी, यह बेचारी अपने प्रति बहुत सारे भ्रमों में पड़ी हुई है, उनमें से एक यह भी है कि यह अपने आपको बहुत ही चतुर

और दूरदर्शी समझती है, इसी लिये इसने कैप्टन हमीद पर डोरे डाले थे, लेकिन यह नहीं जानती थी कि अपने इस जाल में यह खुद ही फँस जायेगी। इसने केवल यही सुन रखा था कि हमीद औरतों का कीड़ा है, मगर यह नहीं जानती थी कि हमीद से कुछ मालूम कर लेना कठिन ही नहीं असम्भव है। क्या अब मैं लाल गुलाबों की कहानी आरम्भ करूँ ? मगर नहीं··· इससे पहले मैं यह मालूम करना चाहूँगा कि डाक्टर डारकेन का तुम लोगों से क्या सम्बन्ध है ?"

जब किसी ने उत्तर नहीं दिया तो विनोद ही बोला—

"अगर डाक्टर डारकेन खुद ही तुमसे टकरा गया है तो इसका कारण भी बड़ा अनोखा होगा, क्यों। क्या इरादा है ! उसके बारे में कुछ बताओगे ?"

"तुम अकारण ही कुछ सभ्य और सीधे नागरिकों पर अत्याचार कर रहे हो—" लालो या तारा नाइडो ने कहा।

विनोद उसकी ओर ध्यान दिये बिना बोला—

"योर एक्सेलेन्सी ! आपकी पोजीशन बड़ी खराब हो गई है। प्रकट है कि आपकी हैसियत प्रकट हो जाने के बाद मैं आप के हाथों में हथकड़ियाँ नहीं लगा सकता, किन्तु मान लीजिये कि मैं यह कह दूँ कि मैं अपको पहचानता ही नहीं तो आप साधारण चोर डाकूओं के समान कटहरे के पीछे होंगे।"

"तुम चाहते क्या हो ?"

"मैं यह मालूम करना चाहता हूँ कि डाक्टर डारकेन का इन घटनाओं से क्या सम्बन्ध है ?"

"उसका सम्बन्ध न तो इन घटनाओं से है और न दूतावास से। फिच का और उसका कोई निजी झगड़ा है जिसके प्रति हम कुछ नहीं जानते।"

"क्या यह फिच दूतावास से ही सम्बन्ध रखता है ?"

"नहीं।"

"वह कहाँ मिलेगा ?"

"हमें उसका पता नहीं। वह एक चरित्र हीन आदमी है।

दूतावास के कर्मचारियों का आचरण नष्ट करता है। उनके लिये किराये की लड़कियाँ एकत्र करता है।"

"और वह लड़कियाँ इस औरत के जरिये आती हैं—" विनोद ने तारा नाइडो की ओर संकेत किया।

"नहीं—यह तो बड़ी अच्छी लड़की है। मेरे सेक्रेट्री की स्टेनो है।"

"तो फिर हम लोग यहाँ क्यों हैं ?" विनोद ने पूछा।

मगर इसका उत्तर किसी से बन नहीं पड़ा।

"हमीद—" विनोद बोला—"हिज एक्सेलेन्सी के अतिरिक्त और सब के हाथ उनकी टाइयों से बाँध दो और तारा के लिये अपनी टाई प्रयोग करो।"

सहसा विनोद का रिवाल्वर जाग पड़ा और एक आदमी चीख मार कर फर्श पर गिर पड़ा। उसका हाथ जेब की ओर जा रहा था।

"मैं सबको यहीं समाप्त कर दूँगा समझे ! कुशल इसी में है कि चुपचाप अपने हाथ बँधवा लो। तुम्हारे अपराधों के लिये मैंने इतने प्रमाण एकत्र कर लिये हैं कि संसार का कोई न्यायालय तुम्हें नहीं छोड़ सकता। तुमने तीन हत्यायें की हैं।"

"हत्याओं से हमारा कोई सम्बन्ध नहीं है—" राजदूत ने कहा—"वह सब कुछ फिंच की ओर से होता रहा है और फिंच का हमारे दूतावास से कोई सम्बन्ध नहीं है और न कभी रहा।"

"मगर लाल गुलाब वाली लड़कियाँ वही दूतावास तक पहुँचाया करता है।"

हाँ—वह लड़कियों का बिजिनेस करता है।"

"योर एक्सेलेन्सी ! प्लीज····अब यह खुला हुआ असत्य मैं नहीं सहन कर सकता, अतः सावधान हो जाइये। नहीं तो सम्भव है कि कोई ऐसी बात हो जाये जो आपकी शान के खिलाफ हो। मैं बिना चार्ज लगाये आप लोगों को यहाँ से नहीं

ले जाऊँगा। मैं आपके दूतावास पर चार्ज लगाता हूँ कि वह हमारे राष्ट्र के आन्तरिक भेद मालूम करने की चेष्टा करता रहा है। इस काम के लिये तारा नाइडो ऐसी लड़कियों को शिक्षा देती थी जो सुन्दर और पढ़ी लिखी होती थीं। फिर वह उन्हें बारी बारी फिच द्वारा आप तक पहुँचाती थी और दूतावास से उन्हें उस काम की नवैयत मालूम होती थी जिसके लिये तारा उन्हें ट्रेन्ड किया करती थी···और फिर वह लड़कियाँ राष्ट्र के उत्तरदायी लोगों पर डोरे डाल कर उन्हें अपने झूठे प्रेम बन्धन में बाँधने की चेष्टा करती थीं ताकि उनसे हमारे राष्ट्र के भेद मालूम कर सकें···और इस प्रकार आपके दूतावास के कारण हमारे राष्ट्र को अत्यन्त हानि पहुँची है। उस रात जब मैं संयोग वश दूतावास की ओर जा निकला था तो मुझे पता चला कि एक लड़की शीला वहाँ आने वाली थी। जिसे फिच नहीं पहचानता था। लाल गुलाब के फूल कालर में लगा देखकर ही लड़कियों को पहचानता था। अगर यह कार्य प्रणाली तारा की निर्मारित थी तो वह बेचारी यहाँ भी धोखा खा गई। न यह ऐसी प्रणाली अपनाती और न मैं इस भेद से परिचित होता। हाँ तो मैं यह जानने के बाद सीधा घर आया और लेडी इन्स्पेक्टर रेखा को साथ लेकर मैं चाइना कार्नर पहुँचा। वास्तव में मैं लाल गुलाब की असलियत मालूम करना चाहता था इसलिये रेखा के कालर में मैंने लाल गुलाब लगा दिया था। रेखा चाइना कार्नर में जाकर बैठ गई और उसके बगल ही में मैं भी एक दूसरी मेज पर बैठ गया। फिच वहाँ मौजूद था। वह लाल गुलाब देख कर उठा और फिर बातों में बहलाकर रेखा को अपने साथ लिये हुये आपकी कोठी में पहुँचा! मैं भी पीछे ही पीछे था। फिर आपकी कोठी में जो कुछ हुआ उसे आप जानते ही हैं। वहाँ से रेखा को मैंने फिर अपनी कोठी में भेज दिया और स्वयं चाइना कार्नर चला गया। क्योंकि मैं जानता था कि असली लड़की शीला वहाँ प्रतीक्षा कर रही होगी। जब मैं वहाँ पहुँचा तो वास्तव में शीला वहाँ मौजूद थी और किसी की प्रतीक्षा कर रही थी। मैं उसके पास पहुँचा और उसे लेकर

अपनी कोठी में चला आया। वह मेरे साथ नहीं आ रही थी, क्योंकि उसे तो फिंच का हुलिया बताया गया था। जिसके साथ उसे जाना था, मगर मैं बातों में बहलाकर उसे उड़ा ही लाया और फिर वह भी हमारे बरामदे में एक बे आवाज राइफल का निशाना बना दी गई··· वैसे तारा नाइडो की अध्यक्षता में कार्य करने वाले बड़े चतुर मालूम पड़ते हैं, क्योंकि उन्होंने यह बात मालूम कर ली थी कि दूतावास की कोठी के फाटक पर रात की ड्यूटी पर आने वाला सन्तरी शीला का पड़ोसी था, इसलिये उन्होंने उसे ड्यूटी पर पहुँचने ही नहीं दिया था। प्रकट है कि वह शीला को पहचान लेता—" विनोद थोड़ी देर के लिये रुका फिर बोलने लगा—

"शीला की हत्या के बाद तारा के आदमी शीला की बड़ी बहिन मिसेस गुप्ता अर्थात परमिला को अपना सम्बन्धी बनाकर उसके फ्लैट से निकाल ले गये और उस बेचारी को भी समाप्त कर दिया। तुम लोगों पर मैं उस आदमी की हत्या का भी अभियोग लगाता हूँ जिसकी लाश दो दिन पहले अर्जुन पूरे के एक पब्लिक मूत्रालय में मुझे मिली थी। वह तुम्हारा ही आदमी था, मगर चूँकि मेरी दृष्टि पर चढ़ गया था और मैंने उसका पीछा भी आरम्भ कर दिया था इसलिये तुम लोगों ने इस भय से उसे मार डाला कि कहीं वह मेरे हाथ न लग जाये। तुम लोगों पर यह भी अभियोग है कि तुम फिंच नामी एक बहुत बड़े अपराधी को कानून के पंजे से बचाना चाहते हो। यह स्वयं एक बहुत बड़ा अपराध है···क्यों योर एक्सेलेन्सी! क्या आप इन इल्जामों से इन्कार कर सकते हैं?"

विनोद के चुप होते ही एक घोर स्तब्धता छा गई।

"क्यों तारा! तुम्हें अब तो कुछ नहीं कहना है?" विनोद ने सबको मौन देख कर तारा से पूछा।

"हममें से कोई भी नहीं जानता कि फिंच कहाँ रहता है—" तारा बोली।

"खैर देखा जायेगा···हमीद ! क्या तुम अपना काम कर चुके ?"

"जी हाँ—मगर तारा नाइडो !"

"उसके लिये तुम्हें अपनी टाई खोलनी पड़ेगी !"

दूसरे दिन सवेरे हमीद घर ही पर विनोद की प्रतीक्षा कर रहा था। पिछली रात उनकी अन्तिम भेंट कोतवाली में हुई थी। उसके बाद से अब तक विनोद गायब था। हमीद को इससे कोई मतलब नहीं था कि आखिर विनोद वहाँ तक पहुँचा कैसे ?

इसमें सन्देह नहीं कि यदि विनोद के पहुँचने में एक सेकेन्ड भी देर होती तो हमीद दूसरे संसार में होता, क्योंकि तारा ने कुछ इस प्रकार पिस्तौल निकाल लिया था कि हमीद को संभलने का भी अवसर नहीं मिला था···साथ ही यदि विनोद का निशाना चूक जाता तब भी वही होता जिसके लिये कम से कम हमीद इस जवानी में तो तैयार नहीं हो सकता था।

लगभग दो बजे विनोद घर वापस आया और हमीद अपने प्रश्नों सहित कुछ इस प्रकार उस पर टूट पड़ा कि विनोद सचमुच बौखला गया, मगर अब इस स्टेज पर हमीद से पीछा छुड़ाना कठिन ही था। अतः वह बताने लगा।

"मेरा इस प्रकार वहाँ पहुँचना, कोई जादू का खेल नहीं था। जब मैं पहले से ही यह जानता था कि तारा नाइडो ही लाली है तो फिर मैं सावधान कैसे न रहता। वैसे मैं यह देखना चाहता था कि वह करना क्या चाहती है। चूँकि वह जानती थी कि उसके मार्ग में मेरे अतिरिक्त और कोई रोड़ा नहीं अटका सकता इसलिये उसने मेरे समीप आने की चेष्टा की, मगर जब मुझसे निराश हो गई तो उसने तुम्हें फाँसा और तुम फँस भी गये···सारांश यह कि मुझे सूचना मिली कि वह तुम्हें विलमाट हाउस ले गई है। मैं भी उसी ओर आने का इरादा कर रहा था कि तुम्हारा फोन मिला, जिसमें तुम्हारी चीख भी सुनाई

पड़ी और फायर की आवाज भी। मैं समझ गया कि मुझे फाँसने के लिये यह जाल बिछाया जा रहा है अतः उसी समय मैं और मेरी ब्लैक फोर्स हरकत में आ गई। थोड़ी देर के बाद मुझे फोन मिला कि तुम विलमाट हाउस से अरविन्द लाज पहुँचा दिये गये और इस समय विलमाट हाउस वीरान पड़ा हुआ है। मैंने सोचा कि शिकार खेलने के लिये इससे अच्छा अवसर हाथ नहीं लगेगा अतः मैं घर से चल दिया। जब विलमाट हाउस पहुँचा तो तारा के आदमी बाटिका में इधर उधर छिपते फिर रहे थे। मेरी ही उपस्थिति में उन्होंने मेरे धोखे में अपने ही एक आदमी को घायल करके बाँध लिया। बाटिका में अन्धकार था। उन गधों ने उस बेचारे को बोलने का भी अवसर नहीं दिया। एक बड़ी सी काले एंग की वान वहाँ मौजूद थी। उसी में उसे ठूँस कर वह फिर किसी काम से कोठी के अन्दर चले गये। और मुझे उसी वान में छिप कर बैठ जाने का अवसर मिल गया। वान के भीतर एक कोने में तीन चार झोलदारियाँ रखी हुई थीं, मैं उन्हीं के पीछे छिप गया—और इस प्रकार मैं वहाँ पहुँच गया।"

हमीद कुछ क्षण तक मौन रहा फिर बोला—

"और डाक्टर डारकेन ?"

"उसे नरक में झोंको। जब उसके लिये काम करूँगा तब उसके बारे में बातें करना।"

"फिंच भी निकल गया।"

"हाँ—यह फिंच मेरे लिये बड़ा आकर्षण रखता है—" विनोद ने कहा और उठकर अपने कमरे में चला गया।

॥ समाप्त ॥